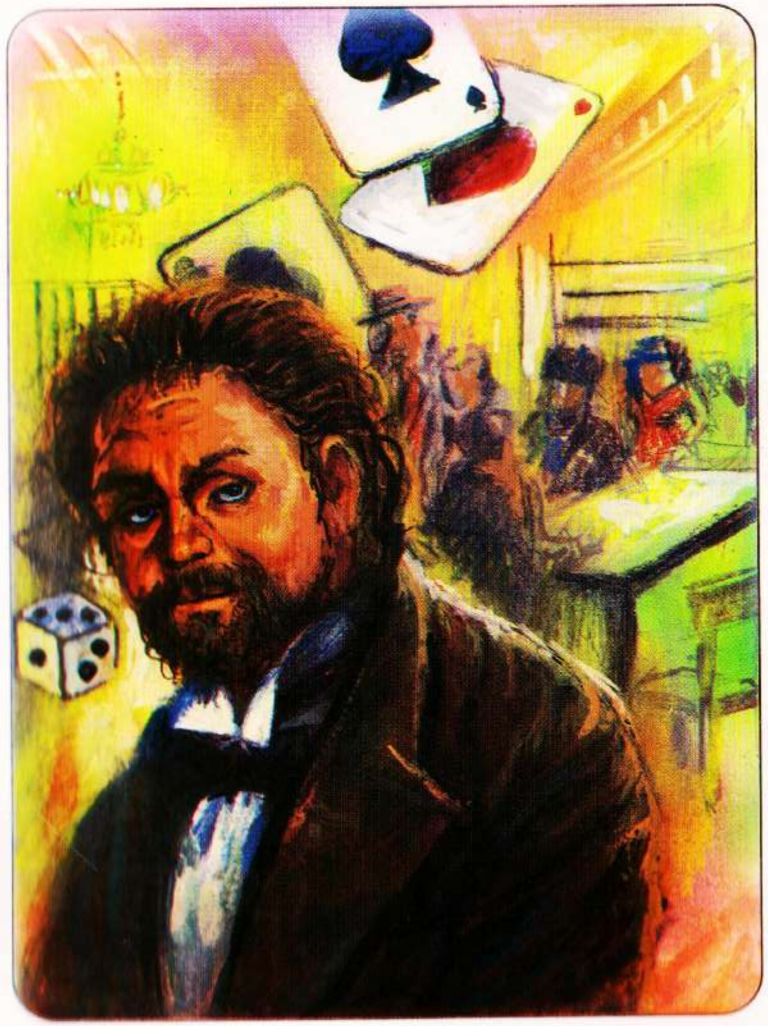
विश्व कथा-साहित्य

● रूस

डॉस्तोएवस्की

जुआरी



विश्व कथा-साहित्य

देश-भर के सभी स्टालों पर उपलब्ध। न मिलने पर आप हमें पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगाएं। आप कहीं से भी इस सीरीज़ की पुस्तक लें, हमें पत्र द्वारा अपना पता अवश्य भेजें, ताकि हम आपको हर नई पुस्तक छपने पर सूचना दे सकें। विश्व कथा-साहित्य से चुनी हुई अमर कृतियों की इस शृंखला के स्थायी सदस्य बनकर निरंतर पठन सुख पाएं और उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह बनाएं।

दॉस्तोएवस्की

जुआरी

फ़्योदोर दॉस्तोएवस्की के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास The Gambler का सरस हिन्दी अनुवाद

हिन्द पॉकेट बुक्स

विश्व कथा-साहित्य

जुआरी : दॉस्तोएवस्की
अनुवाद : रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 1998
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
दिलशाद गार्डन, जी.टी. रोड, दिल्ली-110 095
लेज़र टाइपसेटिंग : नागरी प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110 032
मुद्रक : भारत फोटो कम्पोज़र्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

JUARI (Novel) DOSTOIEVSKY

ISBN 81-216-0828-7

आज उस मनहूस दिन को दो दिन हो चुके हैं। उसे लेकर कितना शोर, खलबली और चिल्ल-पों मची! कितना भद्दा, अपमानकारी, बेहूदा और अशिष्ट था वह! और इस सबका कारण था मैं। फिर भी कभी-कभी मुझे उस पर हंसी आ जाती है। पता नहीं मुझे क्या हो गया था। मैं उत्तेजित, क्षणिक विक्षिप्तता में कितना ओछा व्यवहार करता चला गया, जब तक कि डाँटा नहीं गया। मुझे ऐसा लगा कि मेरा मस्तिष्क हाथ से निकला जा रहा है और मैं अभी अपने स्कूली बचकानेपन से बाहर नहीं निकला हूं। एक भद्दा खिलवाड़!

इस सबकी जड़ में पोलीना थी। वह न होती तो मैं शायद स्कूली ...

इसी उपन्यास से...



दॉस्तोएवस्की

परिचय

अप्रैल, 1849 की बात है—करुणा और मानवीयता के महान् कथा-शिल्पी दॉस्तोएवस्की को अन्य 43 लोगों के साथ मृत्यु-दण्ड घोषित कर दिया गया। उनका अपराध था कि वह साम्यवादी विषयों पर धुआंधार बहसें करते हैं।

उन्हें जब दण्ड देने के लिए सेमियानविस्की चौक में खड़ा किया गया, तो उनके साथ 21 लोग थे। कार्यवाही शुरू होने ही वाली थी कि एक अफसर आया। उसने बताया कि उनकी मृत्यु-दण्ड की सज़ा बदलकर साइबेरिया देश-निकाला दे दिया गया है। फिर तो वह लगभग 32 साल और जिए, लेकिन दण्ड के जो वर्ष भोगने पड़े, वे भयंकर यातना से कम नहीं थे। 1849 से लगातार 4 वर्ष कठोर कारावास और अगले 4 वर्ष तक एक सिपाही की कठिन ड्यूटी।...फिर भी दण्डित जीवन-काल के अनुभवों ने उनकी मेधा को समृद्ध ही किया, उनकी लेखन-कला को और भी ऊर्जा भेंट की और उन्होंने सचमुच 'अपराध और दण्ड' (Crime & Punishment) जैसी महान् कृति

का सृजन किया, जो विश्व के केवल आधा दर्जन शिखर उपन्यासों में गिना जाता है।

इन्हीं 'द ग्रेट मास्टर' का जन्म 1821 में मास्को में हुआ। उनके पिता एक खैराती अस्पताल में डॉक्टर थे।

दॉस्तोएवस्की का पहला उपन्यास था 'दरिद्र पुरुष' (1844)। इसके लेखन से पूर्व वह सेना में नौकरी कर रहे थे। वहां रहते स्वतंत्र लेखन नहीं कर सकते थे। अतः हथियार छोड़कर क़लम पकड़ ली। 1866 में उनका उपन्यास 'अपराध और दण्ड' छप कर आया, तो रूस ही नहीं, बल्कि उसकी सीमाओं से बाहर भी हलचल मच गई। लोग हैरान थे कि ऐसी महान् रचना कैसे संभव हो सकी!···शायद लेखक के तपे हुए संघर्षशील जीवन के अनुभवों और तमाम तरह की घटनाओं तथा लोगों के जटिल चरित्रों के बारीक विश्लेषण के कारण यह संभव हो सका।

दॉस्तोएवस्की की प्रसिद्धि-यात्रा 1866 से शुरू हुई, तो अंत तक रही, लेकिन इतने जाने-माने लेखक ने भी ग़रीबी की घोर यातनाएं झेलीं। बहुत बार उन्हें खाली पेट ही सोना पड़ा। महाजनों से क़र्ज़ लिया, या राशन-पानी। तक़ाज़े पूरे नहीं कर पाते, तो महाजन तंग करते थे। इस सबसे बचने के लिए उन्हें रूस को छोड़कर जाना पड़ा। ग़रीबी का यह हाल था कि एक बार तो अपना ओवरकोट और आखिरी क़मीज़ तक गिरवी रखनी पड़ी। उन्हें मिरगी के दौरे भी पड़ा करते थे। इस रोग से भी परेशान रहे।

उन्हीं का कहना था कि दण्ड के कारण ही वह सदाचारी बन गए, फिर तो उनका दिमाग़ भी ठीक रहा। तभी तो रोग और ग़रीबी के बाद भी लिख सके और लिखते चले गए। टॉल्सटॉय की तरह दॉस्तोएवस्की ने भी कभी अपनी ओर से प्रसिद्धि पाने की चेष्टा नहीं की, फिर भी इन्हीं के प्रयासों से श्रेष्ठ रूसी कथा-साहित्य की नींव पड़ी। सन् 1881 में उनका देहवसान हो गया। उनकी शवयात्रा के साथ उस समय के लगभग 40 हज़ार लोग थे। वह इतने लोकप्रिय थे कि उस हुजूम में चल रहे लोगों में बहुत से रो रहे थे।

दॉस्तोएवस्की के मरने की सूचना टॉल्सटॉय को मिली। वह बड़े उद्वेलित हुए। उन्होंने लिखा, "मैं इस आदमी से कभी नहीं मिला और न ही मेरा इससे कोई व्यवहार ही था, परन्तु इसके मरने पर मुझे विदित हुआ कि यही मुझे सबसे प्यारा और मेरे लिए सबसे आवश्यक आदमी था। उसने जो कुछ भी किया, मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिए किया। उसके मरने की सूचना पाकर ऐसा महसूस हुआ कि मेरा आश्रय जाता रहा।"

वह खुद तो साधु स्वभाव के थे ही, बल्कि उन्होंने असंख्य भूले-भटकों को राह दिखाई और अपने लेखन द्वारा उन्हें अच्छा बनने की प्रेरणा दी। उनका उपन्यास 'अपराध और दण्ड' तो ऐसी कृति साबित हुई जिसने भयंकर अपराधियों को भी बदल डाला और प्रायश्चित स्वरूप अपने को पुलिस के हवाले कर दिया।

सन् 1880 में मूल रूसी भाषा में प्रकाशित उपन्यास 'द ब्रदर्स करामज़ोव' ने भी अपने समय में तो अपार ख्याति अर्जित की, बल्कि उसके बाद आज तक उसकी प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है। इसके अतिरिक्त 'द पज़ेज़्ड' और 'द ईडियट' भी उनकी सशक्त कृतियां हैं। उनकी कृतियों से पता चलता है कि वह मनुष्य के आन्तरिक संसार के अच्छे विश्लेषक थे। अपराध विज्ञानियों का मानना था कि यह लेखक वैज्ञानिक रूप से सही तथ्यों को उद्घाटित करता है। उन्हें वास्तव में एक ईमानदार और वास्तविक लेखक का दर्जा प्राप्त है।

जुआरी 'दास्तोएवस्की' के प्रसिद्ध उपन्यास The Gambler का सरस हिन्दी अनुवाद है। यह एक मनोविश्लेषण प्रधान उपन्यास है। आत्मकथात्मक शैली में लिखे इस उपन्यास में एक जुआरी के मनोभावों का हृदयस्पर्शी चित्रण है।

फ़्योदोर मिखाइलोविच दॉस्तोएवस्की अपने जन्म के लगभग 175 साल बाद भी विश्व के गिने-चुने अमर कथाकारों की प्रथम पंक्ति में बैठे हैं।

जुआरी

एक

तो मैं पंद्रह दिन बाद लौट आया हूं। हमारे मित्र दो दिन पहले से ही रूलटेनबर्ग में हैं। मैं समझता था कि वे बड़ी उत्सुकता से मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, पर यह मेरी भूल थी। जनरल में अकड़ करारी है। उसने मुझसे बात करने की दया की और फिर अपनी बहन के पास भेज दिया। मेरिया फिलिप्पोवना अत्यंत व्यस्त थीं। वे मुझसे विशेष नहीं बोलीं। उन्होंने रकम ले ली, उसे गिना और पूरा हाल सुना। ये लोग मेज़ेंत्सोव, फ्रांसीसी और किसी अंग्रेज़ की राह देख रहे थे। रकम आते ही, सदा की भांति, मास्को ढंग का एक भोज हुआ। पोलीना एलैक्ज़ेंड्रोवना ने पूछा कि इतने दिन मैं बाहर क्यों रहा। पर वह उत्तर के लिए ठहरे बिना ही वहां से चली गई। निश्चय ही, यह उसने जानबूझकर किया। इसका कोई कारण होना चाहिए।

मुझे होटल की चौथी मंज़िल पर एक छोटा कमरा दिया गया था। वे जानते थे कि मैं जनरल के साथ हूं। लगता है कि इन्होंने यहां लोगों पर काफ़ी प्रभाव डाल लिया है। जनरल को यहां सभी एक बहुत धनवान रूसी समझते हैं। भोजन से पहले उसने मुझे बुलाया और अन्य बातों के साथ एक-एक हज़ार फ्रैंक के दो नोट भुनाने के लिए दिए।

मैंने उन्हें होटल के दफ्तर में तुड़ाया। अब हम कम-से-कम एक सप्ताह तक लखपती समझे जाएंगे।

मैं मीशा और नाद्या को टहलाने ले जा रहा था। सीढ़ियों पर था कि जनरल ने बुलाया। उसने पूछने की कृपा की कि मैं उन्हें कहां ले जा रहा हूं। जनरल मेरी आंखों से आंखें मिलाना चाहता है। पर जब वे उसे अनादर-भरी अविचल मिलती हैं, तो वह सकुचा जाता है। भारी-भरकम भाषा में वाक्य पर वाक्य चिनते हुए उसने मुझे समझाया कि मैं बच्चों को पार्क में यथासंभव कैसीनों से दूर टहलाने ले जाऊं। एकाएक वह भड़क उठा। बोला, "नहीं तो तुम उन्हें, मुझे क्षमा करो, जुआघर में ले जाओगे। मैं समझता हूं कि तुम अब भी कुछ विचारहीन हो और जुए में फंस सकते हो। यद्यपि मैं न तुम्हारा अभिभावक हूं और न होने की इच्छा करता हूं, फिर भी मुझे इतना अधिकार तो है कि मैं तुमसे कहूं कि तुम मेरी ओर अंगुली उठवाओगे!"

"पर मेरे पास पैसा नहीं है," मैंने शांत भाव से कहा, "खोने से पहले यह आवश्यक है कि वह मेरे पास हो।"

"वह तुम्हें तुरंत मिलेगा।" जनरल ने कुछ लजाते हुए कहा। उसने दराज़ खखोली। हिसाब देखा। ज्ञात हुआ, मुझे एक सौ बीस रूबल मिलने हैं।

"यह हिसाब कैसे करें! अच्छा उन्हें टेलरों में बदल लें। यह लो सौ टेलर, और शेष—वे मेरे पास सुरक्षित हैं।"

मैं कुछ न बोला। रकम ले ली।

"कृपया मेरी बात पर नाराज़ न हो। तुम बड़ी जल्दी नाराज़ हो जाते हो। यदि मैंने कोई बात कही तो, मैं कहूं कि, वह केवल चेतावनी के तौर पर थी। और मुझे उसका कुछ अधिकार तो है ही!"

भोजन से पहले जब मैं बच्चों के साथ होटल आ रहा था तो हमारा यह दल खंडहर देखकर लौट रहा था। दो बढ़िया गाड़ियां,

शानदार घोड़े! एक में कुमारी ब्लांश, मेरिया फिलिप्पोवना और पोलीना के साथ थीं। फ्रांसीसी, अंग्रेज़ और जनरल घोड़ों पर थे। राहगीर खड़े होकर ताक रहे थे। एक सनसनी थी। मैंने हिसाब लगाया कि मैं जो चार हज़ार फ्रैंक लाया हूं उन्हें, और जितने का प्रबंध इन्होंने कर लिया है उन्हें, दोनों को मिलाकर इनके पास अब सात-आठ हज़ार हो गए होंगे। पर क्या कुमारी ब्लांश के लिए इतना काफ़ी होगा? बेचारा जनरल!

कुमारी ब्लांश भी अपनी मां के साथ होटल में टिकी हुई हैं। हमारा फ्रांसीसी भी यहीं है। प्यादा उन्हें काउंट महोदय कहता है। कुमारी ब्लांश की मां श्रीमती काउंटेस कहलाती हैं। कौन जानता है कि ये काउंट और काउंटेस हों!

मैं जानता था कि भोजन की मेज़ पर काउंट मुझे नहीं पहचानेंगे। जनरल कभी भी हमें एक-दूसरे से परिचित कराने की बात सोच नहीं सकता था। काउंट स्वयं रूस में रहे हैं। वे जानते हैं कि घरेलू अध्यापक का कोई महत्त्व नहीं होता। पर वे मुझे अच्छी तरह जानते हैं। मुझे मानना चाहिए कि मैं भोजन पर बिना बुलाए जा पहुंचा। और मुझे लगता है कि जनरल इस बारे में बिलकुल भूल गया था, नहीं तो वह निश्चय ही, मुझे होटल के भोजनालय में भेज देता। जनरल ने मुझे आश्चर्य से देखा। दयालु मेरिया फिलिप्पोवना ने मेरे लिए स्थान बना दिया। पर मिस्टर ऐस्टली मिले तो बात बन गई। मुझे लगा कि मैं भी दल का सदस्य हूं।

मैं इस विचित्र अंग्रेज़ से पहली बार प्रुशिया में रेल के डिब्बे में मिला था। वहां हम आमने-सामने बैठे थे। दुबारा, जब मैं फ्रांस जा रहा था, और फिर जब मैं स्विट्ज़रलैंड में था। मैंने जीवन में ऐसा शर्मीला पुरुष नहीं देखा। मैं नहीं जानता कि जनरल से उनकी जान-पहचान कैसे हुई। मैं समझता हूं कि वह पोलीना के प्रेम में बुरी

तरह फंस गया है। वह जब आया तो सूर्यास्त की भांति दमक रहा था। मुझे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ, मानोकि हम बड़े घनिष्ठ मित्र हों।

भोजन के समय फ्रांसीसी का व्यवहार सबके प्रति उपेक्षापूर्ण और राजसी था। मास्को में वह दूर की हांका करता था। वित्त और राजनीति की बातें करता था। जनरल कभी-कभी उसका विरोध करने का साहस करता था, पर अपना मान बचाकर।

और मेरी मनःस्थिति! मैंने अपने पुराने प्रश्न दुहराए, 'मैं जनरल की गुलामी क्यों कर रहा हूं? इसे बहुत पहले ही क्यों नहीं छोड़ दिया?' मैंने पोलीना एलैक्ज़ैंड्रोवना की ओर निहारा। उसने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। मुझे बहुत क्रोध आया और मैंने अशिष्ट होने का निश्चय कर लिया।

मेरी प्रबल इच्छा थी कि कुछ ऐसा करूं जो फ्रांसीसी को बुरा लगे। मैं जनरल की ओर घूमा और ज़ोर से बोला, "इस गर्मी में एक रूसी के लिए होटल-भोजनालय में भोजन करना बिलकुल असंभव है।" जनरल ने चकित होकर मेरी ओर घूरा।

"यदि आपमें आत्माभिमान है," मैंने कहा, "तो आपको अवश्य बुरा लगेगा। अपने मान के प्रति आघातों को सहन करना पड़ेगा। पेरिस में राइन पर, स्विट्ज़रलैंड में भी, इतने पोलैंडवासी और उनसे सहानुभूति रखनेवाले फ्रांसीसी हैं कि वहां कोई रूसी ज़बान नहीं खोल सकता।"

मैं फ्रेंच में बोला। जनरल ने मेरी ओर आश्चर्य से देखा। मैं कह नहीं सकता कि वह क्रुद्ध था अथवा मेरे इस असंयत व्यवहार से केवल अचंभित।

"लगता है किसी ने तुम्हें अच्छा पाठ पढ़ाया है।" फ्रांसीसी तिरस्कार से बोला।

"मुझसे पेरिस में एक पोल से झगड़ा हुआ और फिर एक फ्रांसीसी अफसर से, जो उसकी ओर से बोला। पर जब मैंने उन्हें बताया कि मैंने किस प्रकार इटैलियन मंगसिनयेर की कॉफ़ी में थूकना चाहा, तो कुछ फ्रांसीसी मेरी ओर हो गए।"

"थूकना?" जनरल ने सम्मान्य घबराहट से पूछा और चारों ओर आकुल दृष्टि डाली।

फ्रांसीसी ने अविश्वासपूर्वक मुझे जांचा।

"जी हां! यह तय हो जाने के बाद कि मुझे काम से रोम जाना पड़ेगा, मैं पोप के दूतावास में पासपोर्ट का वीसा कराने गया। वहां मुझे एक सूखा-सा लगभग पचास वर्ष का तुषारहत मुद्रावाला पादरी मिला। नम्रतापूर्वक पर अत्यंत रुखाई से मेरी बात सुनने के बाद उसने मुझसे तनिक ठहरने को कहा। मैं जल्दी में होने पर भी बैठ गया, एक अखबार उठाया और उसमें रूस के विरुद्ध एक अत्यंत अपमानकारी लेख देखने लगा। तभी मैंने सुना कि दूसरे कमरे में कोई मंगसिनयेर से मिलना चाहता है। मैंने देखा कि पादरी ने उसे झुककर प्रणाम किया। मैंने पादरी से अपनी प्रार्थना दुहराई। उसने मुझसे ठहरने को कहा, पहले से भी अधिक रुखाई से। थोड़ी देर बाद एक आस्ट्रियन आया। उसे तुरंत ऊपर ले जाया गया। यह मुझे बुरा लगा। मैं पादरी के पास जाकर दृढ़ता से बोला, 'क्योंकि मंगसिनयेर लोगों से मिल रहे हैं इसलिए वे मेरा काम भी निपटा सकते हैं!' पादरी अत्यंत चकित हुआ। पीछे हट गया। उसकी समझ में न आया कि कैसे एक नगण्य रूसी मंगसिनयेर के अतिथियों की समानता का दावा करने का साहस कर सकता है। वह मानो मुझे अपमानित करने का अवसर पाकर प्रसन्न हुआ। मुझे नीचे से ऊपर तक निहारा और धृष्टतापूर्ण स्वर में चीखा, 'क्या तुम समझते हो, मंगसिनयेर तुम्हारे लिए अपनी काफ़ी छोड़ देंगे?' तब मैं भी चीखा, परंतु उससे भी ज़ोर से, 'तो आप सुन

लीजिए कि मैं आपके मंगसिनयेर की काफ़ी में थूकने को तैयार हूं। यदि आप मेरा पासपोर्ट इसी मिनट तैयार नहीं कराते, तो मैं स्वयं उनके पास चला जाऊंगा।'"

"क्या? जबकि कार्डिनल उनके पास बैठे हुए हैं!" पादरी मुझसे दूर हटकर, दोनों हाथ फैलाकर चिल्लाया। वह खड़ा था क्रास के समान, मुझे गुज़रने देने से पहले मर जाने को तैयार।

"तब मैंने कहा कि मैं एक धर्महीन बर्बर हूं। मुझे आर्कबिशप, कार्डिनल, मंगसिनयेर किसी की परवाह नहीं है।" मैंने दिखा दिया कि मैं हटनेवाला नहीं हूं। पादरी ने घबराई असंतुष्ट दृष्टि मुझ पर डाली, झपटकर मेरा पासपोर्ट ले लिया, ऊपर ले गया और एक मिनट में उस पर वीसा हो गया। यह रहा वह! क्या आप उसे देखना चाहेंगे?

"मुझे कहना होगा कि···" जनरल ने आरंभ किया।

"धर्महीन बर्बरता ने तुम्हें बचा दिया," फ्रांसीसी मुसकराकर बोला, "पर यह मूर्खता है।"

"तो क्या मैं यहां के रूसियों की तरह हो जाऊं जिनमें मुंह खोलने का भी साहस नहीं है। पेरिस में जब मैंने यह झड़प सुनाई, तो होटल में मेरी ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा और फ्रांसीसियों ने इस बात का भी बुरा न माना जब मैंने उनसे कहा कि दो वर्ष पहले मैंने एक ऐसे मनुष्य को देखा है जिस पर 1812 में एक फ्रांसीसी सैनिक ने केवल खेल में गोली चला दी थी। उस समय वह दस वर्ष का था।"

"यह असंभव है," फ्रांसीसी उबल पड़ा, "फ्रांसीसी सैनिक कभी बालक पर गोली नहीं चलाएगा।"

"पर ऐसा हुआ," मैंने उत्तर दिया, "मुझे यह बात एक अत्यंत आदरणीय कैप्टेन से मालूम हुई है और मैंने उसके कपोल पर गोली का चिह्न स्वयं देखा है।"

फ्रांसीसी तेज़ी से बोलने लगा। जनरल ने उसका समर्थन किया। वह मुझसे बहुत अप्रसन्न था। मैं और फ्रांसीसी लगभग एक-दूसरे पर चीखने लगे थे। पर मैं समझता हूं कि इस झड़प से मिस्टर ऐस्टली बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मुझे एक गिलास सुरा साथ पीने का निमंत्रण दिया।

संध्या समय मुझे पोलीना से पंद्रह मिनट बात करने में सफलता प्राप्त हुई। उस समय हम कैसीनो के निकट पार्क में टहलने गए थे। पोलीना फव्वारे की ओर मुंह करके बेंच पर बैठ गई। उसने नदेन्का को बच्चों के साथ खेलने दिया और मैंने भी मीशा को फव्वारे की ओर भाग जाने दिया। हम दोनों अकेले रह गए।

आरंभ व्यवसाय से हुआ। जब मैंने पोलीना को केवल सात सौ गुल्डेन दिए तो वह भड़क उठी। उसे विश्वास था कि मैं उसके हीरों को पेरिस में कम-से-कम दो हज़ार गुल्डेनों में गिरवी रख सकूंगा।

"मुझे रकम चाहिए, रकम। नहीं तो मैं कहीं की भी नहीं रहूंगी।" वह बोली।

मैंने पूछा कि मेरी अनुपस्थिति में यहां क्या-क्या हुआ।

"कुछ नहीं; पीटर्सबर्ग से दो समाचार आए, एक यह कि दादी बहुत बीमार हैं, और दूसरा यह कि वे मरणासन्न हैं। समाचार तिमोफ़ी पैट्रोविच से लाए थे," पोलीना ने बताया, "और उन पर विश्वास किया जा सकता है। सब यहां अंत की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"तुम भी?" मैंने पूछा।

"हां, यद्यपि मैं जनरल की सौतेली पुत्री-मात्र हूं, फिर भी मुझे विश्वास है कि दादी वसीयत में मेरा ध्यान रखेंगी।"

"मुझे लगता है कि तुम्हें बहुत कुछ मिलेगा।"

"हां, वे मुझे बहुत चाहती थीं। पर तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?"

मैंने उत्तर में प्रश्न पूछा, "लगता है इस फ्रांसीसी मार्क्विस को हमारे सब भेद ज्ञात हैं?"

"पर तुम्हें उसमें रुचि क्यों है?" पोलीना ने कड़ाई और रुखाई से मेरी ओर देखते हुए पूछा।

"मुझे लगता है कि यदि मैं गलती पर नहीं हूं, तो जनरल उससे उधार लेने में सफल हो गए हैं।"

"तुम बहुत सही अनुमान लगाते हो।"

"हूं! पर यदि उसे दादी के विषय में ज्ञान न होता तो क्या वह उधार देता? भोजन के समय, क्या तुमने ध्यान नहीं दिया, चर्चा में उसने उन्हें तीन बार 'दादी' कहा था। कैसा घनिष्ठ और मधुर संबंध!"

"ठीक। ज्योंही उसे पता लगेगा कि मुझे वसीयत में कुछ मिल गया है, वह तुरंत मुझसे अपना स्नेह निवेदन करने लगेगा। क्या तुम यही जानना चाहते थे?"

"करने लगेगा! मैं समझता हूं, यह तो वह बहुत दिनों से कर रहा है।"

"तुम अच्छी तरह जानते हो कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया है।" पोलीना कुपित हुई। एक मिनट बाद बोली, "तुम इस अंग्रेज़ से कहां मिले थे?"

मैंने उसे मिस्टर ऐस्टली से अपनी पिछली भेंटों का विवरण दिया, "वह शर्मीला है और प्रेम में पड़ने का आदी है; और निश्चय ही तुम्हारे प्रेम में पड़ चुका है।"

"हां, वह मुझसे प्रेम करता है।" पोलीना ने कहा।

"और निश्चय ही वह फ्रांसीसी की अपेक्षा दस गुना धनवान है। क्या फ्रांसीसी के पल्ले सचमुच कुछ है?"

"हां, है। वह किसी प्रकार के एक महल का स्वामी है। जनरल ने उसकी चर्चा निश्चित रूप से की है। हुए तुम संतुष्ट?"

"तुम्हारे स्थान पर यदि मैं होता तो निश्चय ही अंग्रेज़ से विवाह करता।"

"क्यों?" पोलीना ने पूछा।

"फ्रांसीसी सुंदर है पर मन का मलिन; अंग्रेज़ ईमानदार है और दस गुना धनी।" मैंने तेज़ी से कहा।

"पर दूसरी ओर फ्रांसीसी मार्क्विस है और चतुर।" उसने अत्यंत संयत भाव से उत्तर दिया।

"पर क्या यह सही है?" मैंने पूर्ववत् कहा।

"निश्चित रूप से।"

पोलीना को मेरे प्रश्न बुरे लगे। मैंने देखा कि वह अपने स्वर और उत्तरों की विचित्रता से मुझे क्रोध दिलाने का प्रयत्न कर रही है। और मैंने यह बात तुरंत उससे कह दी।

"तुम्हें इतना क्रुद्ध देखकर मुझे सचमुच बड़ा मजा आता है। तुम्हें इसका भी तो मूल्य चुकाना चाहिए कि मैं तुम्हें ऐसे प्रश्न पूछने और ऐसी कल्पनाएं करने की छूट देती हूं।"

"मैं अपने को इस बात का अधिकारी समझता हूं कि तुमसे कैसे ही प्रश्न पूछूं," मैंने शांत भाव से कहा, "केवल इसीलिए कि तुम जो मूल्य मांगो उसे मैं चुकाने को तैयार हूं। और मैं इस जीवन का कोई मूल्य नहीं समझता।"

पोलीना हंसी।

"उस दिन तुमने श्लांगेनबर्ग पर मुझसे कहा था कि तुम मेरे एक शब्द पर सिर के बल उस चट्टान से कूद पड़ोगे। वह हज़ार फुट ऊंची है। किसी दिन मैं वह शब्द बोलूंगी, यही देखने के लिए कि तुम यह मूल्य कैसे चुकाते हो, और विश्वास रखो कि मैं झिझकूंगी नहीं। तुम घृणा के पात्र हो, इसीलिए मैंने तुम्हें अपने प्रति इतनी स्वतंत्रता दी है। तुम और भी अधिक घृणास्पद इसलिए हो कि तुम मेरे लिए बहुत आवश्यक हो। पर जब तक मुझे तुम्हारी आवश्यकता है, मैं तुम्हारी देखभाल करूंगी।"

उसकी वाणी में चिड़चिड़ाहट थी। पिछले कुछ दिनों से उसके साथ मेरा प्रत्येक वार्तालाप चिड़चिड़ाहट पर, सच्चे क्रोध पर समाप्त होता था।

"क्या मैं तुमसे कुमारी ब्लांश के बारे में पूछ सकता हूं?"

"तुम उसके बारे में सब जानते हो। कोई नई बात नहीं हुई। निश्चय ही कुमारी ब्लांश श्रीमती जनरल बनेंगी, अर्थात् यदि दादी की मृत्यु का समाचार मिलता है तो! कुमारी ब्लांश, उसकी मां और कुछ दूर के चचाज़ाद भाई मार्क्विस जानते हैं कि हम बरबाद हो चुके हैं।"

"और क्या जनरल अत्यंत विकट प्रेम में है?"

"बेकार की बात मत करो। सुनो! ये सात सौ फ्लोरिन लो। जाओ, मेरे लिए रूलेट पर खेलो। जितना जीत सको, जीतो; जैसे भी हो। मुझे इस समय रकम चाहिए।"

यह कहकर उसने नदेन्का को बुलाया और कैसीनो में चली गई। और वहां अपने परिवार में मिल गई।

मैं रह गया चकित, स्तंभित। जब मैंने 'जाओ और रूलेट खेलो' की आज्ञा सुनी तो मुझे लगा कि मेरे सिर पर प्रहार हुआ है। मैं इस विश्लेषण में डूब गया कि पोलीना के प्रति मेरे भाव का वास्तविक स्वरूप क्या है? यह सही है कि मैं अब यहां उतना स्वस्थ नहीं हूं जितना कि अपनी पंद्रह दिन की अनुपस्थिति में था। यद्यपि इस यात्रा में भी मैं एक विक्षिप्त की भांति दुःखित और उद्विग्न रहा था और कभी-कभी मैंने पोलीना को स्वप्नों में भी देखा था। मैंने अपने से फिर पूछा, 'क्या मैं उससे प्रेम करता हूं?' और फिर उत्तर न दे सका। अथवा, मैंने सौंवी बार कहा, 'मैं उससे घृणा करता हूं।' वह मेरी घृणा की पात्र है। प्रत्येक बार हमारे वार्तालापों के अंत में ऐसे क्षण आए हैं जब मैं जान पर खेलकर भी उसका गला मसोसना चाहता था। मैं कसम खाकर कहता हूं कि उस समय यदि उसकी छाती में छुरा धंसा

देना संभव होता, तो मैं निश्चय ही प्रसन्नता से उस अवसर का उपयोग कर डालता। और फिर, सब पवित्र वस्तुओं की सौगंध खाकर कहता हूं कि यदि वह श्लांगेनवर्ग की चोटी पर मुझे कूदने को कह देती तो मैं उतने ही आनंद से तुरंत कूद पड़ता। इसका अब कुछ इधर-उधर हो जाना चाहिए। वह मेरी स्थिति समझती है। वह जानती है कि वह मेरी पहुंच के बिलकुल बाहर है—अच्छी तरह जानती है। इस ज्ञान से मुझे विश्वास है कि उसे असाधारण संतोष है। यदि ऐसा न होता तो वह इतनी सतर्क और चतुर होकर मेरे प्रति इतना घनिष्ठ और खुला व्यवहार कैसे कर पाती! मैं समझता हूं कि वह मुझे उस दृष्टि से देखती है जिससे वह पुरातन साम्राज्ञी उस दास को देखती थी जिसके सामने उसे अवसन होने में भी झिझक नहीं लगती थी। इसलिए कि वह उसे मनुष्य नहीं समझती थी। हां, अक्सर यह भी मुझे मनुष्य नहीं समझती।

मुझे आज्ञा मिली थी। रूलेट पर जीतूं। सोचने का समय न था कि क्यों खेलूं। और, इतनी जल्दी क्यों? उसके चपल मस्तिष्क में क्या योजना बन रही है? और यह स्पष्ट था कि उन पंद्रह दिनों में कुछ नई बातें उभरी हैं। मुझे उनका पता लगाना है। जल्दी-से-जल्दी तह तक पहुंचना है। पर अब समय नहीं है। मुझे रूलेट की ओर जाना चाहिए।

दो

मैं ने खेलने का निश्चय तो किया, पर यह मुझे अच्छा नहीं लगा। मैं दूसरे के लिए नहीं खेलना चाहता था। इसलिए जब मैंने अपने जीवन में पहली बार जुआघर को देखा तो वह मुझे भाया नहीं। लोग समझते हैं कि वहां मेज़ों पर सोने के ढेर लगे रहते हैं। ऐसी बात नहीं है। साधारणतया मेज़ों पर बहुत थोड़े सिक्के दिखाई देते हैं।

मैं कुछ देर तक खेलने को तैयार न हो सका; भीड़ थी। यदि अकेला होता तो भी, मैं समझता हूं कि मैं बिना खेले चला गया होता। मेरा हृदय धड़क रहा था। मैं बहुत पहले से जानता था कि रूलटेनवर्ग मुझमें परिवर्तन लाएगा, ऐसा मौलिक और गहरा परिवर्तन जो मेरे भाग्य को पलट देगा।

रूलेट से इतनी आशा करना हास्यास्पद हो सकता है; पर मैं इस सर्वस्वीकृत पुरानी धारणा को और भी अधिक हास्यास्पद समझता हूं कि जुए से कुछ आशा करना मूर्खतापूर्ण और निरर्थक है; और रुपए बनाने के लिए जुआ खेलना व्यापार जैसे किसी भी व्यवसाय से बुरा है। सच है कि सौ में एक जीतता है, पर मुझे इससे मतलब!

मैंने सोचा कि पहले सब समझ लूं, तभी कुछ गंभीर आरंभ करूं।

इस विचार से मैंने दांव लगाए। मैंने रूलेट के अनेक वर्णन पढ़े थे। पर जब देखा, तभी कुछ पल्ले पड़ा।

पहले मुझे यह सब नैतिक रूप से कुछ भयावह और मलिन लगा। मैं उन लालचियों की बात नहीं कहता जिनके उद्विग्न चेहरे जुए की मेज़ को घेरे रहते हैं। मुझे अधिक-से-अधिक और शीघ्र-से-शीघ्र जीतने की इच्छा में तनिक भी मलिनता नहीं दिखाई दी। जब लाभ उठाने और पैसा कमाने की बात आती है, तो लोग रूलेट पर ही नहीं, सभी स्थानों पर एक-दूसरे की जेब में हाथ डालने का प्रयत्न करते हैं। लाभ अथवा प्राप्ति मलीन है या नहीं, यह दूसरी बात है। और यहां मैं उसका विवेचन नहीं कर रहा हूं। क्योंकि मेरे मन में जीतने की इच्छा अत्यंत प्रबल थी, इसलिए हाल में जाते समय मुझे लगा कि लालच एक अर्थ में बहुत अनुकूल और सहायक वस्तु है। जब लोग खुलकर खेलते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। और अपने को धोखा क्यों दें? जुआ मूर्खता और बुद्धिहीनता है। रूलेट की मेज़ के चारों ओर की ओछी भीड़ में मुझे जो बात विशेष रूप से भद्दी लगी, वह यह थी कि लोगों के चहरों पर गंभीरता और श्रद्धा की भावना भी दिखाई देती थी।

इसलिए यहां इस खेल के दो स्पष्ट भेद किए जाते हैं—ऐरे-गैरों का खेल और रईसों का खेल। एक पैसे के लिए खेलते हैं और दूसरे मनोरंजन के लिए। रईस छोटा या बड़ा दांव लगा सकता है पर केवल उत्सुकतावश, अवसर जांचने और उसका हिसाब लगाने के लिए, हार-जीत की क्रिया देखने के लिए, पर निश्चय ही जीतने की भद्दी इच्छा से नहीं। उसे जीतने में किसी प्रकार की रुचि नहीं दिखानी चाहिए। उसे उन चालबाज़ियों के अस्तित्व का संदेह भी नहीं करना चाहिए, जिन्हें जुआ खिलानेवाला बैंक काम में आता है। उसे समझना चाहिए कि सब जुआरी उसके समान संभ्रांत और रईस हैं। मैंने

बहुत-सी माताओं को अपनी पुत्रियों को, पंद्रह-सोलह वर्ष की भोली सुंदरियों को, कुछ सोने के सिक्के देकर खेलना सिखाते हुए देखा है। नवयुवती चाहे हारे या जीते, सदा मुसकाती थी और वहां से अत्यंत संतुष्ट जाती थी।

हमारा जनरल बड़ी शान के साथ मेज़ तक गया। उसने कुर्सी देने के लिए झपटते हुए नौकर की ओर ध्यान नहीं दिया। धीरे-से संभालकर बटुआ निकाला। उसमें से बहुत धीरे-धीरे तीन सौ फ्रैंक निकाले, उन्हें काले रंग पर लगाया और जीत गया। उसने जीती रकम उठाई नहीं, वहीं रहने दी। काला फिर आया। उसने फिर रकम नहीं उठाई। अब तीसरी बार लाल आया तो वह एक साथ बारह सौ फ्रैंक हार गया। वह मुसकराया, वहां से हट गया और अपनी शान बनाए रखी। पर भीतर-ही-भीतर वह भुन गया होगा। यदि दांव बड़ा होता तो मन की स्थिति प्रकट हुए बिना न रहती। पर मेरे सामने एक फ्रांसीसी ने बिना दुःख या प्रसन्नता की झलक दिखाए तीस हज़ार फ्रैंक जीते और हारे। सच्चे रईस को सर्वस्व हार जाने पर भी चिंता नहीं दर्शानी चाहिए। रुपए को रईसी शान से इतना नीचा होना चाहिए कि उसकी ओर ध्यान ही न जाए।

ऐरे-गैरों के खेल में बहुत ओछापन था। मैं भी अपने को ऐरा-गैरा मानता हूं। पिछले दिनों में मुझे अपने विचारों और कार्यों को किसी नैतिक कसौटी पर कसना बहुत बुरा लगने लगा है। हां तो, जुए की मेज़ पर बहुत-सी मामूली चोरियां चलती रहती हैं। खिलानेवाले क्रोपिअर जो मेज़ के सिरों पर बैठते हैं, दावों पर दृष्टि रखते हैं और जीत का हिसाब लगाते हैं, वे भी ऐरे-गैरे ही होते हैं, अधिकतर फ्रांसीसी। मैं रूलेट को समझने के लिए देख रहा था। यह सामान्य दृश्य था कि कोई व्यक्ति जीती रकम को हाथ बढ़ाकर जल्दी से समेट लेता था। इस पर कभी-कभी झगड़ा हो जाता था और इस समय एक

बड़ा काम यह होता था कि गवाह लाए जाएं और साबित किया जाए कि दांव समेटनेवाले का ही था।

इस पहेली में से आरंभ में मैं इतना ही समझा कि दांव गिनतियों पर, सम और विषम पर, और रंगों पर लगाए जाते हैं। मैंने पोलीना के सौ गुल्डेनों को जोखिम में डालने का निश्चय किया। 'दूसरे के लिए खेल रहा हूं', यह ध्यान आते ही मैं डावांडोल हो गया। मुझे लगा कि पोलीना के लिए खेलने से मेरे भाग्य को हानि पहुंचेगी। मैंने पांच फ्रीदरिश दौर (पचास गुल्डेन) निकाले और उन्हें सम पर रखा। पहिया घूमा, तेरह आया, मैं हार गया। दबे मन से मैंने पांच फ्रीदरिश दौर लाल पर लगाए, केवल इसलिए कि मामला बराबर हो जाए और मैं चला जाऊं।

लाला आया। मैंने रकम उसी पर रहने दी; लाल फिर आया। मुझे चालीस फ्रीदरिश दौर मिले और मैंने बीस को बीच के बारह अंकों पर लगाया। मुझे दांव का तिगुना दिया गया। इस प्रकार मेरे पास दस फ्रीदरिश दौर से अचानक अस्सी हो गए। मैं एक विचित्र, असाधारण, असहनीय भावना से दब चला। मैंने जाना चाहा। लगा कि अपने लिए खेलता तो इस प्रकार बिलकुल न खेलता। पर मैंने सब अस्सी फ्रीदरिश दौर सम पर लगा दिए। चार आया और मैं एक सौ आठ फ्रीदरिश दौर के ढेर को समेट पोलीना की खोज में चल पड़ा।

मैं केवल ब्यालू के बाद ही उससे मिल सका। जनरल ने मुझ पर अपना मन हलका किया। उसने मुझसे यह कहना उचित समझा कि वह मुझे जुए की मेज़ों पर नहीं देखना चाहेगा। मैं हारूंगा तो उसकी बदनामी होगी और बहुत अधिक जीतूंगा तो भी बदनामी उसी की होगी। मैंने रुखाई से कहा कि क्योंकि मेरे पास बहुत कम पैसा है, इसलिए मैं खेला तो भी बहुत अधिक नहीं हार सकूंगा।

मैंने अपने कमरे में जाकर पोलीना को जीती रकम दी और कह दिया कि अब मैं उसके लिए नहीं खेल सकूंगा।

"क्यों नहीं?" उसने कांपते हुए पूछा।

"इसलिए कि मैं अपने लिए खेलना चाहता हूं और इसलिए भी कि इससे मेरा खेल रुकता है।"

"तो अब भी तुम रूलेट को अपनी मुक्ति का एकमात्र मार्ग समझते हो?" उसने व्यंग्य से कहा।

मैंने गंभीरता से उत्तर दिया, "हां।"

पोलीना ने आग्रह किया कि मैं जीती रकम में से आधा बांट लूं। सुझाव यह था कि मैं आधे-आधे पर खेलता रहूं। मैंने अस्वीकार कर दिया।

"फिर भी···हुं," वह विचारमग्न बोली, "यह मूर्खता है कि मैं अपनी सब आशा रूलेट पर लगा बैठी हूं। पर तुम खेलते रहो और आधा मुझे देते रहो, और मैं जानती हूं कि तुम अवश्य ऐसा करोगे।"

उसने यह कहा और मेरी आपत्तियां सुने बिना ही वहां से चली गई।

तीन

उसने कल मुझसे खेल के बारे में एक शब्द नहीं कहा, बोलने से बिलकुल बचती रही। मेरे प्रति उसके व्यवहार में अब भी वही पहली लापरवाही, अवज्ञा और नापसंदगी की झलक थी। उसने अपनी उपेक्षा नहीं छिपाई। पर साथ ही यह भी नहीं छिपाया कि मैं उसके लिए उपयोगी हूं और इसलिए वह मुझे पाले हुए है। हमारे बीच एक विचित्र संबंध बन गया है जो, जब मैं सबके प्रति उसे गर्वीलेपन और तेज़मिजाज़ी पर ध्यान देता हूं, तो बहुत तरह से मेरी समझ में नहीं आता। उदाहरण के लिए वह जानती थी कि मैं उसके प्रेम में पागल हूं। उसने मुझे इस भाव को प्रकट करने का अवसर भी दिया। और, निश्चय ही, निर्बाध और अनियंत्रित रूप से ऐसा करने का अवसर देकर उसने मेरा सबसे बड़ा तिरस्कार किया। इसका मतलब यह कि उसे इसकी तनिक भी चिंता नहीं थी कि मैं उससे क्या कह रहा हूं, उसके प्रति क्या अनुभव कर रहा हूं। फिर भी मेरे प्रति उसकी अवज्ञा में एक विशेष प्रकार की शिष्टता थी। पर वह भी पूरी नहीं खुली, यद्यपि उसने अपने मामलों के बारे में मुझसे बहुत-सी बातें कीं। उसने अक्सर मेरा उपयोग नौकर की भांति ऐसे

कामों के लिए किया जो कठिन ही नहीं, खतरनाक थे। पर उसने मुझे जो बताया वह उतना ही था जितना कि एक नौकर को मालूम होना चाहिए। उसने इस बात की ओर कभी ध्यान नहीं दिया कि मैं उसकी चिंताओं और परेशानियों से उससे भी दुगुना-तिगुना परेशान रहता हूं। पर क्या ऐसा करना उसके लिए आवश्यक था?

मैं रूलेट खेलने की उसकी इच्छा तीन सप्ताह पहले से जानता था। मैं जानता था कि वह परेशान है और वह केवल रकम प्राप्त करने के लिए खेलना चाहती है। पर वह रकम किसलिए चाहती है? मैं कल्पना कर सकता हूं; पर इस विषय में मुझे कुछ ज्ञान नहीं है। वह मुझे दास समझती है, इसलिए यह अक्सर संभव हो जाता है कि मैं उससे भद्दे और मुंहफट प्रश्न कर सकूं। मैं उसकी दृष्टि में नगण्य हूं, इसलिए मेरी भद्दी उत्सुकता में बुरा मानने की कोई बात नहीं होती। तथ्य यह है कि यद्यपि वह मुझे प्रश्न पूछ लेने देती थी, पर उनका उत्तर नहीं देती थी और कभी-कभी तो उन्हें अनसुना कर देती थी।

कल एक तार के बारे में, जो चार दिन पहले भेजा गया था और जिसका कोई उत्तर नहीं आया है, बहुत बातचीत हुई। जनरल घबराया और चिंतित था तथा फ्रांसीसी शंकित। संबंध कुछ दादी से था। बातें गंभीर थीं। देर तक चलीं। फ्रांसीसी का स्वर कुछ असाधारण ऊंचा और तेज़ था। अब पोलीना के प्रति भी उसकी लापरवाही कुछ अशिष्ट हो गई है। मुझे पता लगा है कि फ्रांसीसी और जनरल में मिलकर रूस में एक कारखाना लगाने की योजना बनाई थी। इस फ्रांसीसी ने वास्तव में पिछले वर्ष जनरल की रक्षा की थी और उसे तीस हज़ार रूबल उस रकम को पूरा करने के लिए दिए थे, जो उसके सरकारी हिसाब में नौकरी से अलग होते समय कम पाई गई थी। जनरल उसकी मुट्ठी में है। पर इस समय इस मामले में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति कुमारी ब्लांश है।

कुमारी ब्लांश, कहा जाता है, एक सम्मान्य, धनी फ्रांसीसी महिला हैं। मां साथ हैं। इस फ्रांसीसी मार्क्विस की बहुत दूर की रिश्तेदार हैं। पता चला है कि मेरे फ्रांस जाने से पूर्व फ्रांसीसी और कुमारी ब्लांश के संबंध और घनिष्ठ हो गए हैं। कदाचित् उन्हें हमारे धनवान होने की संभावना इतनी कम लग रही है कि वे अब हमें प्रभावित करने के लिए विशेष औपचारिक और शिष्ट रहने की आवश्यकता नहीं समझते।

मुझे लगता है कि मिस्टर ऐस्टली, कुमारी ब्लांश और उनकी मां को पहले से जानते हैं और हमारा फ्रांसीसी भी उनका पूर्व परिचित है। मिस्टर ऐस्टली इतने शर्मीले, गंभीर और अल्पभाषी हैं कि वे निश्चय ही सबके सामने अशोभनीय बातें न करेंगे। जो हो, न फ्रांसीसी ही कभी उनके सामने झुकता है और न कुमारी ब्लांश उनकी ओर देखती हैं। कल मार्क्विस की बातों में अचानक निकल पड़ा कि मिस्टर ऐस्टली अत्यंत धनवान हैं, तो भी कुमारी ब्लांश ने उनकी ओर दृष्टि नहीं उठाई। जनरल घबरा रहा था। स्पष्ट ही दादी की मृत्यु का समाचार उसके लिए वरदान होगा।

यद्यपि मुझे विश्वास है कि पोलीना किसी उद्देश्य से ही मुझसे बोलने से बच रही है फिर भी मैंने लापरवाह और विरागी रुख धारण कर लिया। मैं सोचता रहा कि शीघ्र ही वह स्वयं मेरे पास आएगी। दो दिन मैंने अपना ध्यान कुमारी ब्लांश पर रखा। बेचारा जनरल! उसकी दुर्दशा है। पचपन वर्ष की उम्र में इतने तीव्र प्रेम में पड़ना एक विपत्ति है। इस पर भी वह विधुर, बच्चेवाला, संपत्तिहीन, कर्ज़दार और अंत में, महिला हैं कुमारी ब्लांश, जो सुंदरी हैं; मैं गलत समझा जा सकता हूं यदि कहूं कि उनका चेहरा कुछ ऐसा है कि भय उत्पन्न करता है। जो हो, मैं ऐसी नारी से डरता हूं। वे पचीस वर्ष की होंगी। लंबी-चौड़ी, कंधे झुके हुए, गर्दन और वक्ष शानदार, वर्ण श्यामल, बाल

काले और बहुत, आंखें काली-पीली सफेदी लिए हुए, दृष्टि में ढिठाई, दांत बहुत सफेद, होंठ सदा रंगे और गंध कस्तूरी की। पहनावा बढ़िया, शानदार और ढंगदार, प्रभावोत्पादक। हाथ-पैरों का क्या कहना! स्वर कर्कश और तीखा। वे अपने सब दांत दिखाकर हंसती हैं पर साधारणतया मौन रहती हैं। मुझे लगता है कि कुमारी ब्लांश न शिक्षित हैं और न बुद्धिमती। हां, चित्ताकर्षक और चालाक हैं। उनके जीवन में अवश्य कुछ घटनाएं हुई हैं। हो सकता है कि मार्क्विस उनका रिश्तेदार न निकले और मां उनकी मां न हो। पर बर्लिन में लोग उन्हें जानते हैं और मार्क्विस मास्को में रूसियों में और कुछ स्थानों पर जर्मनी में निःसंदेह स्वागत पाता है। कहा जाता है कि फ्रांस में उसका एक महल है। अब सब कुछ इस बात पर निर्भर है कि क्या जनरल इन्हें बहुत-सी रकम दिखा सकता है। यदि ऐसा समाचार आए कि दादी नहीं मरीं तो, मेरा विश्वास है, कुमारी ब्लांश तुरंत अंतर्धान हो जाएंगी। मुझे यह जानकार बड़ा आश्चर्य और आनंद होता है कि मैं अफवाहों का विषय बन गया हूं। पर क्या मैं पोलीना को छोड़ सकता हूं? क्या मैं उस पर जासूसी करना बंद कर दूं? ठीक है, जासूसी ओछा काम है! हुआ करे!

मिस्टर ऐस्टली की ओर मेरा ध्यान रहा है। मुझे विश्वास हो गया है कि वह पोलीना से प्रेम करता है। प्रेम में डूबे एक नम्र और संयम-करुण व्यक्ति की दृष्टि कितनी बात कह सकती है यह मैंने देखा, जबकि वह साथ ही यह भी बताती हो, यह मनुष्य दृष्टि, शब्द या संकेत से कुछ कहने की अपेक्षा धरती में गड़ जाना पसंद करेगा। वे अक्सर घूमते समय मिल जाते हैं। अपना टोप उठाते और पास से निकल जाते हैं। वे हमारे साथ आने के लिए तड़पते हैं, पर जब उन्हें निमंत्रित किया जाता है, तो तुरंत अस्वीकार कर देते हैं। हम चाहे पार्क में हों, चाहे वन में, चो श्लांगेनवर्ग की चोटी पर, चारों ओर दृष्टि

डालने से कहीं निकट ही मिस्टर ऐस्टली का सिर दिखाई दे जाता है। इस प्रातः हम दोनों मिले। बिना अभिवादन उन्होंने आरंभ किया।

"कुमारी ब्लांश! मैंने उन जैसी बहुत-सी नारियां देखी हैं।" उनकी सार्थक दृष्टि मेरी ओर ठहरी। मैंने जब तात्पर्य पूछा तो उन्होंने मंद मुसकान से सिर हिलाया और कहा, "तो भई बात ऐसी है···हां, क्या मिस पोलीना को फूल बहुत प्यारे हैं?"

"मुझे नहीं मालूम, बिलकुल नहीं मालूम।" मैंने उत्तर दिया।

"तुम इतना भी नहीं जानते?" उन्होंने अत्यंत आश्चर्य दर्शाया।

"मैंने ध्यान ही नहीं दिया।" मैं हंसते हुए बोला।

"हुं, इससे तो मेरे मन में एक विचित्र विचार उठता है।" उन्होंने सिर हिलाया। वे प्रसन्न मालूम हुए और चल दिए।

चार

आज का दिन मनहूस, बेहूदा, हास्यास्पद गुज़रा। रात के ग्यारह बजे हैं। मैं अलमारी के बराबर इस नन्हे कमरे में बैठा उसकी याद कर रहा हूं। प्रातः मैं पोलीना एलैक्ज़ैंड्रोवना के लिए रूलेट खेलने गया। मैंने उससे एक सौ सात फ्रीदरिश दौर इन शर्तों पर लिए कि मैं जीत में से कुछ नहीं लूंगा और वह शाम को मुझे बताएगी कि वह क्यों और कितना जीतना चाहती है। इस धन की आवश्यकता निश्चय ही उसे किसी विशेष कार्य के लिए है।

मैं जुआघर की लालची और ढीठ भीड़ में घुसा और मेज़ के निकट पहुंच गया। धीरे-धीरे दो-तीन सिक्के दांव पर लगाकर प्रयोग आरंभ किया। मुझे लगा कि यहां हिसाब का कोई लाभ नहीं होता। कागज़-पेंसिल से हिसाब रखनेवाले चतुर भी बिलकुल उसी तरह हार जाते हैं जैसेकि हिसाबविहीन साधारण प्राणी। मैंने, समझता हूं कि एक सही निष्कर्ष निकाला है—यद्यपि यहां कोई नियमित योजना नहीं होती, फिर भी इन अकस्मात् आनेवाले अवसरों में एक प्रकार की विचित्र-सी व्यवस्था होती है। उदाहरण के लिए, बारह मध्य संख्याओं के बाद दो बार बारह पिछली संख्याएं आती हैं, फिर पहली बारह संख्याएं, इसके

बाद तीन-चार बार बारह और चौबीस के बीच की संख्याएं, दो बार पचीस और छत्तीस के बीच की संख्याएं और फिर पहली बारह संख्याएं। यह डेढ़-दो घंटे चलता रहता है। एक, तीन, दो—एक, तीन, दो। कभी लाल के बाद काला और काले के बाद लाल प्रति मिनट बदलता रहता है और दूसरे दिन लाल के अतिरिक्त और कुछ नहीं आता। इस बारे में मिस्टर ऐस्टली ने मुझे बहुत-सी बातें समझाईं। वह पूरी प्रातः मेज़ के निकट खड़े रहते थे पर दांव कभी नहीं लगाते थे।

मैं शीघ्र ही सब कुछ हार गया। मैंने बीस फ्रीदरिश दौर सम पर रखे, जीता, फिर लगाए, फिर जीता—कई बार। लगता है कि पांचेक मिनट में मेरे पास चार सौ फ्रीदरिश दौर आ गए। मुझे चले जाना चाहिए था। पर मुझमें भाग्य की अवहेलना करने, उसे ललकारने और चिढ़ाने की इच्छा उठी। मैंने विशालतम स्वीकृत दांव चार सौ गुल्डेन लगाया और हार गया। मैं गर्माया। बचा-खुचा उसी संख्या पर लगाया। फिर हार गया। मैं चला आया—सुन्न। मुझे क्या हो गया था? मैंने हार का समाचार पोलीना को भोजन से पहले दिया और सारे दिन पार्क में टहलता रहा।

आज फिर फ्रांसीसी और कुमारी ब्लांश हमारे साथ भोजन कर रही थीं। मैं उत्तेजित था। लगता है कि कुमारी ब्लांश ने जुएघर में प्रातः मेरा करतब देखा था। उसने ध्यान से मेरी ओर निहारा। फ्रांसीसी ने तुरंत पूछा कि क्या जो रकम मैं हारा था वह मेरी अपनी ही थी। शायद वह पोलीना पर संदेह करता है। इसके पीछे भेद क्या है?

जनरल अत्यंत चकित हुआ। इतनी रकम मुझे कहां से मिली? मैंने बताया कि मैंने दस फ्रीदरिश दौर से आरंभ किया, छः-सात बार जीतने से मेरे पास पांच-छः सौ गुल्डेन हो गए और अंत में मैं उन सबको हार गया।

यह संभव था। मैंने पोलीना को देखा। उसके चेहरे पर तनिक

भी अंतर न आया था। उसने मेरी झूठ चलने दी। मैंने सोचा, संध्या को वह मुझे इसका भेद बताएगी।

मुझे आशा थी कि जनरल कुछ बोलेगा, पर वह चुप रहा—उद्विग्न, घबराया-सा। संभवतया हाथ तंग होने के कारण उसे दुःख हुआ कि इतनी रकम मुझ जैसे असावधान मूर्ख के हाथ में पंद्रह मिनट में आई और निकल गई।

मैं समझता हूं कि कल बंद कमरे में फ्रांसीसी के साथ उसकी कुछ गर्म झड़प हो गई है। फ्रांसीसी असंतुष्ट गया था और तड़के ही फिर मिलने आया—कदाचित् पिछली बात ज़ारी रखने के लिए।

मेरी हाल की बात सुनकर फ्रांसीसी ने चुभती, द्वेष-भरी आलोचना की, "मनुष्य में कुछ अधिक बुद्धि होनी चाहिए।" उसकी राय में रूसियों में जुआ खेलने की भी योग्यता नहीं होती।

मैंने कहा, "मुझे तो लगता है कि रूलेट रूसियों के ही लिए बनाया गया है।"

"कैसे?"

"इसलिए कि पूंजी इकट्ठी करने का जो गुण पश्चिम के सभ्य मनुष्यों में सर्वोपरि बन गया है, वह रूसियों में नहीं पाया जाता। रूसी पूंजी जोड़ने में ही सक्षम नहीं है, वह उसे अंधाधुंध और भद्दे तौर से बहाता भी है। पर हमें भी धन की आवश्यकता होती है और उसके लिए हम रूलेट जैसे उपायों का उपयोग करके दो घंटे में धनवान बन जाने को बहुत आतुर और उत्सुक रहते हैं। और क्योंकि हम बिना विचारे खेलते हैं, इसलिए साधारणतया हार जाते हैं।"

फ्रांसीसी ने माना कि यह अंशतः सही है।

"नहीं, यह सही नहीं है। और तुम्हें···तुम्हें अपने देश के विषय में ऐसा कहने पर लज्जित होना चाहिए।" जनरल ने कड़ाई से कहा।

"क्षमा करें!" मैंने कहा, "मैं वास्तव में नहीं जानता कि कौन-सी

बात अधिक भद्दी है—रूसियों का बेढंगापन या सच्ची मेहनत से जर्मनों की धन जोड़ने की आदत।"

"कैसा भद्दा विचार है!" जनरल चीखा।

"कैसा रूसी विचार है!" फ्रांसीसी चिल्लाया।

मैं हंसा। मुझे उनको भड़काने की तीव्र इच्छा थी। "भई, मैं तो अपना समस्त जीवन," मैंने कहा, "एक किरगीज़ के तंबू में बिताना पसंद करूंगा, पर इस जर्मन प्रतिमा के सामने न झुकूंगा।"

"कैसी प्रतिमा?" जनरल सचमुच क्रुद्ध होते हुए चिल्लाया।

"धन संचय करने की जर्मन क्षमता। मैंने देखा है कि यहां प्रत्येक घर में एक पिता है, भयानक रूप से धार्मिक और असाधारण ईमानदार। इतना ईमानदार कि उसके निकट जाते हुए डर लगता है। प्रत्येक जर्मनं पिता का एक परिवार है और संध्या समय वे ज़ोर-ज़ोर से शिक्षाप्रद पुस्तकें पढ़ते हैं। यहां प्रत्येक परिवार पूर्ण बंधन और विनय से ग्रस्त है। वे बैल की भांति काम करते हैं और यहूदियों की भांति पैसा जोड़ते हैं इसके लिए वे अपनी पुत्रियों को दहेज नहीं देते। वे बुढ़ापे तक कुंवारी रहती हैं। सबसे छोटा पुत्र दासता अथवा सेना में बेच दिया जाता है और पैसा परिवार की पूंजी में जुड़ जाता है। यह सब केवल ईमानदारी से होता है। छोटा पुत्र समझता है कि वह विशुद्ध ईमानदारी से बेचा गया है। और यह आदर्श है जिसमें बकरा बलिदान के लिए जाते समय स्वयं आनंद प्राप्त करता है।

"और बड़ा बेटा! उसकी एक अमेलिया है। दोनों के दिल मिले हुए हैं। पर वे विवाह नहीं कर सकते, क्योंकि गुल्डेनों का ढेर काफी ऊंचा नहीं है। वे पूर्ण नैतिकता और ईमानदारी के साथ प्रतीक्षा करते हैं। मुसकाते हुए बलि चढ़ते हैं। अमेलिया के कपोल पतले और खोखले हो जाते हैं। अंत में, बीस वर्ष बाद ईमानदारी से गुल्डेन संचित हो जाते हैं। पिता अपने पैंतालीस वर्षीय पुत्र और उसकी उसी पैंतीस

वर्षीया अमेलिया को आशीर्वाद देता है, जिसकी छाती खोखली और नाक लाल हो गई है। इसके साथ वह रोता है, उन्हें नैतिक भाषण देता है और मर जाता है।

"यह बड़ा पुत्र अब एक धार्मिक पिता बनता है और इस कहानी को दुहराता हैं। इस प्रकार पांच या छः पीढ़ियों में एक बैरन रोथशाइल्ड पैदा हो जाता है। देखा, यह क्या शानदार दृश्य है! एक सौ या दो सौ वर्ष का निरंतर परिश्रम, धैर्य, समझ, ईमानदारी, चरित्र, दृढ़ता, मितव्ययिता; और आपको क्या चाहिए? इससे ऊंचा और क्या है? वे अब सारे संसार को इसी दृष्टि से देखते हैं और अपराधी को अर्थात् उसे जो उनसे तनिक भी भिन्न होता है, दंड देते हैं। मैं अपने धन को रूसी ढंग से खोना अथवा रूलेट पर धनी होना अधिक पसंद करूंगा। मैं पांच पीढ़ियों में गोप्पे एंड कंपनी नहीं बनाना चाहता। मेरी बात वाहियात हो सकती है, पर यह मेरा विश्वास है।"

"मैं नहीं जानता कि तुम जो कह रहे हो उसमें कितनी सच्चाई है," जनरल ने विचारपूर्ण ढंग से कहा, "पर मैं यह अवश्य जानता हूं कि जब तुम्हें अपने को भूलने की छूट मिलती है तो तुमने धृष्टता की···"

उसने बात बीच में छोड़ दी। यह उसकी आदत थी। फ्रांसीसी आंखें फाड़े सुनता रहा। उसके पल्ले विशेष न पड़ा। पोलीना ने तीव्र उपेक्षा से घूरा। ऐसा लगा जैसेकि उसने मेरे शब्द अथवा उस दिन जो अन्य बातें भोजन के समय कही गईं थीं, वे नहीं सुनीं।

पांच

वह अत्यधिक विचारमग्न रही। हम भोजन से उठे तो साथ टहलने गए। बच्चों सहित फव्वारे की ओर पार्क में पहुंचे। मैं उत्तेजना में यह भद्दा और मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछ बैठा कि अब हमारा फ्रांसीसी मार्क्विस उसके साथ क्यों नहीं रहता? उससे बोलता तक नहीं, क्यों?

"इसलिए कि वह नीच है।" उसने विचित्र रीति से उत्तर दिया। मैंने उसे द ग्रीय के बारे में कभी इस प्रकार बोलते नहीं सुना था। मुझे उसकी इस चिड़चिड़ाहट का अर्थ लगाते हुए भय हुआ। मैं चुप रहा।

"तुमने देखा नहीं, आजकल उसकी जनरल से भी नहीं पटती।"

"क्या तुम इसका रहस्य जानना चाहते हो?" वह रुखाई से बोली, "तुम जानते हो कि जनरल पूर्णतया उसके हाथों में गिरवी है। उसकी सब जायदाद···यदि दादी नहीं मरतीं तो फ्रांसीसी उस सबका मालिक हो जाएगा।"

"सब जायदाद!···सब!···क्या यह सच है?"

"हां, यह सच है।"

"तब तो कुमारी ब्लांश को नमस्कार!" मैंने कहा, "वह जनरल की पत्नी नहीं बनेगी! पर उसके अभाव में क्या वह अपने को गोली नहीं मार लेगा? इस अवस्था में इतना प्रेम खतरनाक होता है।"

"हां, उसे कुछ हो सकता है।" पोलीना ने कुछ सोचते हुए कहा।

"और यह एक बड़ी बात होगी," मैं बोला, "इस तथ्य का इससे अधिक भद्दा प्रदर्शन नहीं हो सकता कि वह उसके धन के लिए ही उससे विवाह कर रही थी। औचित्य का कुछ तो विचार होता। और दादी के बारे में···क्या इससे अधिक बेहूदा और कुछ हो सकता है कि तार पर तार भेजे जाएं, 'वे मरीं या नहीं?' क्यों पोलीना एलैक्ज़ैंड्रोवना?"

उसने अरुचि से मुझे टोकते हुए कहा, "यह सब वाहियात है। मुझे तुम्हारे इस उत्साह पर आश्चर्य होता है। तुम इतने प्रसन्न क्यों हो? क्या इसलिए कि मेरी रकम हार आए हो?"

"तुमने मुझे हारने को क्यों दी थी? मैंने पहले ही कह दिया था कि मैं तुम्हारे लिए नहीं खेल सकता। मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करता हूं, फल का उत्तरदायित्व मेरा नहीं है। क्या तुम इस हानि से बहुत घबरा गई हो? तुम्हें इतनी रकम किस वास्ते चाहिए?"

"ये प्रश्न क्यों?"

"इसलिए कि तुमने उत्तर देने का वचन दिया था। सुनो, मैं अपने लिए खेलूंगा तो अवश्य जीतूंगा। तुम जितना चाहो मुझसे उधार ले सकती हो।"

उसने तिरस्कारपूर्ण मुद्रा बनाई।

"नाराज़ न होओ," मैंने कहा, "मैं जानता हूं कि मैं तुम्हारी आंखों में कुछ नहीं हूं। इसलिए मेरे उपहारों से तुम्हारा अपमान नहीं होगा।"

उसने तेज़ी से मेरी ओर देखा, और यह पाकर कि मेरे स्वर में व्यंग्य है, फिर बाधा डाली, "मेरी परिस्थितियों में कोई बात तुम्हारे

मतलब की नहीं है। इतना जानो कि मैं कर्ज़ से दबी हूं और उसे चुकाना चाहती हूं। मेरा यह विचित्र और विक्षिप्त विचार था कि यहां जुए में अवश्य जीतूंगी। यह कैसे आया, मैं नहीं जानती। पर मेरा यह विश्वास था। शायद इसलिए कि मेरे सामने कोई दूसरा उपाय नहीं था।"

"या इसलिए कि जीतना ज़रूरी था। डूबते को तिनके का सहारा! तुम मानोगी कि यदि मनुष्य डूबता न हो तो वह तिनके को शहतीर नहीं समझेगा।"

पोलीना चकित हुई।

"क्यों, तुम भी तो उसी पर आशा लगाए बैठे थे। क्या वह मजाक था? नहीं, तुम इतने गंभीर थे कि उसे मज़ाक समझना असंभव था।"

"सही है," मैंने कहा, "मुझे अब भी विश्वास है कि मैं जीतूंगा। आज की भद्दी हार ने उसे हिलाया नहीं है। ज्योंही मैं अपने लिए खेलना आरंभ करूंगा, अवश्य जीतूंगा।"

"तुम्हें इतना विश्वास क्यों है?"

"पता नहीं। शायद इसलिए कि कोई दूसरा चारा नहीं है और जीतना ज़रूरी है।"

"तो तुम इस अंधविश्वासी निश्चिंतता के कारण जीतोगे?"

"तुम समझती हो कि मुझमें यह अनुभव करने की क्षमता नहीं है कि मैं जो चाहूं वह मिलेगा?"

"हुआ करे!" पोलीना शांत उदासीनता से बोली, "मैं नहीं समझती कि कोई वस्तु तुम्हें सचमुच पीड़ा देती है। तुम एक डावांडोल व्यक्ति हो, अविश्वसनीय! तुम्हें धन क्यों चाहिए? उस दिन तुमने जो कारण बताए थे उनमें मुझे विशेष सच्चाई नहीं मालूम होती।"

"अच्छा, सुनो," मैंने टोका, "तुम कहती हो कि तुम्हें कर्ज़ उतारना है, यह कोई बढ़िया कर्ज़ मालूम होता है। शायद उस फ्रांसीसी का!"

"यह क्या प्रश्न है? आज तुम विशेष ढीठ हो। पिए हुए हो शायद?"

"देखो, तुम जानती हो कि मैं तुम्हारा दास हूं। इसलिए मैं स्पष्ट प्रश्न पूछ बैठता हूं। कोई अपने दास की किसी बात का बुरा नहीं मानता।"

"मैं तुम्हारे इस दास-सिद्धांत को सहन नहीं कर सकती।"

"सिद्धांत नहीं, मैं इस दासता की बात तथ्य की भांति करता हूं, और यह तथ्य मेरे वश से बाहर है।"

"मुझे स्पष्ट बताओ कि तुम्हें धन क्यों चाहिए?"

"तुम यह क्यों जानना चाहती हो?"

"मेरी मर्ज़ी।" उसने गर्व से सिर हिलाया।

"तुम दास-सिद्धांत तो सहन नहीं कर सकतीं, पर दासता चाहती हो—'उत्तर दो, तर्क मत करो' तो ऐसा ही सही। मुझे धन चाहिए इसलिए कि वह सब कुछ है।"

"यह मैं समझती हूं। पर यह नहीं कि उसी के कारण तुम विक्षिप्त, उन्मादी और भाग्यवादी क्यों बने जा रहे हो। इसके पीछे उद्देश्य क्या है? स्पष्ट कहो। मेरी आज्ञा है।"

वह क्रुद्ध जान पड़ी। मैं उसकी गर्मी से बहुत प्रसन्न हुआ।

"एक उद्देश्य है," मैं बोला, "पर मैं यह नहीं जानता कि तुम्हें कैसे समझाऊं कि वह क्या है। केवल धन से ही मैं तुम्हारे लिए एक दूसरा मनुष्य बन सकूंगा, दास न रहूंगा।"

"क्या? यह तुम कैसे कर लोगे?"

"मैं कैसे कर लूंगा? तो तुम इतना भी नहीं स्वीकार कर सकतीं कि मैं तुममें अपने प्रति दास के अतिरिक्त कोई दूसरा दृष्टिकोण प्रेरित कर सकता हूं? बस यही है जिसकी मैं चिंता नहीं करता। इतना आश्चर्य, इतना अविश्वास!"

"तुम कहते हो कि यह दासता है जो तुम्हें आनंद देती है। मैं समझती थी कि यह मैं हूं।"

"तुम ऐसा समझती थीं!" मैं एक विचित्र आनंद से चिल्लाया। "मुझे तुम्हारी इस स्पष्टता में कितना आनंद आता है! हां, तुम्हारी दासता में, इस नगण्यता में एक मज़ा है।" मैं बहकता गया, "भगवान् जानता है कि शायद उस कोड़े में भी, जो पीठ पर पड़कर मांस को उधेड़ ले जाता है, एक सुख है। पर मैं संभवतः कुछ दूसरी प्रकार का आनंद चाहता हूं। कल तुम्हारे सामने ही जनरल ने मुझे, उस सात सौ रूबल वार्षिक के लिए, जो पता नहीं मिलेंगे या नहीं, एक भाषण सुनाना उचित समझा। उधर मार्क्विस अपनी भौंहें चढ़ाता है। और मुझमें एक तीव्र इच्छा उठती है कि मैं तुम्हारे सामने ही उसकी नाक पकड़कर खींचूं।"

"ये कायर की बातें हैं। मनुष्य किसी भी परिस्थिति में हो, अपना मान बनाए रह सकता है। संघर्ष में वह ऊंचा उठता है, दीन नहीं बनता।"

"यह किताबी वाक्य है। तुम शायद समझती हो कि मुझमें नैतिक मान तो है पर मैं मानपूर्वक व्यवहार करना नहीं जानता। शायद ऐसा हो। सब रूसी ऐसे होते हैं। कारण यह है कि रूसी इतने अधिक चतुर और विविध गुणवान होते हैं कि उनके व्यवहार की संहिता बनाने के लिए बहुत बड़ी प्रतिभा की आवश्यकता है और जो प्रायः अनुपस्थित होती है। केवल फ्रांसीसियों और कुछ दूसरी यूरोपीय जातियों में ही व्यवहार के आदर्श इतने सुपरिभाषित हैं कि मनुष्य उनसे अत्यंत प्रतिष्ठित दिखाई देता है, यद्यपि उसमें नैतिक मान का नितांत अभाव हो सकता है। इसीलिए उनमें शिष्टाचार का स्थान इतना ऊंचा है। एक फ्रांसीसी वास्तविक नैतिक अपमान बिना आंख झपकाए सहन कर लेगा, पर नाक का स्पर्श न सहेगा; क्योंकि वह युगों

से पूजित नियम की अवहेलना है। रूसी युवतियां फ्रांसीसियों के प्रति जो दुर्बलता दर्शाती हैं उसका कारण यही शिष्टाचार है, यद्यपि मेरे विचार से वह दिखावा-मात्र है।

"हो सकता है कि नारी न होने के कारण मैं इसे समझ न पाता हूं और मेरी बातें वाहियात हों। पर तुम मुझे टोक क्यों नहीं रही हो? तुम्हें मुझे अक्सर टोकना चाहिए। जब मैं तुमसे बात करता हूं तो सब कुछ कह डालना चाहता हूं। मैं स्वीकार करता हूं कि न मैं शिष्टाचारी हूं और न नैतिक गुणवान हूं। मैं उनकी चिंता भी नहीं करता। मेरे भीतर सब कुछ जैसे जड़ हो गया है। जानती हो क्यों? मेरे मस्तिष्क में एक भी मानवोचित विचार क्यों नहीं है? बहुत दिनों से मुझे पता नहीं है कि संसार में, रूस में अथवा यहां, क्या हो रहा है। मैं ड्रेस्डन हो आया हूं, पर मुझे याद नहीं कि वह कैसा था। तुम जानती हो कि मुझे कौन निगल गया है। मैं निराश हूं, तुम्हारी दृष्टि में कुछ भी नहीं हूं, इसलिए खुलकर बोल रहा हूं। मुझे सब ओर तुम ही तुम दिखाई देती हो, शेष कुछ नहीं। मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्यों और कैसे प्यार करता हूं। हो सकता है कि तुम वास्तव में बिलकुल अच्छी न हो; मैं नहीं जानता कि तुम देखने में भी अच्छी हो या नहीं; निश्चय ही तुम्हारा हृदय अच्छा नहीं है, और तुम्हारा मस्तिष्क निम्न श्रेणी का हो सकता है।"

"शायद इसीलिए तुम मुझे धन से खरीदना चाहते हो!" उसने कहा, "क्योंकि तुम मेरी प्रतिष्ठा की भावना में विश्वास नहीं करते।"

"मैंने तुम्हें धन से खरीदने की बात कब सोची है?" मैं चिल्लाया।

"तुम बोले जा रहे हो, इतना कि तुम्हें पता नहीं कि तुम क्या कह रहे हो। यदि तुम मुझे खरीदने की बात नहीं सोचते तो मेरी प्रतिष्ठा को खरीदना चाहते हो।"

"नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है," मैंने कहा, "मेरे लिए तुम्हें यह समझाना कठिन है कि तुम मुझ पर छाई हुई हो। मेरी बकवास का बुरा न मानो। तुम जानती हो कि तुम मुझसे नाराज़ क्यों नहीं हो सकतीं। मैं बिलकुल पागल हूं। यद्यपि मैं तुम्हारी नाराज़ी की कोई चिंता नहीं करता। ऊपर अपनी कुठरिया में मैं तुम्हारे वस्त्रों की सरसराहट की स्मृति और कल्पना करके ही, कुछ भी कर गुज़र सकता हूं। और तुम मुझसे नाराज़ क्यों हो? इसलिए कि मैं अपने को तुम्हारा दास कहता हूं? तुम मेरे दास होने का लाभ उठाओ, लाभ उठाओ। क्या तुम जानती हो कि मैं एक दिन तुम्हें मार डालूंगा? इसलिए नहीं कि मैं तुमसे प्रेम करना बंद कर दूंगा, वरन् केवल इसलिए कि तुम्हें खा जाने की ललक मुझमें उठती है। तुम हंसती हो?"

"मैं हंस नहीं रही हूं," वह कुपित होकर बोली, "आज्ञा देती हूं, चुप रहो।"

वह खड़ी रही, क्रोध से सांस लगभग बंद! कह नहीं सकता कि वह सुंदर थी। पर अब वह इस प्रकार मेरे सामने खड़ी होती थी तो मुझे अच्छी लगती थी और इसलिए मैं उसका क्रोध भड़काता था। शायद वह यह बात जानती थी और इसलिए जान-बूझकर क्रोधित हो जाती थी। मैंने यह उसे कह भी दिया।

"कितना कुत्सित है!" उसने मुंह बिचकाया।

"मुझे इसकी तनिक भी चिंता नहीं," मैं कहता गया, "क्या तुम जानती हो कि तुम्हारा मेरे साथ टहलना खतरनाक है? अक्सर मुझमें एक प्रबल इच्छा तुम्हें पीटने की, तुम्हें विरूप करने की, तुम्हारा गला मसोस डालने की उठती है। क्या तुम समझती हो कि मैं ऐसा नहीं कर सकूंगा? तुम मुझे मानसिक ज्वर में ढकेले दे रही हो। क्या तुम समझती हो कि मैं बदनामी से डरता हूं? और तुम्हारी नाराज़गी! वह मेरे लिए क्या है? मैं तुम्हें प्रेम करता हूं, निराशा से भरा; और जानता

हूं कि इसके बाद भी तुम्हारी हज़ार गुना याद करूंगा। यदि मैं तुम्हारी हत्या करूंगा तो मुझे अपनी भी हत्या करनी होगी। पर मैं अपनी हत्या यथासंभव टालता रहूंगा, इसलिए कि मैं तुम्हारे अभाव की असह्य पीड़ा का अनुभव कर सकूं। मैं एक बात कहूं जिस पर तुम विश्वास न करोगी। मैं तुम्हें प्रतिदिन अधिकाधिक प्रेम करता हूं और फिर भी यह लगभग असंभव है। मैं भाग्यवादी बने बिना कैसे रह सकता हूं? क्या तुम्हें श्लांगेनबर्ग पर परसों की बात याद है? तुम्हारे उकसाने पर मैं फुसफुसाया था, 'बस कह दो, और मैं उस खड्ड में कूद पड़ूंगा' यदि तुमने कहा होता तो मैं कूद गया होता, क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता?"

"क्या मूर्खतापूर्ण बातें हैं!" वह चिल्लाई।

"मूर्खतापूर्ण हों या चतुरतापूर्ण, मुझे चिंता नहीं," मैंने कहा, "मैं जानता हूं कि तुम्हारे सामने मुझे बोलना चाहिए और मैं बोलता रहता हूं। तुम्हारे सामने मेरा सब आत्मसम्मान हवा हो जाता है। पर मुझे उसकी चिंता नहीं है।"

"श्लांगेनबर्ग से तुम्हें कूदने की आज्ञा देकर तुम्हें मुझे क्या लाभ होगा?" उसने रुखाई और विशेष अपमानकारी रीति से कहा, "मेरे लिए यह बिलकुल अनुपयोगी होगा।"

"बहुत ठीक!" मैं बोला, "तुमने यह अनुपयोगी शब्द जान-बूझकर मुझे आकुल करने के लिए कहा है। मैं तुम्हें पहचानता हूं। तुम कहती हो अनुपयोगी! पर आनंद का सदा उपयोग होता है। और निरंकुश असीम अधिकार, चाहे वह मक्खी पर भी हो, अपना आनंद देता है। मनुष्य प्रकृति से तानाशाह है। उसे दुःख देने से आनंद आता है और तुम्हें तो अत्यधिक।"

उसने मेरी ओर स्थिर दृष्टि से देखा। मेरे चेहरे पर असंबद्ध और निरर्थक भाव आए होंगे। मुझे याद है कि हमारी बातचीत का अक्षरशः वही थी जो मैंने यहां लिखी है। मेरी आंखें लाल थीं। होंठों पर झाग

के कण थे; और जहां तक श्लांगेनबर्ग का संबंध है, मैं अब भी सौगंध खाता हूं कि उसने यदि कहा होता, तो मैं कूद गया होता। यदि उसने केवल मजाक में, अथवा घृणा से, अथवा चिढ़ाने के लिए ही कहा होता, तो भी···।

"नहीं, मैं तुम्हारा विश्वास करती हूं।" उसने कहा, इतनी घृणा, विष और अवज्ञा के साथ, जो उसी के लिए संभव था। और हे भगवान्, मैंने उसे उसी क्षण मार डाला होता। उसने खतरा उठाया। मैंने उससे झूठ नहीं कहा था।

"तो तुम कायर नहीं हो?" उसने अचानक पूछा।

"शायद हूं। पता नहीं···। बहुत दिनों से मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया।"

"यदि मैं कहूं, 'उस व्यक्ति को मार डालो,' तो क्या तुम उसे मार डालोगे?"

"किसे?"

"जिसे मैं कहूं।"

"फ्रांसीसी को?"

"प्रश्न न पूछो, उत्तर दो। जिसे मैं कहूं। मैं जानना चाहती हूं कि क्या तुम अभी गंभीरता से बोल रहे थे।" उसने मेरे उत्तर की प्रतीक्षा इतनी गंभीरता और अधीरता से की कि मुझे विचित्र-सा लगा।

"तुम मुझे बताओ कि यहां क्या कुछ हो रहा है," मैंने पूछा, "तुम किससे डरती हो, मुझसे—अथवा और कुछ? मैं भी यहां का सब झमेला देख रहा हूं। तुम उस पागल, बरबाद मनुष्य की सौतेली पुत्री हो, जिस पर ब्लांश के प्रेम का भूत सवार है; और यह फ्रांसीसी है जिसका तुम्हारे ऊपर रहस्यमय प्रभाव है और यहां तुम गंभीरता से पूछती हो ऐसा प्रश्न! कम-से-कम मुझे कुछ बताओ तो; नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगा और कुछ कर बैठूंगा। क्या तुम्हें मुझसे खुलते लज्जा लगती

है? निश्चय ही, मैं तुम्हारे बारे में जो सोचता हूं उसकी तुम्हें चिंता नहीं हो सकती।"

"मैं इस बारे में तुमसे बिलकुल भी बात नहीं कर रही हूं। मैंने एक प्रश्न पूछा है और उसके उत्तर की प्रतीक्षा में हूं।"

"निश्चय ही, तुम जिसे कहोगी उसे मैं मार डालूंगा," मैं बोला, "पर क्या तुम मुझसे ऐसा करने को कह सकती हो?"

"क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हें छोड़ दूंगी? मैं तुमसे यह करने को कहूंगी और खड़ी होकर तमाशा देखूंगी। कर सकते हो उसे सहन? क्यों? नहीं? मानोकि तुम कर ही सकते थे? मैं तुमसे कहूं तो तुम शायद उसे मार डालोगे और फिर मुझे मार डालोगे, इसलिए कि मैंने तुमसे वह कहने का साहस किया था।"

मुझे लगा कि मैं इन शब्दों से सुन्न हो गया, पर फिर भी उस प्रश्न को एक मज़ाक, एक चुनौती समझता रहा। वह बहुत गंभीर थी। मैं प्रभावित हुआ—उसकी स्पष्टता से, अपने ऊपर उसके अधिकार की स्थापना से, अपने ऊपर उसकी सत्ता की स्वीकृति से और इस निस्संकोच कथन से, 'तुम बरबाद होओ और मैं खड़ी होकर तमाशा देखूंगी।'

इन शब्दों में कुछ बात इतनी उघड़ी और व्यंग्यमय थी कि मुझे लगा कि अति हो गई है। तो वह मुझे इस दृष्टि से देखती है। यह दासता और नगण्यता से भी कुछ तीव्र है। यदि कोई किसी को इस दृष्टि से देखता है तो वह उसे अपने बराबर ऊंचा उठा लेता है। यद्यपि हमारी बातचीत निरर्थक और विश्वास के अयोग्य थी, फिर भी मेरे हृदय में एक धड़कन हो गई।

अचानक वह हंस पड़ी—उस ओर मुंह किए, जहां गाड़ियां रुकती थीं और लोग केसीनों के सामने उतरते थे।

"तुम उन मोटी बैरोनेस को देखते हो, वे बैरोनेस बरमेरहेल्म हैं। केवल तीन दिन से यहां हैं; और उनके पति को देखते हो, पतले, लंबे,

बेंतधारी, प्रुशियन। क्या तुम्हें याद है कि परसों उसने हमारी ओर किस प्रकार देखा था? तुरंत बैरोनेस के सामने पहुंचो, अपना टोप उतारो और फ्रांसीसी भाषा में उनसे कुछ कहो।"

"क्यों?"

"तुमने कसम खाई थी कि तुम श्लांगेनबर्ग से कूद पड़ोगे। तुम कसम खाते हो कि किसी की भी हत्या कर दोगे। पर मैं हत्याओं और दुर्घटनाओं के स्थान पर केवल हंसना चाहती हूं। बातें न बनाओ, जाओ। मैं चाहती हूं कि तुम्हें बैरन के बेंत से पिटता हुआ देखूं।"

"तुम मुझे चुनौती देती हो। समझती हो कि यह काम मैं नहीं कर सकूंगा?"

"हां, मैं चुनौती देती हूं। जाओ, मैं आज्ञा देती हूं।"

"तो लो, मैं जा रहा हूं, यद्यपि यह बात होगी बेहूदा। आशा करता हूं कि इसमें से जनरल और तुम्हारे लिए कोई बुराई न निकलेगी। एक नारी को अपमानित करना! कैसा विक्षिप्त विचार है!"

"हां, तो मैंने देखा कि तुम केवल बातें बनाते हो।" उसने तिरस्कारपूर्वक कहा, "तुम्हारी आंखें कितनी डरावनी और लाल हैं! शायद भोजन के साथ तुमने शराब अधिक पी ली है। क्या तुम समझते हो कि मैं यह नहीं जानती कि यह वाहियात और अशिष्ट है और जनरल नाराज़ होंगे। पर मैं हंसना चाहती हूं। और तुम किसी नारी का अपमान क्यों करोगे? इसलिए कि पीटे जाओ!"

मैं उठा और चुपचाप उसकी आज्ञा पालने लगा। काम, निश्चय ही, बेहूदा था और मैं नहीं जानता था कि इससे कैसे निपटा जाएगा। पर मैं ज्यों-ज्यों बैरोनेस के निकट पहुंच रहा था, मुझे याद है कि मेरे भीतर से कोई मुझे आगे बढ़ा रहा था। यह स्कूली बच्चों के समान शैतानी की एक लहर थी। मैं अत्यंत उत्तेजित था; लग रहा था मानो नशे में हूं।

छः

आज उस मनहूस दिन को दो दिन हो चुके हैं। उसे लेकर कितना शोर, खलबली और चिल्ल-पों मची! कितना भद्दा, अपमानकारी, बेहूदा और अशिष्ट था वह! और इस सबका कारण था मैं। फिर भी कभी-कभी मुझे उस पर हंसी आ जाती है। पता नहीं मुझे क्या हो गया था। मैं उत्तेजित, क्षणिक विक्षिप्तता में कितना ओछा व्यवहार करता चला गया, जब तक कि डांटा नहीं गया। मुझे ऐसा लगा कि मेरा मस्तिष्क हाथ से निकला जा रहा है और मैं अभी अपने स्कूली बचकानेपन से बाहर नहीं निकला हूं। एक भद्दा खिलवाड़!

इस सबकी जड़ में पोलीना थी। वह न होती तो मैं शायद स्कूली बच्चे का-सा व्यवहार न करता। शायद मैंने वह निराशावश किया हो, यद्यपि इस तर्क में कोई तुक नहीं है। मैं नहीं समझ पाता कि उसमें क्या खूबी है। पर है वह खूब, सचमुच खूब! वह अन्य पुरुषों का भी सिर फिरा देती है। वह है लंबी, सुडौल, बहुत छरहरी, चरण लंबे और पतले, तड़पानेवाले, बिलकुल तड़पानेवाले, बालों में हलकी लाली, आंखें बिलकुल बिल्ली जैसी, और वह उनसे कितने गर्व और कितनी घृणा

के साथ देख सकती है! चार महीने पहले, जब मैं आया ही था, तो वह बैठक में द ग्रीय से देर तक गर्म बातें करती रही और उसकी ओर इस तरह निहारा कि बाद को जब मैं अपने कमरे में सोने के लिए गया तो मुझे लगा कि मानो उसने उसके मुंह पर तमाचा मारा हो। वह उसके सामने खड़ी थी और उसकी ओर देख रही थी। तब से मैं उसे प्रेम करने लगा।

पर मैं बात पर आऊं।

मैं सड़क से घास पर आया और बैरन और बैरोनेस की प्रतीक्षा में खड़ा हो गया। जब वे पांच कदम की दूरी पर थे, तो मैंने टोप उतारा और सिर झुकाया।

बैरोनेस अत्यंत चौड़ा चुन्नटदार घांघरा पहने हुए थीं। वे ठिंगनी और अत्यधिक मोटी थीं। उनकी ठोड़ी इतनी लटकी हुई थी कि गर्दन छिप गई थी। चेहरा गुलाबी, आंखें छोटी, द्वेषपूर्ण और धृष्ट। चलती ऐसे थीं मानो दर्शकों को सम्मान दे रही हों। बैरन था—पतला, ऊंचा, चेहरा सूखा, हज़ारों बारीक झुर्रियों से आच्छादित, चश्माधारी और लगभग पैंतालीस वर्ष का। उसके पैर मानो छाती में से निकले थे। वह था मोर-सा गर्वीला और कुछ बेढंगा। चेहरे पर थी भेड़-सी अभिव्यक्ति जिसे लोग गंभीरता का नाम देते हैं।

यह सब तीन सेकंड में मेरे सामने कौंध गया।

मेरे झुकने और हाथ के टोप ने धीरे-धीरे उनका ध्यान आकर्षित किया। बैरन की भौंहों में हलका बल पड़ा और बैरोनेस सीधी मेरे ऊपर आई।

"श्रीमती बैरोनेस," मैं प्रत्येक शब्द पर बल देता हुआ फ्रेंच में बोला, "मुझे आपका दास होने का सौभाग्य प्राप्त है।"

मैं फिर झुका, टोप सिर पर रखा और बैरन पर नम्र मुसकान फेंकता उसके निकट से गुज़रा।

"हें!" बैरन टर्राया, क्रोध से चकित। वह मेरी ओर घूमा। मैं मुसकाता हुआ आदरमय प्रतीक्षा में खड़ा रहा। स्पष्ट ही वह घबरा गया था। उसने अपनी भौंहें यथासंभव ऊंची कीं। उसका चेहरा रंग पकड़ता गया। बैरोनेस मेरी ओर घूमीं और मुझे क्रुद्ध आश्चर्य से घूरा। राही हमें ताकने लगे।

"हें!" बैरन अधिक ज़ोर और दोहरे क्रोध से टर्राया।

"या ओल!"—(निश्चय ही)—मैंने खींचकर कहा, सीधा उसके चेहरे को ताकते हुए।

"क्या तुम गंवार हो?" वह अपना बेंत हिलाता हुआ, कुछ घबराया-सा, जर्मन में बोला। कदाचित् मेरे वस्त्रों से चकित—वे भड़कीले और सर्वोच्च समाज के थे।

"या ओ-ओ-ओल!" मैं अचानक अत्यंत ज़ोर से चिल्लाया, ओ को खींचकर, उन बर्लिन-निवासियों की भांति जो इस अभिव्यक्ति का अपने प्रत्येक वाक्य में उपयोग करते हैं और अपने विचारों तथा भावों की गहराई के अनुसार उसे खींचकर बोलते हैं।

बैरन तथा बैरोनेस तेज़ी से घूमे, मानो मुझसे डरकर भागे। मुझे स्पष्ट याद नहीं कि दर्शक क्या कर रहे थे। मैं घूमा और साधारण रीति से पोलीना की ओर चला। पर जब मैं उससे सौ कदम दूर था तो मैंने देखा कि वह बच्चों के साथ होटल जा रही है।

मैंने होटल के द्वार पर उसे जा पकड़ा और कहा, "मैंने बेहूदगी··· संपादित कर दी है।"

"तो क्या हुआ?" उन्होंने कहा और मेरी ओर बिना दृष्टि डाले ही ऊपर चली।

मैं पूरी संध्या पार्क में टहलता रहा। पार्क और जंगल को पार कर दूसरे क्षेत्र में पहुंचा। एक झोंपड़ी में आमलेट और थोड़ी शराब ली और उसके लिए डेढ़ टेलर की रकम देनी पड़ी।

जब मैं ग्यारह बजे होटल लौटा तो तुरंत जनरल के सामने पेश किया गया। जनरल अपने अध्ययनकक्ष में राजसी ढंग से खड़ा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। द ग्रीय आराम से सोफे पर पसरा हुआ था।

"क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं, महाशय," जनरल ने आरंभ किया, "कि आप क्या करते रहे हैं?"

"मैं प्रसन्न हूंगा, जनरल, यदि आप सीधे काम की बात पर आ जाएं," मैंने कहा, "आपका तात्पर्य कदाचित् उस मुठभेड़ से है, जो आज सुबह मेरी एक जर्मन के साथ हुई है।"

"एक जर्मन! वे जर्मन बैरन बरमेरहैल्म एक बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं। तुमने उनका और बैरोनेस का अपमान किया है।"

"तनिक भी नहीं।"

"महाशय, तुमने उन्हें चौंकाया है।" जनरल चिल्लाया।

"बिलकुल नहीं। जब मैं बर्लिन में था तो मैंने या ओल को लोगों द्वारा बात-बात में दोहराया जाता सुना था। उसकी ध्वनि मेरे कानों में बस गई थी। जब मैं उनसे मिला तो अचानक, पता नहीं क्यों, या ओल मेरे मस्तिष्क में आ गया। मैं उद्विग्न हो गया। इसके अतिरिक्त बैरोनेस मुझसे पहले तीर बार मिल चुकी है। उनकी आदत सीधे मेरे ऊपर चली आने की है, मानो मैं पैरों के नीचे कुचलने योग्य कीड़ा होऊं। आप मानेंगे कि मेरा भी कुछ मान हो सकता है। मैंने अपना टोप उतारा और नम्रता से, विश्वास कीजिए, नम्रता से कहा, 'श्रीमती, मुझे आपका दास होने का सौभाग्य प्राप्त है।' जब बैरन मेरी ओर घूमे और उन्होंने कहा, 'हां', तो मुझमें या ओल चीखने की प्रेरणा हुई। मैं दो बार चिल्लाया। पहली बार मामूली तौर से और दूसरी बार अधिक-से-अधिक खींचकर। बस, इतनी-सी बात थी।"

स्कूली बच्चों जैसी बात बनाकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मेरी विचित्र इच्छा थी कि इस कहानी को कहने में यथासंभव निरर्थक बना

दिया जाए। मैं ज्यों-ज्यों कहता गया, त्यों-त्यों मुझे अधिकाधिक मज़ा आने लगा।

"क्या तुम मेरी खिल्ली उड़ा रहे हो?" जनरल चिल्लाया। उसने फ्रांसीसी से फ्रेंच में कहा कि मैं जानबूझकर एक कलंक-कथा की सृष्टि करना चाहता हूं। द ग्रीय ने कंधे उचकाए और अवज्ञा से हंसा।

"जी नहीं," मैंने विरोध किया, "मैं मानता हूं कि मेरे व्यवहार को अशिष्ट और स्कूली लड़के की शैतानी कहा जा सकता है। पर इससे अधिक नहीं। और मैं हृदय से इसके लिए खेद प्रकट करना चाहता हूं। पर एक बात है जो मुझे ऐसा करने से रोकती है। पिछले पंद्रह दिन से मैं बीमार, घबराया-सा, उद्विग्न और उदास रहा हूं और कभी-कभी तो अपने ऊपर नियंत्रण भी खो बैठा हूं। वास्तव में, कभी-कभी मुझमें मार्क्विस द ग्रीय पर आक्रमण करने की उत्कट इच्छा हुई है। वे बुरा मान सकते हैं। पर ये मेरी बीमारी के लक्षण हैं। मैं नहीं जानता कि मैं जब बैरोनेस बरमेरहैल्म से क्षमा मांगूंगा तो वे कहां तक इन बातों का ध्यान रखेंगी।"

"नहीं!" जनरल ने चकित-कुपित स्वर में कहा, "तुम बैरन और बैरोनेस से क्षमा नहीं मांगोगे। इस संबंध में तुम्हारे साथ कोई भी बात करना उनके गौरव के अनुरूप न होगा। बैरन जानते हैं कि तुम मेरे साथ हो। वे कैसीनो में मुझसे बात कर चुके हैं। कुशल यह है कि उन्होंने मुझे द्वंद्व युद्ध की चुनौती नहीं दी। मुझे उनसे क्षमा मांगनी पड़ी और वचन देना पड़ा कि अब मेरे परिवार से तुम्हारा कोई संबंध न रह जाएगा।"

"क्षमा करें; जनरल, क्या उन्होंने स्वयं यह आग्रह किया है कि मेरा आपसे कोई संबंध न रहे?"

"नहीं, मैंने स्वयं यह उचित समझा और वे इससे संतुष्ट हुए। तो अब हम अलग हों। यह रहे चार फ्रीदरिश दौर और तीन फ्लोरिन

और यह हिसाब। अच्छा नमस्कार। अब हम परिचित हैं। आपसे मुझे झंझट के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला। अब मैं आपके होटल के खर्चों के लिए ज़िम्मेदार नहीं हूं। मुझे महाशय के विनम्र सेवक रहने का सौभाग्य प्राप्त है।"

मैंने रकम उठा ली। जनरल को नमन किया और बहुत गंभीरता से बोला, "जनरल, यह मामला इस प्रकार समाप्त नहीं हो सकता। मुझे बहुत दुःख है कि बैरन के प्रति आप ऐसी अप्रिय स्थिति में पड़े। पर, क्षमा करें, इसमें दोष आपका ही है। आपने बैरन के प्रति मेरे लिए उत्तरदायी बनने का काम अपने सिर क्यों लिया? मैं आपके परिवार का सदस्य हूं इसका क्या अर्थ है? मैं आपके यहां अध्यापक-मात्र हूं। मैं न आपका पुत्र हूं, न आपसे संरक्षित हूं। आप मेरे कार्यों के लिए उत्तरदायी नहीं हो सकते। मैं कानूनन एक उत्तरदायी व्यक्ति हूं, पचीस वर्ष का, विश्वविद्यालय का ग्रेजुएट। यदि मैं आपसे सफाई और संतोष नहीं मांगता तो इसका कारण यही है कि मेरे हृदय में आपके प्रति असीम आदर है।"

जनरल ने विस्मय से हाथ ऊपर फेंके और फ्रांसीसी को सूचना दी कि मैंने अभी उसे द्वंद्व युद्ध की चुनौती देने से तनिक ही कसर छोड़ी है।

फ्रांसीसी ज़ोर से हंसा।

"पर मैं बैरन को ऐसे ही नहीं छोड़ूंगा," मैंने शांत भाव से कहा, "और जनरल, क्योंकि आपने बैरन की शिकायत सुनी है और इस मामले में उसका पक्ष लिया है, इसलिए मैं सम्मानपूर्वक आपको सूचना देता हूं कि कल प्रातः मैं बैरन से औपचारिक रूप से उन कारणों को जानना चाहूंगा, जिनके वश उसने मेरे बारे में दूसरे व्यक्तियों से बात की है, मानो मैं स्वयं इसके अयोग्य हूं।"

जो मैंने सोचा था वही हुआ। मेरी इस नई बेहूदगी से जनरल बहुत घबरा गया।

"क्या तुम इस अभागे झगड़े को जीवित रखना चाहते हो?" वह चिल्लाया, "ऐसा साहस करना, महाशय, ऐसा साहस···नहीं तो···यहां पुलिस भी है, और मैं···वास्तव में मेरा पद···और बैरन का भी···तुम पुलिस द्वारा झगड़े का खतरा दूर करने के लिए राज्य से बाहर कर दिए जाओगे। समझे?" यद्यपि क्रोध से उसका सांस रुक रहा था, पर वह अत्यंत भयभीत भी था।

"जनरल," मैंने ऐसे शांत भाव से उत्तर दिया जो उसके लिए असह्य था, "आप किसी को झगड़ा करने से पहले झगड़ा करने के लिए गिरफ्तार नहीं कर सकते। फिर आपको तनिक भी पता नहीं कि मैं बैरन से किस प्रकार बातचीत करना चाहता हूं। मैं केवल उस स्थिति का उत्तर चाहता हूं जो मेरे लिए अपमानजनक है। इसमें आपके चिंतित या उद्विग्न होने की आवश्यकता नहीं है।"

"एलैक्ज़ी इवैनोविच, भगवान् के लिए अपनी इस विक्षिप्त इच्छा को त्याग दो।" जनरल ने अपने क्रुद्ध स्वर को अचानक विनीत करके मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा, "ज़रा सोचो तो, इससे नई बुराई ही पैदा होगी। मुझे यहां संभलकर रहना है, विशेषतया इस समय। ओफ, तुम मेरी संपूर्ण परिस्थिति को नहीं जानते। घबराओ नहीं, बाद में मैं तुम्हें वापस ले लूंगा, निश्चय ही। कुछ ऐसे ही कारण हैं।" वह निराशा से आतुर हुआ, "एलैक्ज़ी इवैनोविच! एलैक्ज़ी इवैनोविच!"

मैंने चलते हुए अधिक गंभीरता से निवेदन किया, "आप चिंतित न हों। सब बात समुचित शिष्टता के साथ शांतिपूर्वक हो जाएगी।" और तेज़ी से चला आया।

विदेश में रूसी, विशेषतया वे जो अपने को बड़ा समझते हैं, इस बात से बहुत डरते हैं कि लोग क्या कहेंगे। वे परम्परागत नियमबंदी का दासवत पालन करना अपना परम सौभाग्य मानते हैं। पर जनरल की परिस्थिति कुछ भिन्न थी, जिसके कारण उसे विशेष संभलकर

रहना चाहिए था। इसीलिए उसने इतनी सरलता से मुझसे संधि कर ली। मैंने इसे समझा और इस पर ध्यान रखा; और निश्चय ही वह मेरी मूर्खता की ओर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कर सकता था। इसलिए मुझे वास्तव में सतर्क रहना चाहिए।

मैं जनरल को नहीं, हां, पोलीना को अवश्य क्रुद्ध करना चाहता था। पोलीना ने मेरे साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया था। उसने मुझे एक ऐसी बेहूदा स्थिति में धकेल दिया था कि अब मेरे मन में यह इच्छा उठी कि मैं उसे बाध्य करूं कि वह मुझसे रुकने की विनती करे। मेरी इस स्कूली लड़के जैसी शैतानी से उसे भी हानि पहुंच सकती है। इसके अतिरिक्त मेरे भीतर एक दूसरी भावना भी सिर उठा रही थी। यद्यपि मैं उसके सामने नगण्य रह जाता हूं, पर इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि मैं दूसरे लोगों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता, अथवा यह कि बैरन मुझे पीट सकता है। मैं उन सब पर हंसना चाहता था और विजयी निकल आना चाहता था। तो वह इस कलंक-कथा से डरेगी और मुझे फिर बुलाएगी, अथवा यदि नहीं बुलाएगी तो कम-से-कम यह तो मानेगी कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हूं।

(जब मैं सीढ़ियों पर पहुंचा तो सुना कि मेरिया फिलिप्पोवना आज शाम की गाड़ी से बिलकुल अकेली कार्ल्सबाद चली गई हैं। इसका कारण? क्या कुमारी ब्लांश···?)

सात

मैं ने प्रातः बैरे का बुलाया और कह दिया कि मेरा बिल अलग बनाया जाए। मेरा कमरा महंगा न था। मेरे पास सोलह फ्रीदरिश दौर थे और···कदाचित् सामने भारी रकम! बात विचित्र है—मैं अभी जीता नहीं हूं, पर मेरा व्यवहार, मेरी भावनाएं और मेरे विचार एक धनी व्यक्ति के समान हैं। इसके अतिरिक्त मैं कुछ सोच भी नहीं सकता।

तड़के ही मैं मि. ऐस्टली से मिलने अंग्रेज़ी होटल, जो काफी निकट था, जानेवाला था कि अचानक द ग्रीय आ पहुंचा। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। और अब, जबकि उसके और मेरे बीच के संबंध पिछले दिनों में काफी तने हुए थे, वह मेरे प्रति अपनी घृणा खुलकर दर्शाता था और मैं···मेरे पास अपने कारण थे कि उसका तिरस्कार करूं, उससे घृणा करूं। उसके आने से मैं चकित हुआ। ताड़ गया कि बात विशेष है।

वह अत्यंत नम्रता से आया। मेरे कमरे की प्रशंसा की। मेरे हाथ में टोप देखकर पूछा कि क्या मैं इतने तड़के टहलने जा रहा हूं? जब उसने यह सुना कि मैं मिस्टर ऐस्टली से मिलने जा रहा हूं, तो वह विचारमग्न हो गया; चेहरे पर गहरी चिंता उभर आई।

द ग्रीय अन्य फ्रांसीसियों के समान मतलब के समय प्रसन्न और नम्र, तथा जब प्रसन्नता और नम्रता की आवश्यकता न रहे, तो असह्य और अरोचक था। फ्रांसीसी वास्तव में एक निम्न, ओछी, सामान्य व्यावहारिक बुद्धि से निर्मित होता है। मैं समझता हूं कि केवल अजान और अनुभवहीन, विशेषतया रूसी नवयुवतियां ही फ्रांसीसियों पर मोहित होती हैं। संस्कृत व्यक्ति के लिए उनकी बैठक की नम्रता, सरलता और प्रसन्नता की घिसी-पिटी रूढ़ि तुरंत स्पष्ट और असहनीय हो जाती है।

"मैं एक काम से आया हूं।" वह स्पष्ट पर नम्रता से बोला, "जनरल की ओर से एक दूत अथवा मध्यस्थ बनकर। मैं रूसी बहुत कम समझता हूं, इसलिए आप लोगों की कल की बात मेरे विशेष पल्ले नहीं पड़ी। जनरल ने मुझे विस्तारपूर्वक बताया और मैं मानता हूं···"

"पर, मार्क्विस द ग्रीय, सुनिए तो," मैंने टोका, "मैं एक मामूली अध्यापक हूं। मैंने कभी इस परिवार के साथ मित्रता अथवा घनिष्ठता का दावा नहीं किया। आप मध्यस्थ बने हैं। कृपया बताइए कि क्या अब आप पूर्णतया इस परिवार के सदस्य हैं···?"

वह इस प्रश्न से प्रसन्न नहीं हुआ। स्पष्ट ही वह कुछ कहना नहीं चाहता था।

"जनरल के साथ मेरा संबंध अंशतः कारोबारी और अंशतः कुछ विशेष परिस्थितियों द्वारा है।" वह रुखाई से बोला, "जनरल ने मुझे तुमसे यह कहने को भेजा है कि तुमने कल जो इच्छा व्यक्त की थी, उसे त्याग दो। उसने अनुरोध किया है कि मैं तुम्हें बताऊं कि तुम उसमें नितांत असफल रहोगे। बैरन तुमसे नहीं मिलेंगे। वे समर्थ हैं। तुम्हारी बेहूदगियों से स्वयं निपट सकते हैं। तुम स्वयं सोचो, इसका लाभ क्या होगा? जनरल वचन देते हैं कि समुचित अवसर आते ही तुम्हें वापस बुला लेंगे और इस बीच में तुम्हारा वेतन देते रहेंगे। क्या यह तुम्हारे लिए सुविधाजनक न होगा?"

मैंने बहुत शांति से बताया कि उसका विचार कुछ गलत है। मुझे बैरन के यहां से निकाला नहीं जाएगा, मेरी बात सुनी जाएगी। मैंने उससे पूछा कि क्या आप यह जानने के लिए आए हैं कि मैं आगे क्या करनेवाला हूं।

"जनरल को निश्चय ही यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी।"

मैं बताने लगा कि वह आराम से लेटकर सुनने लगा। उसके चेहरे पर व्यंग्य स्पष्ट था। मैंने अपनी शक्तिभर यह दर्शाना चाहा कि मैं इस मामले को बहुत गंभीर समझता हूं। मैंने कहा कि बैरन ने मेरी शिकायत जनरल से की, मानो कि मैं उनका नौकर होऊं, और ऐसा करके उन्होंने एक तो मेरी नौकरी को हानि पहुंचाई, और दूसरे, मुझे बात करने के अयोग्य समझा। निश्चय ही यह मेरा अपमान है। अवस्था, सामाजिक स्थिति आदि के अंतर के विचार से (और यहां मैं अपनी हंसी कठिनता से रोक सका।) मैं यह नहीं चाहता कि बैरन से सीधी सफाई मांगूं अथवा उनसे द्वंद्वयुद्ध का प्रस्ताव करूं। फिर भी मैं अपने को इसका पूर्ण अधिकारी समझता हूं कि बैरन और बैरोनेस से अपनी क्षमा-याचना निवेदन करूं, विशेषतया इसलिए कि पिछले दिनों से मैं अपने को अस्वस्थ, अशांत और कल्पनात्रस्त अनुभव कर रहा हूं। पर बैरन के कार्य ने मुझे ऐसी स्थिति में डाल दिया है कि अब मैं उनसे क्षमा भी नहीं मांग सकता। लोग उसका अर्थ यही समझेंगे कि मैं डर गया हूं और अपनी नौकरी वापस चाहता हूं। इस सबका फल यह निकलता है कि मैं बैरन से विनती करूं कि वह पहले अत्यंत औपचारिक रीति से मुझसे अपने कार्य के लिए क्षमा मांगे। उसके बाद मैं समझूंगा कि मेरे हाथ खुल गए हैं और मैं पूर्ण स्पष्टता और सचाई के साथ उनसे क्षमा-याचना करूंगा।"

"कितना क्षुद्र और जटिल! तुम क्षमा-याचना क्यों करना चाहते हो महाशय? तुम यह क्यों नहीं मान लेते कि यह सब जनरल को तंग

करने के लिए कर रहे हो···या तुम्हारा कोई दूसरा उद्देश्य है?"

"क्षमा करें, आपको इससे मतलब?"

"परन्तु जनरल···!"

"हां जनरल, उन्होंने रात कुछ विशेष संभलकर रहने की बात कही थी।···घबराई-सी···मेरी समझ में नहीं आई।"

"हां, एक विशेष परिस्थिति है।" द ग्रीय ने एक आग्रही स्पष्टतः खीज-भरे स्वर में कहा, "तुम कुमारी द कौमिंग्स को जानते हो?"

"अर्थात् कुमारी ब्लांश को?"

"हां, कुमारी ब्लांश द कौमिंग्स···और उसकी मां। तुम जानते हो···संक्षेप में, जनरल उससे प्रेम करते हैं···वास्तव में···यह विवाह यहीं हो सकता है और तब, कल्पना करो कि कोई दुश्चर्चा, कोई कलंक-कथा···"

"मुझे तो इसमें विवाह से संबंधित कोई दुश्चर्चा या कलंक-कथा दिखाई नहीं देती।"

"पर बैरन एक चिड़चिड़ा प्रुशियन है। बेमतलब का झगड़ा खड़ा कर सकता है।"

"मेरे साथ, आपके साथ नहीं; क्योंकि आपके साथ अब मेरा कोई संबंध नहीं रह गया है। (मैंने अधिक-से-अधिक बुद्धू बनने का प्रयत्न किया) क्षमा कीजिए, क्या यह विवाह निश्चय हो गया? तो फिर प्रतीक्षा किस बात की है? और हम घरेलू लोगों से भी यह भेद क्यों छिपाया जाता है?"

"मैं कह नहीं सकता···पर यह बिलकुल निश्चित नहीं···इसके अतिरिक्त···तुम जानते हो कि वे रूस से किसी समाचार की प्रतीक्षा कर रहे हैं; जनरल को प्रबंध करना है···।"

"ओह, तो ये आशाएं···!"

द ग्रीय ने मेरी ओर घृणा से देखा। उसने टोका, "मैं तुम्हारी

स्वाभाविक नम्रता, बुद्धिमानी और चतुराई पर विश्वास करता हूं। तुम निश्चय ही उस परिवार की बुराई न करोगे जिसमें तुम अपनाए और सम्मानित किए गए।"

"क्षमा करें, मैं निकाल दिया गया। और अब आप कहते हैं कि यह केवल दिखावा-मात्र है। यदि आपसे कहा जाए कि हम तुम्हें निकालना नहीं चाहते पर केवल दिखाने के लिए आप यहां से चले जाइए, तो मतलब लगभग वही निकलता है।"

"अच्छा, यदि अनुरोध का तुम्हारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता," तो उसने कठोरता और गर्मी से कहा, "मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि समुचित कदम उठाए जाएंगे और तुम आज ही यहां से निकाल दिए जाओगे। तुम बैरन को चुनौती दो और कोई तुमसे कुछ न कहे! मैं तुम्हारे पास अपने-आप इसलिए आया था कि जनरल तुम्हारे कारण चिंतित है। क्या तुम समझते हो कि बैरन तुम्हें ऐसा ही छोड़ देंगे?"

मैंने अत्यन्त शांति से कहा, "द ग्रीय महाशय, आप भूलते हैं। मैं अभी मिस्टर ऐस्टली के पास जा रहा हूं। मैं उनसे कहूंगा कि वे मेरे मध्यस्थ, वास्तव में मेरे सहायक बनें। मैं उन्हें पसन्द हूं। वे स्वीकार कर लेंगे। वे बैरन के पास जाएंगे और बैरन उनका स्वागत करेंगे। मैं एक अध्यापक-मात्र, कुछ नीचा और अरक्षित जान पड़ता हूं, पर मिस्टर एक असली लार्ड के, लार्ड पिब्रोक के भतीजे हैं। वे लार्ड यहीं हैं और उन्हें सब जानते हैं। बैरन यदि मिस्टर ऐस्टली की बात नहीं सुनेंगे तो मिस्टर ऐस्टली उसे अपना व्यक्तिगत अपमान समझेंगे। आप जानते हैं कि अंग्रेज़ कितने आग्रही होते हैं। और उनके मित्र शक्तिशाली हैं। इस प्रकार बात कुछ आप लोगों की आशा के विपरीत हो सकती है।"

यह सब सम्भावना के इतने निकट था कि फ्रांसीसी भयभीत हो गया। उसे निश्चय हो गया कि मैं सचमुच एक विकट दुश्चर्चा खड़ी कर सकता हूं।

"अच्छा, तो मेरी एक विनती सुनो," उसने सच्ची खुशामद के स्वर में कहा, "इस मामले को यहीं छोड़ दो। तुम सफाई नहीं दुश्चर्चा चाहते हो। इसमें बहुत आनन्द और व्यंग्य है। पर संक्षेप में," उसने मुझे टोप उठाते देखकर समाप्त किया, "मैं एक व्यक्ति से तुम्हारे लिए ये कुछ पंक्तियां लाया हूं। इन्हें पढ़ो, मैं उत्तर की प्रतीक्षा में हूं।"

यह कहकर उसने जेब से एक मुड़ा मोहर लगा पुर्जा निकाला और मुझे दिया। अक्षर पोलीना के थे।

"मैं समझती हूं कि तुम इस मामले को आगे बढ़ाना चाहते हो, पर कुछ परिस्थितियां हैं जो मैं बाद में बताऊंगी। कृपया उसे छोड़ दो और मान जाओ। यह मूढ़ता है! मुझे तुम्हारी आवश्यकता है और तुमने आज्ञा पालने का वचन दिया है। श्लांगेनबर्ग की याद करो। मैं विनती करती हूं, मान जाओ, यदि आवश्यकता है तो आज्ञा देती हूं।

तुम्हारी प।"

"पुनश्च : कल जो हुआ है, उसके कारण यदि तुम मुझ पर क्रुद्ध हो तो क्षमा करो।"

मैंने इन पंक्तियों को पढ़ा तो दुनिया घूम गई। मेरे होंठ सफेद पड़ गए और मैं कांपने लगा। कमबख्त फ्रांसीसी ने समझदारी दिखाने के लिए अपनी आंखें दूसरी ओर फेर लीं। अच्छा होता कि वह खुलकर मेरे ऊपर हंसता।

"बहुत ठीक!" मैं बोला, "कुमारी से कहना कि वे चिंतित न हों। क्या मैं आपसे यह पूछ सकता हूं कि···" मैंने तेज़ी से कहा, "यह पत्र... आपने मुझे इतनी देर बाद क्यों दिया? यदि आप इसी काम से आए थे, तो व्यर्थ बकवास करने की बजाय, मैं समझता हूं कि आपको यहीं से आरम्भ करना चाहिए था।"

"मैं देना चाहता था···पर तुम्हें मेरी प्राकृतिक अधीरता क्षमा कर देनी चाहिए। मैं जानना चाहता था कि तुम क्या करना चाहते हो।

और···मैं नहीं जानता था कि उस पुर्जे में लिखा क्या है। मैंने सोचा कि उसके देने में जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है।"

"पर मैं समझता हूं कि यदि बातों से तुम्हारा काम हो जाता तो तुम उसे मुझे कभी न देते। क्या यह सही है? स्पष्ट बताइए!"

"हो सकता है।" उसने मेरी ओर एक विचित्र दृष्टि डालते हुए कहा।

हमने अपने टोप लिए। बाहर निकले। मुझे लगा कि उसके चेहरे पर एक व्यंग्य-भरी मुसकान है। पर, वास्तव में इसके अतिरिक्त वहां आशा ही क्या की जा सकती थी।

"कोई बात नहीं फ्रांसीसिया, इसका बदला चुका लिया जाएगा।" मैं ज़ीने से उतरते हुए बुदबुदाया। मैं स्पष्ट नहीं सोच पा रहा था। स्वच्छ वायु लगी तो कुछ स्वस्थ हुआ।

जब मैं साफ सोच सका तो दो विचार स्पष्ट हुए। पहला यह कि एक नगण्य घटना और एक लड़के की सी शैतानी-भरी ऊटपटांग धमकियों से सबमें आतंक फैल गया है। दूसरा विचार था—पोलीना के ऊपर इस फ्रांसीसी का प्रभाव किस प्रकार का है? उसके एक शब्द-मात्र पर वह कुछ भी कर देती है। मुझे पुर्ज़ा लिखती है, विनती तक करती है! उनके बीच का संबंध मेरे लिए एक रहस्य है। पिछले दिनों में वह पोलीना के प्रति अशिष्ट हो गया है और पोलीना भी उसके बारे में तिरस्कार से बातें करती है। पर उसकी कुछ स्वीकृतियां अत्यंत अर्थपूर्ण हैं। तो वह एकदम उसकी मुट्ठी में है, किसी प्रकार उसके बंधन में है?

आठ

मैं सड़क पर अखरोट के वृक्षों के नीचे अंग्रेज से मिला।

"अरे!" मुझे देखते ही उसने कहा, "मैं तुम्हारी ओर आ रहा था और तुम मेरी···? क्या तुम अपने लोगों से अलग हो गए हो?"

"आपको यह कैसे मालूम हुआ? क्या यह बात फैल गई है?"

"नहीं, फैली नहीं, और फैलने योग्य भी नहीं है।"

"तो आप तक कैसे पहुंची?"

"मुझे ऐसे ही मालूम हो गई। हां, अब तुम कहां जाओगे? तुम मुझे पसन्द हो, इसीलिए मैं तुमसे मिलने आ रहा था।"

"आप बड़े शानदार व्यक्ति हैं, मिस्टर ऐस्टली। (मैं जानना चाहता था कि बात उन तक कैसे पहुंची?) मैंने अभी कॉफी नहीं ली है और आपको भी सम्भवतया बढ़िया प्याला नहीं मिला है। आइए, कैसीनो के काफे में चलें, बैठेंगे; मैं आपको सब बताऊंगा और आप भी मुझे···।"

काफे सौ कदम पर था। कॉफी आई, मैंने सिगरेट जलाई मिस्टर ऐस्टली ने मेरी ओर निहारा और सुनने को तैयार हुए।

"मैं कहीं नहीं जाऊंगा। यहीं रहूंगा।"

"यह तो मैं जानता था।" मिस्टर ऐस्टली ने समर्थन किया।

जब मैं मिस्टर ऐस्टली की ओर जा रहा था, तो उनसे पोलीना के प्रति अपने प्रेम की बात कहने का विचार मेरे मन में भी नहीं आया था। मैंने उनसे इस विषय में शायद ही कभी कुछ कहा हो। वे बहुत गम्भीर थे। मैंने देखा कि आरम्भ से ही पोलीना ने उन्हें बहुत प्रभावित किया है। पर उन्होंने कभी उसका नाम भी नहीं लिया। पर ज्योंहि उनकी कांसे-सी आंखें मुझ पर लगीं, पता नहीं क्यों, मुझे लगा कि मैं अपने प्रेम के सब पहलुओं के बारे में सब कुछ उनसे कह डालूं। मैं आध घंटे तक बोलता रहा; बहुत अच्छा लगा। मैंने पहली बार ही इस विषय में अपना मुंह खोला था। यह देखकर कि कुछ तेज़ वाक्यों से उन्हें संकोच हुआ है, मैंने जानबूझकर अपनी भावना की तीव्रता को बढ़ा दिया। हां, मुझे एक खेद है कि फ्रांसीसी के बारे में मैं शायद आवश्यकता से अधिक बोल गया।

मिस्टर ऐस्टली मेरे सामने बैठे, मेरी आंखों में देखते, निःशब्द, शांत सुनते रहे। पर जब मैं फ्रांसीसी के बारे में बोला तो उन्होंने अचानक मुझे टोक दिया और ज़ोर से पूछा कि क्या मुझे एक ऐसी बात, जिसका संबंध मुझसे नहीं है, कहने का अधिकार है? मिस्टर ऐस्टली के प्रश्न विचित्र होते थे।

"आप ठीक कहते हैं। मैं समझता हूं कि नहीं।" मैंने कहा।

"क्या तुम मार्क्विस और मिस पोलीना के बारे में कोई बात अकल्पित और निश्चित सत्य रूप से कह सकते हो?"

मिस्टर ऐस्टली जैसे गंभीर व्यक्ति से ऐसा सीधा प्रश्न सुनकर मैं फिर चकित हुआ।

"कोई निश्चित बात?" मैंने उत्तर दिया, "बिलकुल नहीं।"

"यदि ऐसा है तो तुमने न केवल मुझसे कहकर, वरन स्वयं इसे सोचकर भी बुरा किया है।"

"मैं मानता हूं। पर इस समय कथा वह नहीं है।" मैंने अपने पर आश्चर्य करते हुए उन्हें टोका और कल की पूरी बात कह सुनाई और अंत में मैंने सुबह की द ग्रीय की बातचीत विस्तारपूर्वक बताई और पुर्ज़ा दिखाया।

"इस सबसे आप क्या समझते हैं?" मैंने पूछा, "मैं यही जानने आया था। जहां तक मेरा संबंध है, मैं फ्रांसीसी की हत्या कर सकता हूं, शायद करूंगा।"

"यह तो मैं भी कर सकता हूं।" मिस्टर ऐस्टली बोले, "जहां तक मिस पोलीना की बात है, तुम जानते हो···आवश्यकता पड़ने पर हम ऐसे लोगों के साथ भी संबंध बना सकते हैं जिन्हें हम घृणा करते हैं। बाहरी परिस्थितियों पर आधारित ऐसे संबंध हो सकते हैं जिनका तुम्हें बिलकुल पता न हो। मैं समझता हूं कि इस बारे में, एक सीमा तक, तुम अपने मन को शांत रख सकते हो। जहां तक पोलीना के कल के व्यवहार का संबंध है, वह विचित्र तो था, पर वह न तुमसे छुटकारा पाना चाहती थी और न तुम्हें बैरन के बेंत से पिटवाना चाहती थी (मेरी समझ में नहीं आता कि बेंत हाथ में होने पर भी उसने उसका उपयोग क्यों नहीं किया?), पर ऐसा खिलवाड़ ऐसी सुन्दर युवती के अयोग्य था। निश्चय ही, उसने आशा नहीं की होगी कि तुम उसकी इस मज़ाकी इच्छा का इतना अक्षरशः पालन करोगे।"

"तो आप यह सब जानते हैं?" मैंने मिस्टर ऐस्टली को ध्यान से देखा और बोला, "समझता हूं कि इस बारे में आप पहले ही सुन चुके हैं। बताऊं किससे? स्वयं कुमारी पोलीना से।"

मिस्टर ऐस्टली ने मेरी ओर आश्चर्य से देखा। "मैं तुम्हारी चमकती आंखें देख रहा हूं। तुम्हारा संदेह पढ़ रहा हूं।" उन्होंने संभलते हुए कहा, "पर तुम्हें संदेह प्रकट करने का अधिकार नहीं है। मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने से बिलकुल इनकार करता हूं।"

"आवश्यकता भी नहीं है।" मैंने क्षुब्ध होकर कहा। मन में उठा कि पोलीना ने ऐस्टली को कब, कहां और कैसे अपना विश्वासपात्र बनाया। हां, पिछले दिनों मिस्टर ऐस्टली विशेष दिखाई नहीं दिए थे और पोलीना, वह सदा मेरे लिए एक पहेली रही है। ऐसी पहेली कि अब मिस्टर ऐस्टली से अपने प्रेम का वर्णन करते समय मुझे अचानक ऐसा लगा कि हमारे संबंधों में ऐसा कुछ नहीं है जिसे निश्चित तथ्य कहा जा सके। इसके विपरीत सभी तो विचित्र, अस्थिर और वास्तव में बिलकुल अजूबा है।

"बहुत ठीक। बहुत ठीक। मैं घबराया-सा हूं। बहुत कुछ है जो मेरी समझ में नहीं आ रहा है।" मैंने मानो सांस लेने का प्रयत्न करते हुए कहा, "आप भले आदमी हूं। और अब एक दूसरी बात—मैं आपकी सलाह नहीं, राय चाहता हूं।"

मैं कुछ ठहरा। फिर बोला, "जनरल इतना भयभीत क्यों हुआ? उसने मेरे इस बेहूदे मज़ाक पर इतना बावेला क्यों मचाया? द ग्रीय ने बीच में पड़ना उचित क्यों समझा? वह केवल अत्यंत महत्त्वपूर्ण मामलों में ही बोलता है। सोचिए तो, वह मेरे पास आया, विनती की, प्रार्थना की, जी, द ग्रीय ने! ध्यान दीजिए कि वह मेरे पास नौ बजे आया और उस समय मिस पोलीना का पत्र उसके हाथ में था। तो वह लिख कब गया? शायद उन्होंने इसके लिए पोलीना को जगाया! और इसके अतिरिक्त यह स्पष्ट है कि मिस पोलीना उसकी दासी है, क्योंकि वह मुझसे क्षमा-याचना करती है! और भी, वह इस सबसे कैसे संबंधित है? ये सब बैरन से क्यों डरते हैं? यदि जनरल कुमारी ब्लांश से विवाह करना चाहता है तो इसके लिए उन्हें संभलकर क्यों रहना चाहिए? आपकी क्या राय है? इस विषय में आप निश्चय ही मुझसे अधिक जानते हैं!"

मिस्टर ऐस्टली हंसे और सिर हिलाया, "निश्चय ही मैं तुमसे

अधिक जानता हूं। इसका संबंध केवल कुमारी ब्लांश से है और बात बिलकुल सही है।"

"कुमारी ब्लांश से संबंध कैसा?" मैं अधीरता से बोला। मुझे आशा हुई कि अब कुमारी पोलीना के बारे में कुछ मालूम होगा।

"मैं समझता हूं कि इस समय कुमारी ब्लांश के लिए बैरन और बैरोनेस से भेंट होना बचाने के, विशेषकर अप्रिय भेंट बचाने के और भी अधिक और निन्दामय भेंट बचाने के बहुत बड़े कारण हैं।"

"आपका मतलब?"

"दो वर्ष पहले कुमारी ब्लांश यहां थीं। मैं भी था। उस समय वे कुमारी द कौमिंग्स नहीं थीं और उनकी मां का कहीं पता न था। द ग्रीय भी नहीं था। मेरा विश्वास है कि उनकी जान-पहचान अभी नई है। यह द ग्रीय भी बहुत हाल में मार्क्विस बना है।"

"पर उसका परिचय वास्तव में बहुत सम्मान्य वर्ग में है।"

"हो सकता है। और कुमारी ब्लांश का भी। पर दो वर्ष पूर्व इसी बैरोनेस के अनुरोध पर पुलिस ने कुमारी ब्लांश को नगर त्यागने की आज्ञा दी थी और वे चली गई थीं।"

"बात क्या थी?"

"वे पहले यहां किसी प्रकार के एक इटैलियन राजकुमार के साथ दिखाई दीं। उसका नाम था बारबरीनी या ऐसा ही कुछ। वह अंगूठियों और हीरों—नकली नहीं—से लदा हुआ था। वे शानदार गाड़ियों में घूमते थे। कुमारी ब्लांश त्रांत ए करान्त (तीस और चालीस) खेलती थीं। आरम्भ में वे जीतीं पर फिर उनका भाग्य औंधा हो गया। वे एक शाम बड़ी रकम हार गईं। और उससे बुरा यह कि सुबह उनका राजकुमार अन्तर्धान हो गया, और उसके साथ घोड़ागाड़ी और सब कुछ। होटल के बिल बड़े थे। और क्योंकि यह अब बारबरीनी नहीं रह सकती थीं, इसलिए अचानक कुमारी सेलमा बन गईं। अत्यन्त

दुःखी हुईं, चीखीं, चिल्लाईं, अपने कपड़े फाड़ डाले। उन दिनों होटल में पोलैंड का एक काउण्ट--पोलैंड के सब यात्री काउण्ट होते हैं--ठहरा हुआ था। अपनी सुगंधित अंगुलियों से अपना चेहरा खरोंचती हुई कुमारी सेलमा की उससे बात हो गई। उनका धीरज बंध गया। संध्या समय कैसीनो में वे ज़ोरों से हंसीं और उनका व्यवहार कुछ अधिक ही स्वतंत्र और स्वछंद हो गया। उन्होंने दर्शा दिया कि वे महिलाओं के उस वर्ग की हैं, जो रूलेट की मेज के निकट दूसरे खिलाड़ियों को धकियाकर अपने लिए स्थान बना लेती हैं। यह तो तुमने देखा होगा?"

"जी हां।"

"पर जब तक वे प्रतिदिन हज़ार रूबल का नोट भुना सकती हैं, उन्हें वहां से हटाया नहीं जाता। कुमारी सेलमा नोट भुनाती गईं। पर भाग्य अधिकाधिक उनके विपरीत पड़ने लगा। ध्यान देने की बात है कि ऐसी महिलाएं भाग्यशाली होती हैं। उनका आत्मसंयम विचित्र होता है। पर मेरी कहानी यहां समाप्त होती है। राजकुमार की भांति एक दिन काउण्ट भी अन्तर्धान हो गया। कुमारी सेलमा को बांह को सहारा देनेवाला कोई और आगे नहीं आया। दो दिन में अपना अन्तिम लुई दौर दांव पर लगाने और हार जाने के बाद उन्होंने चारों ओर देखा तो पाया कि उनके निकट बैरन बेरमेरहैल्म खड़े ध्यान और गंभीर क्रोध से उसे जांच रहे हैं। कुमारी सेलमा ने उनके क्रोध को नहीं देखा और उस मुसकान से--जिसे हम सब जानते हैं--बैरन से अपने लिए लाल पर दस लुई दौर लगाने को कहा। इसके फलस्वरूप बैरोनेस की शिकायत पर उन्हें कैसीनो में फिर दर्शन न देने का निमंत्रण मिला। तुम्हें आश्चर्य हो सकता है कि मैं इतनी ओछी और अत्यन्त अनुचित बात कैसे जानता हूं। कारण यह है कि मैंने यह बात अपने एक संबंधी से, जो उसी शाम कुमारी सेलमा को अपनी गाड़ी में रूलटेनबर्ग से स्पा ले गए थे, सुनी है। अब वही कुमारी ब्लांश जनरल की पत्नी

बनना चाहती हैं। अब वे खेलती नहीं हैं। शायद इस कारण कि रकम अब अपनी है। उसे अब वे साझे पर उधार देती हैं। यह अधिक सुरक्षित जुआ है। सम्भवतया अभागा जनरल उनका कर्ज़दार है। कदाचित् द ग्रीय भी उनसे मिला हुआ है। अब तुम मानोगे कि ऐसी स्थिति में एक दुश्चर्चा कितनी हानिकारी हो सकती है, विशेषतया जबकि तुम्हारा उन लोगों से संबंध है और कुमारी ब्लांश नित्य या तो जनरल के हाथ में हाथ डाले अथवा मिस पोलीना के साथ दिखाई देती हैं। क्या अब आया तुम्हारी समझ में?"

"जी नहीं।" मैंने मेज़ पर इतनी ज़ोर का घूंसा मारा कि बैरा घबराकर दौड़ा आया।

"मिस्टर ऐस्टली, मुझे बताइए," मैंने कुपित होकर कहा, "यदि आप यह सब जानते थे तो आपने मुझे, जनरल को और कुमारी पोलीना को क्यों नहीं बताया? क्या यह क्षम्य हो सकता है?"

"ऐसा कोई कारण नहीं था कि मैं तुम्हें सूचना देता। और तुम करते भी क्या?" मिस्टर ऐस्टली ने शांत भाव से कहा, "इसके अतिरिक्त जनरल कुमारी ब्लांश के बारे में कदाचित् मुझसे अधिक जानता है। जनरल एक अभागा मनुष्य है। कल मैंने देखा कि कुमारी ब्लांश एक शानदार घोड़े पर द ग्रीय और नन्हें रूसी राजकुमार के साथ आगे-आगे जा रही थीं और जनरल एक मामूली घोड़े पर उनके पीछे आ रहा था। उसने मुझे सुबह बताया कि उसके पैरों में पीड़ा है। पर वह अपने घोड़े पर अच्छी तरह बैठा हुआ था। उस समय मुझे लगा कि वह बिलकुल बरबाद हो चुका है। पर इससे मुझे मतलब! और मुझे मिस पोलीना से परिचित होने का सौभाग्य अभी हाल में ही मिला है," (मिस्टर ऐस्टली ने सांस ली) "पर मैं तुमसे कह चुका हूं कि यद्यपि मैं तुम्हें सचमुच पसंद करता हूं, पर तुम्हारे कुछ प्रश्नों को पूछने का अधिकार स्वीकार नहीं करता।"

"ठीक!" मैंने उठते हुए कहा, "अब मुझे स्पष्ट हो गया कि मिस पोलीना कुमारी ब्लांश के बारे में सब जानती है। पर अपने को फ्रांसीसी से अलग नहीं कर पातीं। इसलिए उसके साथ घूमती-फिरती हैं। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा कारण नहीं है जो उसे मुझसे प्रार्थना करने को बाध्य करे। कैसी कमबख्ती है। कुछ समझ में नहीं आता।"

"तुम यह भूलते हो कि कुमारी ब्लांश जनरल की भावी पत्नी हैं और मिस पोलीना जनरल की सौतेली पुत्री है और उसके छोटे भाई-बहन हैं। जनरल के बच्चे, जिनकी ओर उस पागल का ध्यान बिलकुल नहीं है और मेरा विश्वास है कि उसने उन्हें लूट खाया है।"

"हां, यही बात है! बच्चों को छोड़ने का अर्थ है उन्हें अन्धकार में ढकेलना। और साथ रहने का अर्थ है उनके हितों की रक्षा और सम्भवतया उनकी जायदाद के कुछ अंश का बचाव···यह ठीक है। अब मैं समझ पाता हूं कि वे सब दादी के बारे में इतने चिंतित क्यों हैं।"

"किसके बारे में?" मिस्टर ऐस्टली ने पूछा।

"वह मास्कोवासी बुढ़िया जो मरेगी नहीं और जिसके बारे में इस तार की आशा की जा रही है कि वह मर रही है।"

"हां, निश्चय ही, सबका ध्यान उसी पर लगा हुआ है। सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि वह उनके लिए क्या छोड़ जाती है। यदि जनरल को सम्पत्ति मिल जाती है तो वह विवाह कर लेगा; मिस पोलीना मुक्त हो जाएगी और द ग्रीय···"

"हां, और द ग्रीय?"

"और द ग्रीय को उसकी वह रकम मिल जाएगी जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहा है।"

"क्या, तुम्हारी राय में, वह केवल उसी की प्रतीक्षा कर रहा है?"

"इसके अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं जानता।" मिस्टर ऐस्टली आग्रहपूर्वक मौन रहे।

"पर मैं जानता हूं।" मैंने भयंकरता से कहा, "वह भी उत्तराधिकार की प्रतीक्षा में है, पोलीना के दहेज की। ज्योंही रकम उसके हाथ लगेगी, वह उसके गले से बंध जाएगी। नारियां ऐसी ही होती हैं। अत्यन्त अहंकारी भी निम्नतम दासी में परिवर्तित हो जाती है। पोलीना तीव्र प्रेम कर सकती है और कुछ नहीं। जब वह सोच में बैठी हो तब उसकी ओर देखिए; वह कुछ पूर्वनिर्णीत, अदृष्ट, भाग्य-कीलित मालूम होती है! वह जीवन की सब विभीषिकाओं के योग्य है और भावों के वह···वह···पर वह कौन है जो मुझे पुकार रहा है? कौन? मैंने किसी को रूसी में चिल्लाते सुना है—एलैक्ज़ी इवैनोविच! एक नारी-स्वर, सुनिए-सुनिए!"

इस समय हम होटल के निकट पहुंच रहे थे। काफे से हम बहुत पहले निकल आए थे और हमें उसका लगभग पता भी न चला था।

मिस्टर ऐस्टली ने कहा, "यह वह नारी है जो उस बड़ी आरामकुर्सी पर बैठी है जिसे नौकर अभी सीढ़ियों से ऊपर ले गए हैं। वे उसके पीछे ट्रंक ले जा रहे हैं। मालूम होता है कि गाड़ी अभी आई है।"

"पर वह मुझे क्यों बुला रही है। वह देखिए मेरी ओर हाथ हिला रही है।"

"मैं देखता हूं कि वह हाथ हिला रही है।" मिस्टर ऐस्टली बोले।

"ऐलैक्ज़ी इवैनोविच! एलैक्ज़ी इवैनोविच! हे भगवान, वह कैसा मूढ़ है!" होटल की सीढ़ियों पर से तेज पुकार आई।

हम लगभग दौड़कर दरवाज़े पर पहुंचे। मैं ऊपर सीढ़ियों पर झपट गया और···मेरे हाथ आश्चर्य से बगल में लटके रह गए तथा मेरे पैर, लगा कि फर्श में गड़ गए हैं।

नौ

होटल के दरवाज़े की चौड़ी सीढ़ियों के ऊपर, अपने ऐसे सम्मान्य अतिथि के स्वागत के लिए उत्सुक, जो अपने साथ अपने नौकर और इतने ट्रंक लाई हो और एक रोगी-कुर्सी में सीढ़ियों के ऊपर पहुंचाई गई हो, बड़े बैरे की उपस्थिति में, प्यादों, नौकरानियों और होटल के अनेक नम्र नौकरों से घिरी हुई बैठी थीं स्वयं–दादी। हां, वे स्वयं वही थीं। मास्को की भयंकर बूढ़ी महिला और धनी ज़मींदार ऐण्टोनिडा वैसी-लीवना टारासिविचेव, दादी, जिनके बारे में तार आए-गए हैं, जो मर रही थीं पर मरीं नहीं, और जो अब साक्षात स्वयं हमारे ऊपर बर्फ की भांति आ पड़ी हैं। वे पचहत्तर वर्ष की थीं। पांच वर्ष से पंगु थीं, एक कुर्सी में इधर-उधर ले जाई जाती थीं, फिर भी यहां आ पहुंचीं–सदा की भांति सजग, मुंहफट, आत्मसंतुष्ट, अपनी कुर्सी में सीधी बैठी, आज्ञात्मक स्वर में ज़ोर से चिल्लाती हुईं और प्रत्येक को डांटती-फटकारती हुईं–बिलकुल वैसी ही, जैसाकि मैंने उन्हें पहले दो बार देखने का सम्मान प्राप्त किया था। मैं आश्चर्य से जहां का तहां रह गया। उन्होंने मुझे अपनी बिज्जू जैसी आंखों से सौ कदम पर देख लिया, पहचाना और नाम लेकर पुकारा। मेरा नाम एक बार सुनने से ही उन्हें याद हो गया था। ये महिला हैं

जिनसे वे कब्र में होने और जायदाद छोड़ जाने की आस लगाए बैठे हैं। मन में उठा, ये हम सबसे अधिक जीनेवाली हैं। पर हे भगवान, हमारा मित्र जनरल अब क्या करेगा? ये नीचे से ऊपर तक सारे होटल को मथ डालेंगी।

"अरे, भले आदमी, तुम वहां आंखें फाड़े क्या खड़े हो!" दादी मेरी ओर चिल्लाईं, "क्या तुम मेरा स्वागत नहीं कर सकते? मेरी कुशल नहीं पूछ सकते? या तुम्हें घमंड हो गया है? ओह, शायद तुमने मुझे पहचाना नहीं? पोटापिच, सुनते हो?" वे अपने खानसामा की ओर घूमीं। बूढ़ा, सफेद बाल, सिर पर बालहीन गुलाबी धब्बा, ड्रेसकोट और सफेद टाई पहने हुए। "सुनते हो? यह मुझे नहीं पहचानता। ये मुझे दफना चुके हैं। इन्होंने तार पर तार यह जानने के लिए भेजे हैं कि मैं मर गई हूं या नहीं। मैं सब जानती हूं। देख लो, यह रही मैं, जीती-जागती।"

"आप क्या कह रही हैं! ऐण्टोनिडा वैसीलीवना; मैं आपका बुरा क्यों चाहूंगा?" मैंने अपने को संभालते हुए प्रसन्नता से कहा, "मुझे केवल आश्चर्य हुआ था। होता भी क्यों नहीं? आप अचानक···"

"इसमें आश्चर्य क्या हुआ? मैं गाड़ी में बैठी और आ गई। बड़े आराम से। क्या तुम टहलने गए थे?"

"हां, कैसीनो तक।"

"यहां अच्छा है। गर्म और शानदार वृक्ष।" दादी चारों ओर देख कर बोलीं, "मुझे पसन्द है। परिवार यहीं है? जनरल?"

"हां, इस समय वे निश्चय ही यहीं होंगे।"

"तो यहां सब काम समय पर होता है, नियमानुसार! लोग उनकी नकल करते हैं! सुना है गाड़ी भी है, इन रूसी रईसों के पास! और क्या प्रास्कोवया उनके साथ है?"

"हां, पोलीना एलैक्जैंड्रोवना भी यहीं है।"

"और वह फ्रांसीसिया? मैं स्वयं उनसे मिलूंगी।" एलैक्ज़ी इवैनोविच मुझे पहले वहीं ले चलो। हां, पोटापिच उस मूढ़ बैरे से कहो कि मुझे बढ़िया-सुविधापूर्ण कमरे दें, ऊंची मंज़िल पर नहीं, और मेरा सामान तुरन्त वहां पहुंचाओ। अरे, ये सब मुझे ले चलने को इतने उतावले क्यों हैं! यह तुम्हारे साथ कौन है?"

"ये मिस्टर ऐस्टली हैं।" मैंने बताया।

"क्या करते हैं?"

"एक यात्री हैं! मेरे भले मित्र। जनरल के भी परिचित हैं।"

"अंग्रेज़? अंग्रेज़ मुझे पसन्द हैं। हां, मुझे ऊपर ले चलो—सीधे उनके कमरे में। किधर हैं वे?"

वे दादी को ऊपर ले चले। मैं आगे था। हमारा जुलूस आकर्षक था। जो मिला उसी ने खड़े होकर देखा। हमारा होटल यहां सबसे बढ़िया, महंगा और रईसी माना जाता था। नीचे लोग बड़े बैरे से पूछ रहे थे। उसने बताया कि ये एक अत्यन्त सम्भ्रांत रूसी महिला हैं। उन्होंने वही कमरे लिए हैं, जिनमें पिछले सप्ताह ग्रांड ड्चेज़ ठहरी हुई थीं। दादी को ऊपर ले जाते समय जो सनसनी फैली उसका मुख्य कारण उनका शानदार व्यक्तित्व था। जब वे किसी अपरिचित से मिलती थीं तो उसे ध्यान से देखती थीं और उसके विषय में मुझसे उच्च स्वर में प्रश्न पूछती थीं। उनकी काया विशाल थी। यद्यपि वे कुर्सी से नहीं उठती थीं, पर यह स्पष्ट था कि वे बहुत लम्बी हैं। उनकी पीठ तख्ते के समान सीधी थी और कुर्सी से नहीं टिकती थी। उभारदार चेहरे से सज्जित उनका बड़ा सफेद सिर सीधा था और उनकी मुद्रा निश्चय ही गर्वीली और निर्भीक थी। स्पष्ट ही उनका व्यवहार बिलकुल स्वाभाविक था। पचहत्तर की होते हुए भी उनके चेहरे में ताज़गी थी, उसके दांत ठीक थे, वे काला रेशमी वस्त्र और सफेद टोपी पहने थीं।

"ये मुझे बहुत रोचक लगती हैं।" मेरे साथ चलते हुए मिस्टर ऐस्टली फुसफुसाए।

"ये तारों के बारे में जानती हैं," मैंने सोचा। "ये द ग्रीय के बारे में भी जानती हैं, पर क्या ये कुमारी ब्लांश के बारे में भी जानती हैं?" मैंने यह बात ऐस्टली से कही।

मैं पापी! जब आश्चर्य की तरंग निकल गई तो मैं इस वज्र से, जो जनरल पर घहरा रहा था, अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मैं आनन्दित था और प्रसन्नता से आगे चल रहा था।

जनरल के कमरे तीसरी छत पर थे। मैंने उसे दादी के आगमन की सूचना नहीं दी। द्वार को खटखटाए बिना ही अचानक खोल दिया और दादी विजय के साथ अन्दर पहुंचाई गई। वहां सब मानो योजनानुसार अध्ययनकक्ष में इकट्ठे थे। बारह बजे थे। लगता था कि किसी सैर की योजना बन रही थी। कुछ परिचित भी निमंत्रित थे। जनरल, पोलीना, बच्चों और उनकी आया के अतिरिक्त, कमरे में थे द ग्रीय और कुमारी ब्लांश—घुड़सवारी के कपड़े पहने हुए, ब्लांश की मां, नन्हा राजकुमार और एक अपरिचित विद्वान जर्मन यात्री।

दादी की कुर्सी कमरे के बीच जनरल से तीन कदम दूर रखी गई। जो सनसनी फैली उसे मैं भूल नहीं सकता। जब हम वहां पहुंचे तो जनरल कुछ कह रहा था और द ग्रीय उसकी भूलें सुधारता जा रहा था। मैं यहां यह कह दूं कि पिछले कुछ दिनों से कुमारी ब्लांश और द ग्रीय नन्हें राजकुमार की ओर विशेष ध्यान दे रहे थे। बेचारा जनरल! कमरे का वातावरण अत्यन्त प्रसन्न, सुखद, घनिष्ठतापूर्ण, यद्यपि शायद कुछ बनावटी था। दादी को देखते ही जनरल को काठ मार गया। मुंह की बात मुंह में रह गई। उसने आंखें फाड़कर दादी को निहारा। दादी ने भी मौन-स्थिर उसे देखा। उनकी दृष्टि में विजय की चुनौती और व्यंग्य था। गम्भीर स्तब्धता में वे लगभग दस सेकंड

एक-दूसरे को ताकते रहे। द ग्रीय पहले तो सन्न हो गया, पर तुरन्त ही एक गहरी चिन्ता उसके चेहरे पर उभर आई। ब्लांश ने भौंहें उठाईं, मुंह खोला और जंगलीपन से दादी को देखा। राजकुमार और विद्वान चकित बैठे रहे। पोलीना चिंतित हुई और अचानक रूमाल-सी सफेद पड़ गई। पर एक मिनट में रक्त चेहरे पर तेज़ी से दौड़ आया और उसके कपोल लाल हो गए। हां, यह सबके लिए वज्रपात था। मैं दोनों पक्षों को देखता रहा। मिस्टर ऐस्टली मेरे निकट शांत और नम्र खड़े थे।

"तो तुम्हें तार चाहिए था? लो, मैं स्वयं आ गई हूं!" दादी ने ज़ोर से हंसते हुए शांति भंग की, "तुमने इसकी कल्पना भी न की होगी!"

"ऐण्टोनिडा वैसीलीवना···चाची···पर हम कैसे···!" दुःखी जनरल बुदबुदाया।

"हम कैसे क्या? मैं गाड़ी में बैठी और आ गई। यह रेल किसलिए बनी है? तुम सब सोच रहे थे कि मैं दफनाई जा चुकी हूं और तुम्हारे लिए विशाल संपत्ति छोड़ गई हूं। तुमने तार पर तार भेजे हैं। उन पर कितनी रकम बरबाद की है। क्या यह फ्रांसीसी है? मार्क्विस द ग्रीय?"

"हां, श्रीमती!" द ग्रीय बोला, "विश्वास कीजिए, मैं आपको देखकर बहुत प्रसन्न हूं। आपका स्वास्थ्य···एक अचम्भा···आप यहां···कैसा सुन्दर आश्चर्य···!"

"आप कहते हैं, कैसा सुन्दर! मुझे आपमें इतना विश्वास नहीं है।" उन्होंने अपनी छोटी अंगुली उसकी ओर उठाई। "वह कौन है?" कुमारी ब्लांश की ओर संकेत करते हुए उन्होंने पूछा। घुड़सवारी की पोशाक में हाथ में चाबुक लिए हुए उस आकर्षक फ्रांसीसी युवती ने निश्चय ही उन्हें प्रभावित किया था। "क्या यह भी यहीं रहती है?"

"ये कुमारी ब्लांश द कौमिंग्स हैं और वे उनकी मां। इसी होटल में ठहरी हैं।" मैंने बताया।

"क्या पुत्री विवाहित है?" दादी ने तुरन्त पूछा।

"कुमारी द कौमिंग्स अविवाहित महिला है।" मैंने नीचे स्वर में यथासम्भव आदरपूर्ण उत्तर दिया।

"क्या वह ज़िंदादिल है?"

"मैं आपका प्रश्न नहीं समझा।"

"इसके साथ बातचीत करना उबा तो नहीं देता? क्या यह रूसी भाषा समझती है? द ग्रीय ने तो मास्को में सीखी थी थोड़ी-थोड़ी।" मैंने बताया कि कुमारी ब्लांश कभी रूस नहीं गईं।

"नमस्ते!" दादी ने अचानक कुमारी ब्लांश की ओर घूरकर कहा।

"नमस्ते, श्रीमती!" कुमारी ब्लांश ने सुन्दर औपचारिक नमन किया और नम्रता तथा सौम्यता के नीचे अपने सम्पूर्ण चेहरे और शरीर से ऐसे सम्बोधन के लिए अत्यन्त आश्चर्य प्रकट किया।

"ओ, इसने अपनी आंखें नीची कर ली हैं, हाव-भाव बना रही है, मैं जान गई यह कैसी है, क्या है; किसी प्रकार की अभिनेत्री ! मैं इसी होटल में नीचे ठहरी हुई हूं।" वे अचानक जनरल से बोलीं, "मैं तुम्हारी पड़ोसी हूंगी। तुम्हें अच्छा लगा या बुरा?"

"अरे, चाची, तुम विश्वास करो···मेरी प्रसन्नता का," जनरल ने उत्तर दिया। अब वह काफी स्वस्थ हो गया था और आत्मविश्वास के साथ बोल सकता था। उसका कुछ रोब भी पड़ता था। उसने अब अपनी इस क्षमता का उपयोग आरम्भ किया, "आपकी बीमारी का समाचार पाकर हम बहुत घबरा गए थे। हमें ऐसे निराशाजनक तार मिले···और अब अचानक···"

"बस रहने दो; झूठ मत बोलो।" दादी ने तुरन्त टोका।

"पर आप कैसे···" जनरल भी स्वर ऊंचा करके और झूठ बोलने की बात पर ध्यान न देते हुए जल्दी से बोला, "आप इतनी लम्बी यात्रा किस प्रकार कर सकीं? आप मानेंगी कि आपकी अवस्था में, आपके स्वास्थ्य की इस दशा में, ऐसी आशा नहीं की जा सकती थी कि···, इसलिए हमारा आश्चर्य बहुत स्वाभाविक है। पर मैं इतना आनन्दित हूं··· और हम सब (वह मोहक, आनन्दित भाव से मुसकाने लगा) भरसक प्रयत्न करेंगे कि यहां आपका समय अधिक-से-अधिक प्रसन्नता के साथ कटे।"

"बस, इतना ही काफी है। सदा की भांति तुम फिर व्यर्थ बकवास कर रहे हो। मैं अपना समय स्वयं काट सकती हूं। मैं तुम्हारी बात का बुरा नहीं मानती। मैं कैसे आ सकी?—इसमें आश्चर्य की क्या बात है? तुम इतने चकित क्यों हो? प्रासकोविया, तुम कैसी हो? यहां क्या करती हो?"

"दादी, आप कुशल से हैं?" पोलीना ने उनके निकट जाकर पूछा, "क्या आपकी यात्रा में बहुत समय लगा?"

"देखो, इसने ढंग की बात पूछी। दूसरे केवल आह-ओह ही करके रह गए। तो मैं बिस्तर पर पड़ी रही। डॉक्टर आते रहे। पर बिस्तर न छूटा। एक दिन मैंने डॉक्टरों का धता बताया और सेंट निकोलस से पादरी को बुलाया। उसकी दवा ली। तीसरे दिन मुझे दिन-भर पसीना आया और मैं चंगी हो गई। तब मेरे जर्मन मेरे चारों ओर घिर आए। उन्होंने चश्मे चढ़ाए और बोले, "यदि आप विदेश जाएं, स्रोत का पानी इस्तेमाल करें, तो आपकी बीमारी हवा हो जाएगी।" मैंने सोचा, क्यों न जाऊं? मूढ़ों ने आहें भरीं। बोले, 'आप कहां चलीं?' पर अब मैं यहां हूं। एक दिन तैयारी में लगा। अगले सप्ताह शुक्र को मैंने एक नौकरानी पोटापिच और प्यादे फ्यूदौर को साथ लिया और चल दी। फ्यूदौर को मैंने बर्लिन से लौटा दिया।

उसकी आवश्यकता नहीं थी। वास्तव में, मैं बिलकुल अकेली आ सकती थी। मैंने एक रिज़र्व डिब्बा लिया। सब स्टेशनों पर कुली थे और वे बीस कोपेक में आपको, जहां कहें वहां पहुंचा देते थे। हां, ये कमरे कैसे लिए हैं?" उन्होंने अपने चारों ओर देखा। बोलीं, "भले आदमी, तुम्हारे पास यह रकम कहां से आती है? तुम्हारा सब कुछ तो गिरवी है। अकेले इस फ्रांसीसी के ही तुम बहुत बड़े कर्ज़दार होगे! मैं सब जानती हूं।"

"चाची!" जनरल ने हड़बड़ाकर कहा, "चाची, मैं समझता हूं कि मैं जैसे चाहूं वैसे रहने को स्वतन्त्र हूं, और मेरा खर्च आमदनी से अधिक नहीं है···और हम यहां···"

"अधिक नहीं है? तुम कहते हो? तो तुम अपने बच्चों की रकम खा गए होगे—तुम उनके ट्रस्टी···!"

"इन शब्दों के बाद," जनरल क्रोध से बोला, "मैं वास्तव में नहीं जानता कि···"

"तुम सचमुच नहीं जानते! मुझे विश्वास है कि तुम यहां सदा रूलेट खेलते रहते हो। क्या तुमने रकम फूंक दी है?"

जनरल को यह इतना बुरा लगा कि भावना के उद्वेग में वह लगभग चीख पड़ा, "रूलेट और मैं? इस स्थिति में···मैं? चाची, सोचो तो सही, तुम क्या कह रही हो! तुम सचमुच बीमार हो।"

"तुम झूठ बोलते हो, झूठ! मैं दावा करती हूं कि तुम रूलेट से चिपके रहते हो। आज देखूंगी कि यह रूलेट है क्या बला। प्रासकोविया, बताओ, मुझे कहां जाना चाहिए और क्या देखना चाहिए और एलैक्ज़ी इवैनोविच, तुम मेरे साथ रहोगे, और तुम पोटापिच, उन स्थानों को नोट कर लो, जो हमें देखने हैं। हां, क्या है यहां देखने को?" उसने फिर पोलीना को सम्बोधित किया।

"निकट ही किले का खंडहर है और फिर श्लांगेनबर्ग है।"

"यह श्लांगेनबर्ग क्या है? वन है अथवा···?"

"वन नहीं, पर्वत है और उसका एक शिखर है।"

"शिखर किसे कहते हैं?"

"पर्वत के सबसे ऊंचे स्थान को। यह एक घेरा हुआ स्थान है। वहां से अनूठा दृश्य दिखाई देता है।"

"पर्वत के ऊपर मेरी कुर्सी कैसे जाएगी? क्या वे उसे ऊपर तक ले जाएंगे?"

"हमें कुली मिल जाएंगे।" मैंने कहा।

इसी समय आया, फिदौसिया, दादी से नमस्ते करने आई और जनरल के बच्चों को साथ लाई। "बस, चुम्बन की आवश्यकता नहीं है। मैं बच्चों का चूमना सहन नहीं कर सकती। उनकी नाक सदा गंदी रहती है। हां, फिदौसिया, तू यहां कैसी है?"

"यहां बहुत, बहुत अच्छा है, ऐण्टोनिडा वैसीलीवना!" फिदौसिया ने उत्तर दिया, "आप कैसी रहीं श्रीमती? यहां हम आपके बारे में बहुत चिंतित थे।"

"मैं जानती हूं कि तू भली है। क्या तुम्हारे यहां सदा मेहमान आते रहते हैं?" अब वह पोलीना की ओर घूमी, "वह चश्मा लगाए कमबख्त छोटा शैतान कौन है?"

"राजकुमार निल्स्की।" पोलीना फुसफुसाई।

"ओ, एक रूसी? मैंने सोचा था कि वह नहीं समझेगा। शायद उसने नहीं सुना। मिस्टर ऐस्टली से मैं पहले ही मिल चुकी हूं। और वह फिर यहां है!" दादी ने उन्हें देखकर अचानक कहा, "आप कैसे हैं?"

ऐस्टली ने उनके प्रति मौन सिर झुकाया।

"क्या तुम्हारे पास मेरे लिए कोई शुभ समाचार नहीं है? कुछ तो बोलो। पोलीना, तुम इसका अंग्रेजी में अनुवाद कर दो।"

पोलीना ने अनुवाद किया।

"हां, मैं बड़ी प्रसन्नता और खुशी से आपको देख रहा हूं और आपको स्वस्थ पाकर अत्यन्त आनन्दित हूं।" मिस्टर ऐस्टली ने गंभीरता से पर तत्क्षण उत्तर दिया। दादी को इसका अनुवाद सुनाया गया।

"अंग्रेज़ सदा बड़ा अच्छा उत्तर देते हैं। इसलिए मैं अंग्रेज़ों को सदा पसन्द करती हूं। उनमें और फ्रांसीसियों में कोई तुलना नहीं है। मुझसे मिलने आइएगा।" उसने फिर मिस्टर ऐस्टली को सम्बोधित करते हुए कहा, "मैं आपको विशेष कष्ट न दूंगी। उसके लिए इसका अनुवाद कर दो। उसे बता दो कि मैं यहां नीचे हूं।" उन्होंने नीचे की ओर संकेत करते हुए मिस्टर ऐस्टली से कहा।

मिस्टर ऐस्टली इस निमन्त्रण से प्रसन्न हुए।

दादी ने पोलीना को नीचे से ऊपर तक ध्यान से देखा। संतुष्ट हुईं।

"प्रास्कोविया, तू मुझे अच्छी लगती है," वे अचानक बोलीं, "तू अच्छी लड़की है, सबसे अच्छी। और जहां तक वसीयत का सम्बन्ध है···हे भगवान, वसीयत भी । तनिक घूम तो! यह बनावटी चुटिया तो नहीं है?"

"नहीं दादी, मेरी अपनी है।"

"सच? मुझे तो आजकल के बेहूदे फैशन अच्छे नहीं लगते। तू बड़ी सुन्दर लगती है। यदि मैं नवयुवक होती तो तुझ पर रीझ जाती। तू विवाह क्यों नहीं कर लेती? पर अब मुझे चलना चाहिए। अभी तक मैंने गाड़ी के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं देखा है। और, क्या तुम अब भी नाराज़ हो?" उसने जनरल की ओर घूमकर पूछा।

"चाची, तुम कैसी बातें करती हो!" जनरल प्रसन्नता से चिल्लाया, "मैं समझता हूं कि इस अवस्था में···"

"बच्चा-बूढ़ा एक समान।" द ग्रीय मुझसे फुसफुसाया।

"मैं यहां सब कुछ देखना चाहती हूं। क्या तुम मुझे एलैक्ज़ी इवेनोविच को दे दोगे?" दादी ने जनरल से कहा।

"जैसा आप चाहें। पर मैं स्वयं, पोलीना और द ग्रीय, हम सभी आपके साथ चलना प्रसन्नता की बात समझेंगे।"

द ग्रीय ने मोहिनी मुसकान के साथ फ्रांसीसी में कहा, "श्रीमती, यह मेरा बड़ा सौभाग्य होगा।"

"सौभाग्य? यह व्यर्थ की बात है, भले आदमी! मैं तुम्हें कोई रकम नहीं देने जा रही हूं। हां, अब मेरे कमरों को···। मैं उन्हें देखूं तो···और फिर हम इस सबका एक चक्कर लगाएंगे। चलो, मुझे उठाओ।"

दादी फिर उठाई गईं। हम सब उनकी कुर्सी के पीछे फिर इकट्ठे नीचे चले। जनरल ऐसे चल रहा था मानो उसके सिर पर बड़ी चोट पहुंची हो। द ग्रीय सोच में था। कुमारी ब्लांश पीछे रुकती मालूम हुई, फिर कुछ सोचकर साथ आ गईं। राजकुमार तुरन्त उनके साथ हो लिया और अध्ययनकक्ष में ब्लांश की मां तथा विद्वान जर्मन रह गए।

दस

गांधकीय स्रोत स्थानों पर और आमतौर से पूरे यूरोप में होटलवाले अपने अतिथियों को कमरे देते समय उनकी इच्छा और मांग पर कम, तथा उनके बारे में अपनी व्यक्तिगत धारणा पर अधिक ध्यान देते हैं; और, कहना होगा कि इसमें बहुत कम गलती करते हैं। पर पता नहीं क्यों, उन्होंने दादी को जो चार कमरे दिए, वे आवश्यकता से कहीं अधिक बढ़िया थे। वे शानदार सामान से सुसज्जित थे और उनके साथ स्नानगृह तथा नौकरों और नौकरानियों के कमरे लगे हुए थे। कोई बड़ी डचेज़ एक सप्ताह पहले उनमें ठहरी हुई थीं और यह बात कमरों का मूल्य बढ़ाने के लिए दादी को तुरन्त बता दी गई थी। दादी ने सब कमरों को ध्यानपूर्वक कठोरता से देखा। गंजे सिरवाला बूढ़ा-सा बड़ा बैरा आदरसहित उनके साथ रहा।

उन्होंने दादी को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और धनी महिला समझा। उन्होंने रजिस्टर में लिखा, 'श्रीमती जनरल, टारासेवीत्चेव की राजकुमारी,' यद्यपि दादी कभी भी राजकुमारी नहीं थीं। उनके इस सम्मान का कारण उनके नौकर, रेल का उनका स्पेशल डिब्बा और

बेकार सामान का वह ढेर था, जिसे वे अपने साथ लाई थीं। दादी की वाणी-बोली, उनकी चाल-ढाल और तेज़ी तथा निर्भीकता ने उनके इस आदर में वृद्धि की। कमरे देखते समय वे कभी-कभी अपनी कुर्सी रुकवा लेती थीं, और किसी भी वस्तु के बारे में बड़े बैरे से अप्रत्याशित प्रश्न कर बैठती थीं। वे उसके अधिकतर उत्तरों से संतुष्ट नहीं हुई थीं। वास्तव में, उनके प्रश्न कुछ टेढ़े होते थे। उदाहरण के लिए, वे अचानक एक तसवीर के सामने, जो एक प्रसिद्ध पौराणिक विषय का दुर्बल चित्रण था, रुकीं और पूछा, "यह किसका चित्र है?"

बड़े बैरे ने उत्तर दिया, "निस्संदेह किसी काउण्टेस का है।"

"तो तुम्हें नहीं मालूम! तुम यहीं रहते हो? यह यहां क्यों टंगा है? वह तिरछा क्यों देख रही है?"

वड़ा बैरा उत्तर नहीं दे सका। घबरा गया।

"मूर्ख!" दादी ने रूसी भाषा में कहा।

कुर्सी आगे बढ़ी। ड्रेस्डन की लघु मूर्ति के सामने फिर यही बात हुई। दादी ने उसे देर तक देखा। फिर, न जाने क्यों, उसे वहां से हटाने की आज्ञा दी। अंत में उन्होंने पूछा कि शयनकक्ष के गलीचों का मूल्य क्या है? वे कहां के बने हैं? बड़े बैरे ने पता लगाने का वायदा किया।

"कैसे गधे हैं!" दादी बड़बड़ाईं। उनका ध्यान पलंग की ओर गया। "कैसा सजावटी चंदोवा है! बिस्तर हटाओ।"

उन्होंने बिस्तर हटाया।

"सब कुछ हटा दो। तकिये भी और ये गद्दे भी।"

सब कुछ हटाया गया। दादी ने ध्यान से देखा, "खैरियत है कि यहां खटमल नहीं हैं। इन कपड़ों को हटा दो। मेरे कपड़े बिछाओ, मेरे तकिये लगाओ। यह सब बहुत दिखाऊ है। ऐसे कमरे मेरे जैसी बुढ़िया के योग्य नहीं हैं। यहां का अकेलापन मुझे खलेगा। ऐलैक्ज़ी इवैनोविच, बच्चों को पढ़ाने के बाद तुम अक्सर मुझसे मिलने आना।"

"मैंने कल से जनरल की नौकरी छोड़ दी है," मैंने बताया, "मैं अब होटल में बिलकुल स्वतन्त्र रहता हूं।"

"यह कैसे?"

"उस दिन यहां बर्लिन से एक ऊंचे पदवाला जर्मन, एक बैरन अपनी बैरोनेस के साथ आया। मैंने उसे कल जर्मन में संबोधित किया, पर बर्लिन जैसा स्वर नहीं रखा।"

"तो इससे क्या?"

"उसने इसे धृष्टता समझा। जनरल से शिकायत की और जनरल ने मुझे निकाल दिया।"

"क्या तुमने बैरन को गाली दी थी या कुछ···?" (यदि ऐसा...किया भी होता तो भी कोई बात नहीं थी।)

"जी नहीं, उलटे बैरन ने ही मुझे पीटने को बेंत उठाया था।"

"और तुम डरपोक, तुमने अपने अध्यापक के प्रति यह व्यवहार सहन कर लिया?" वे अचानक जनरल से बोलीं, "और उसे अपनी नौकरी से भी निकाल दिया? तुम सब मूर्ख हो।"

"उद्विग्न न हो चाची," जनरल ने कृपापूर्ण आत्मीयता से कहा, "मैं अपने काम स्वयं संभाल सकता हूं, और एलैक्ज़ी इवैनोविच ने तुम्हें बिलकुल सही बात नहीं बताई है।"

"और तुम उसे सहन कर रहे हो?" वे मेरी ओर घूमीं।

"मैं बैरन को द्वंद्वयुद्ध के लिए ललकारना चाहता था," मैंने यथासम्भव शांति और नम्रता से कहा, "पर जनरल ने इसका विरोध किया।"

"तुमने विरोध क्यों किया?" दादी फिर जनरल की ओर घूमीं, ("और भले आदमी, तुम अब जा सकते हो। जब बुलाऊं, तो आना।" उन्होंने बड़े बैरे से कहा, "यहां मुंह फाड़े खड़े रहने की आवश्यकता नहीं। मैं नूर्नबर्ग के ऐरे-गैरों को सहन नहीं कर सकती।")

उसने सिर झुकाया और बाहर चला गया। निःसन्देह, दादी के विशेषण उसकी समझ में नहीं आए थे।

"मैं कहता हूं, चाची, द्वंद्वयुद्ध की तो बात ही नहीं उठती।" जनरल बोला।

"क्यों नहीं उठती? पुरुष सब मुर्गे होते हैं। उन्हें लड़ना चाहिए। तुम मूर्ख हो। तुम नहीं जानते कि अपने देश के लिए कैसे अड़ना चाहिए। पोटापिच, देखो, यहां दो कुली सदा होने चाहिए। उन्हें रख लो। दो से अधिक नहीं। मुझे उनकी आवश्यकता केवल सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे ले जाने और सड़कों पर घुमाने के लिए होगी। उन्हें समझा दो। पैसे पहले दे दो, इससे वे अधिक आदर करेंगे; और तुम सदा मेरे साथ रहोगे, और तुम ऐलैक्ज़ी इवैनोविच, जब हम बाहर चलें तो उस बैरन को दिखाना, जिसमें मैं भी उस बैरन पर एक दृष्टि डाल सकूं। हां, तो रूलेट कहां है?"

मैंने बताया कि रूलेट की मेज़ें कैसीनो के एक कमरे में हैं।

प्रश्न आया, "क्या बहुत-सी हैं? क्या बहुत लोग खेलते हैं? क्या सारे दिन खेलते रहते हैं? यह खेला कैसे जाता है?" अन्त में मैंने कहा कि इसका वर्णन करना कुछ कठिन है। अच्छा हो कि आप स्वयं अपनी आंखों से उसे देखें।

"ठीक! तो मुझे तुरन्त वहां ले चलो। ऐलैक्जी इवैनोविच, तुम आगे चलो।"

"क्यों चाची, क्या यात्रा के बाद आप कुछ विश्राम नहीं करेंगी?" जनरल ने कुछ चिंता से पूछा। वे दादी के साथ कैसीनो जाने में कुछ खतरा और सचमुच कुछ अपमान अनुभव करते थे। हो सकता है कि वे वहां, सबके सामने, कोई बेहूदा बात कर बैठें। पर वे उनके साथ जाना भी चाहते थे।

"मैं विश्राम क्यों करूं? मैं थकी नहीं हूं, पिछले तीन दिन तो

बिलकुल शांत बैठी रही हूं। हां, इसके बाद हम चिकित्सा-जल के स्रोत को देखेंगे। कहां है वह? और फिर देखेंगे उसे, प्रासकोविया—क्या कहती हो उसे? शिखर न?"

"हां दादी, शिखर।"

"हां शिखर, यदि वह शिखर ही है तो। और यहां क्या है?"

"यहां बहुत-सी रोचक वस्तुएं हैं दादी।" पोलीना ने ज़ोर लगाकर कहा।

"क्या तुम उन्हें नहीं जानतीं? मार्फा, तू भी मेरे साथ चलेगी।" उन्होंने अपनी नौकरानी से कहा।

"पर उसकी आवश्यकता क्या है?" जनरल ने टांग अड़ाई, "और वास्तव में, मुझे सन्देह है कि पोटापिच को कैसीनो में घुसने भी दिया जाएगा या नहीं।"

"क्या मैं उसे इसलिए छोड़ जाऊंगी कि वह नौकरानी है! वह भी मनुष्य है। वह भी चीज़ों पर एक दृष्टि डालना चाहती है। वह मेरे अतिरिक्त और किसके साथ जाएगी? अकेली तो वह सड़क पर झांकेगी भी नहीं!"

"पर चाची···!"

"क्यों? तो तुम्हें मेरे साथ चलते लज्जा आती है? तो घर बैठो। कौन बुलाता है तुम्हें? बड़े जनरल बने हैं। मैं स्वयं एक जनरल की विधवा हूं। और तुम सब मेरे साथ क्यों आ रहे हो? मैं सब अकेली देख सकती हूं, एलैक्ज़ी इवैनोविच के साथ।"

"परन्तु···" द ग्रीय ने आग्रह किया। और बड़ी नम्र शब्दावली में उनके साथ चलने के आनन्द को अभिव्यक्त किया। हम सब चल पड़े।

"बच्चा, बूढ़ा एक समान," द ग्रीय जनरल से फुसफुसाया, "अकेले पता नहीं वह क्या कर बैठे?" मैंने अधिक नहीं सुना; पर

निश्चय ही उसके मन में कुछ था और शायद उसकी आशा हरी हो गई थी।

कैसीनो आध मील पर था। मार्ग अखरोटों के मैदान में से स्क्वायर के पार सीधा जाता था। जनरल कुछ आश्वस्त था, इसलिए कि हमारा जुलूस यद्यपि कुछ अद्भुत, पर शिष्ट और दर्शनीय था। जनरल कैसीनो से डरता था। एक अपाहिज व्यक्ति का कैसीनो जाना कोई आश्चर्य की बात न थी। पर एक अपाहिज वृद्धा! पोलीना और कुमारी ब्लांश कुर्सी के इधर-उधर चल रही थीं। कुमारी ब्लांश हंसती थीं और कभी-कभी दादी से नम्र मज़ाक भी करती थीं, ऐसा कि वे अन्त में दादी के मन भा गई। इसके विपरीत, पोलीना दादी के असंख्य प्रश्नों का उत्तर दे रही थी—वह अभी कौन गुज़रा? वह औरत कौन थी? क्या यह नगर बड़ा है? क्या यह बाग बड़ा है? ये वृक्ष क्या कहलाते हैं? उस पहाड़ी का नाम क्या है? क्या यहां गरुड़ उड़ते हैं? वह भद्दी-सी छत क्या है?

मिस्टर ऐस्टली, जो मेरी बगल में चल रहे थे, धीरे से बोले, "आज की सुबह बहुत रोचक होनेवाली है।" पोटापिच और मार्फा कुर्सी के निकट पीछे थे। दादी अक्सर घूमकर उन्हें बताती जाती थीं। द ग्रीय बड़े निश्चय से जनरल का धैर्य बंधा रहा था; स्पष्ट ही सलाह दे रहा था। पर दादी कह चुकी थीं कि मैं तुम्हें रकम नहीं दूंगी। द ग्रीय ने इस पर विश्वास नहीं किया। पर जनरल अपनी चाची को जानता था। मैंने देखा कि द ग्रीय और कुमारी ब्लांश की आंखें अक्सर मिल रही हैं। हमारी कैसीनो-यात्रा शानदार रही। वहां पहुंचकर दादी ने पहली आज्ञा यह दी कि मुझे सब कमरों में घुमाया जाए। कुछ उन्हें पसंद आए, कुछ नहीं। उन्होंने सभी के बारे में प्रश्न पूछे। अंत में हम रूलेट के कमरे में आए। बंद द्वारों पर पहरेदारों की भांति खड़े नौकरों ने आदर से किवाड़ खोल दिए।

दादी रूलेट की मेज़ पर पहुंची तो लोग उनसे बहुत प्रभावित हुए। रूलेट की मेज़ पर, और कमरे के दूसरे सिरे पर जहां त्रांत ए करांत की मेज़ थी, वहां कई पंक्तियों में डेढ़-दो सौ खिलाड़ियों का जमघट था। जिन्हें घुस-घुसाकर मेज़ तक पहुंचने का अवसर मिल गया था, वे सदा की भांति वहीं डटे हुए थे। जब तक वे हारें नहीं, वहां से टलने का नाम लेनेवाले न थे। साधारण दर्शकों को मेज़ के पास खड़े होकर जगह नहीं घेरने दी जाती थी। यद्यपि मेज़ के चारों ओर कुर्सियां थीं, पर खिलाड़ी उन पर नहीं बैठते थे, इसलिए कि वे खड़े-खड़े रूलेट के अधिक निकट हो सकते थे और अपने दांव अधिक सरलता से लगा सकते थे। दूसरी और तीसरी पंक्तियां अपनी बारी की आशा देखतीं, ठहरती हुई पहली पंक्ति को दबाती रहती थीं। पर कभी-कभी कोई हाथ अधीरता के साथ पहली पंक्ति के पीछे से रूलेट की मेज़ पर दांव रखने के लिए आगे बढ़ जाता था। तीसरी पंक्ति के लोग भी घुस-पैठकर अपना दांव लगाने में सफल हो जाते थे। प्रत्येक दस-पांच मिनट में कमरे के एक या दूसरे सिरे पर दांव के बारे में कुछ झगड़ा हो जाता था। पर कैसीनो की पुलिस अच्छी खासी थी।

भीड़-भड़क्का रोकना असम्भव था। वास्तव में कैसीनो के मालिक उसे पसंद करते थे, इसलिए कि वह लाभदायक थी। मेज़ के चारों ओर बैठे हुए आठ क्रोपिअर दावों पर कड़ी दृष्टि और उनका हिसाब भी रखते थे। जब झगड़ा होता था, तो वे उसका फैसला करते थे। यदि मामला बहुत ही बढ़ जाता था, तो वे पुलिस को बुला लेते थे और झगड़ा पलक मारते ही रफा-दफा हो जाता था। खिलाड़ियों के बीच में इधर-उधर सादा वस्त्रों में गुप्त पुलिस अधिकारी खड़े थे। उनकी दृष्टि विशेषतया चोरों और व्यवसायी पाकेटमारों पर रहती थी। बात यह थी कि यहां ये लोग यदि दूसरे की रकम लेकर खेलना आरम्भ कर देते थे, तो अपराध छिप जाता था। और यह भी, वे दूसरे की

जीती रकम से सबके सामने अपनी जेबें भर सकते थे, झगड़ा होने पर ठग चिल्लाकर आग्रह करता था कि दांव उसका ही था। यदि चाल चतुराई से खेली जाती थी और गवाह मिल सकते थे, तो चोर रकम हड़पने में सफल हो जाता था। पर यह बात केवल छोटी रकमों के साथ होती थी। यदि रकम बड़ी होती है, तो क्रोपियर अथवा कोई दूसरा खिलाड़ी सदा उस पर दृष्टि रखता है। यदि चोर पकड़ा जाता है, तो उसे अपमान के साथ तुरंत बाहर निकाल दिया जाता है, दादी ने यह सब आश्चर्य के साथ दूर से देखा। एक चोर के बाहर निकाले जाने पर वे प्रसन्न हुईं। त्रांत ए करांत की अपेक्षा उन्हें रूलेट अधिक भाया। उन्होंने इसे अधिक निकट से देखने की इच्छा प्रकट की।

पता नहीं कैसे हुआ कि नौकरों और कुछ लोगों ने तुरंत भीड़ को हटाकर मेज़ के मुख्य क्रोपियर के निकट स्थान बना दिया और दादी की कुर्सी को वहां सरका दिया। दर्शक दादी को देखने के लिए उमड़ पड़े। सत्तर वर्ष की अपाहिज बुढ़िया और रूलेट! मैं भी भिंचभिंचाकर दादी की बगल में खड़ा हो गया।

दादी ने खिलाड़ियों को देखा। नीचे स्वर में मुझसे प्रश्न पूछे। वे एक युवक को देखकर विशेष प्रसन्न हुईं। वह हज़ारों के दांव लगा रहा था; चालीस हज़ार फ्रैंक जीत चुका था। उसके सामने नोटों और सोने के सिक्कों का ढेर लगा हुआ था। वह था पीला, चमकदार आंखें, कांपते हाथ; वह बिना गिने मुट्ठी भर-भर के दांव लगा रहा था और फिर भी रकम पर रकम जीतता जा रहा था। खुशामदी नौकरों ने बख्शिश की आशा से उसके लिए सुविधाएं बनाईं। एक पोलेंडवासी उसकी बगल में डट गया था और उसे सलाह देने लगा था। पर खिलाड़ी अंधाधुंध दांव लगा रहा था और जीत रहा था। स्पष्ट ही उसे पता न था कि वह क्या कर रहा है।

दादी कई मिनट उसे देखती रहीं।

"उससे कहो," अचानक उत्तेजित होकर मुझसे बोलीं, "उससे कहो कि रकम समेटे और यहां से चला जाए। वह अभी इस सबको हार जाएगा। इस सबको···।" उत्तेजना से उनकी सांस रुक-सी गई। "पोटापिच कहां है? उसे भेजो···उससे कहो।" उसने मुझे ठेला। "बस करो, बस करो।" वे स्वयं चिल्लाकर युवक से कह उठीं।

मैंने झुककर दृढ़ता से कहा कि यहां ज़ोर से बोलना मना है। इससे गिनने में बाधा पड़ती है और हम बाहर निकाले जा सकते हैं।

"कितने दुःख की बात है! वह हार गया। उसकी अपनी ही करतूत···! मैं अब उसे नहीं देख सकती। कैसा मूर्ख है!" और वे जल्दी से दूसरी ओर घूम गईं।

बाईं ओर मेज़ के दूसरी तरफ खिलाड़ियों में एक आकर्षक युवती थी। उसके साथ एक बौना रहता था। वह जुए की मेज़ पर नित्य एक बजे आती थी और दो बजे चली जाती थी। आते ही उसके लिए कुर्सी रख दी गई। उसने जेब से रकम निकाली। चुपचाप समझदारी से कागज़ के टुकड़ों पर अवसरों का हिसाब लगाया और बड़े दांव लगाए। वह नित्य एक, दो या अधिक-से-अधिक तीन हज़ार फ्रैंक जीत ले जाती थी; और तुरन्त चली जाती थी। दादी बहुत देर तक उसे जांचती रहीं।

"हां, यह नहीं हारेगी! यह किस वर्ग की है? क्या तुम उसे जानते हो?"

"यह फ्रांसीसी होगी, एक विशेष वर्ग की; आप जानती हैं।" मैं फुसफुसाया।

"हां, चिड़िया अपनी उड़ान से पहचानी जाती है। देखती हूं, उसका चंगुल पैना है। अच्छा, मुझे बताओ कि प्रत्येक चक्कर का क्या अर्थ है और दांव कैसे लगाया जाता है?"

मैंने दादी को बताई—वे विभिन्न बातें जिन पर दांव लगाए जा सकते हैं। लाल और काला, सम और विषम, मांक और पास; और

अन्त में संख्या-योजनाओं की बारीकियां समझाईं। दादी ने सुना, प्रश्न पूछे और समझने लगीं। वहां प्रत्येक बात का उदाहरण तैयार था। इसलिए उन्होंने शीघ्र ही काफी बातें सीख लीं।

"पर यह शून्य क्या है? देखो, उस घुंघराले बालवाले क्रोपिअर ने अभी शून्य दिखाया है। उसने मेज़ पर से सब कुछ क्यों समेट लिया, इसका अर्थ क्या है?"

"शून्य का अर्थ है, दादी, कि बैंक ने सब कुछ जीत लिया। यदि यह नन्हीं गेंद शून्य पर पड़ती है तो मेज़ पर का सब कुछ बैंक का हो जाता है। यह सही है कि आप अपनी रकम इस प्रकार लगा सकतीं कि वह बची रहे, पर उस पर बैंक कुछ नहीं देता।"

"क्या तुम्हारा अर्थ यह है कि मुझे कुछ नहीं मिलेगा?"

"नहीं दादी। यदि इससे पहले आपने शून्य पर लगाया होता तो आपको अपने दांव का पैंतीस गुना मिलता।"

"क्या कहा, पैंतीस गुना? तो लोग इस पर क्यों नहीं लगाते? मूर्ख कहीं के!"

"छत्तीस अवसर इसके विपरीत हैं दादी।"

"क्या बकवास है? पोटापिच! ठहरो, कुछ रकम मेरे पास है।" उन्होंने अपनी जेब से बटुआ निकाला और उसमें से एक फ्रीदरिश दौर मुझे देकर कहा, "इसे तुरन्त शून्य पर लगाओ।"

"दादी, शून्य अभी आया है," मैंने कहा, "अब यह काफी समय तक नहीं आएगा। आप हार जाएंगी। कम-से-कम थोड़ी देर ठहरिए।"

"बोलो मत, लगाओ।"

"आपकी इच्छा। पर हो सकता है कि वह शाम तक न आए, आप हज़ारों हार जाएं। ऐसा हो चुका है।"

"फिर बकवास। क्या भेड़िये के भय से लोग वन में नहीं जाते? क्या मैं हार गई? लो, फिर लगाओ।"

दूसरा फ्रीदरिश दौर जाता रहा। उन्होंने तीसरा लगाया। दादी को चैन से बैठना कठिन हो गया। वे ज्वराक्रांत आंखों से घूमते पहिये के अरों पर नन्ही गेंद को नाचते देखती रहीं। वे तीसरा भी हार गईं। दादी ने आपा खो दिया। उन्हें शांत बैठना कठिन हो गया। और जब क्रोपिअर शून्य के बजाय छत्तीस चिल्लाया तो उन्होंने अपनी मुट्ठी मेज़ पर दे मारी।

"तो," दादी ने क्रोध से कहा, "क्या वह कमबख्त नन्हा शून्य जल्दी नहीं आएगा? कब तक नहीं आएगा? मैं यहीं बैठी हूं! यह सब उस घुंघराले बालोंवाले क्रोपिअर की करतूत है। वह उसे नहीं आने देता। एलैक्ज़ी इवैनोविच, तुरन्त दो सिक्के लगाओ। जितना तुम लगा रहे हो, उतने से यदि शून्य आ भी गया तो भी तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।"

"दादी!"

"लगाओ, लगाओ, रकम तुम्हारी नहीं है।"

मैंने दो फ्रीदरिश दौर लगाए। गेंद बहुत देर तक पहिये पर उछली और अन्त में अरों पर नाचने लगी। दादी उत्तेजना से सुन्न पड़ गईं। उन्होंने मेरी अंगुलियां दबाईं और तब तुरन्त—

क्रोपिअर ने घोषित किया, "शून्य!"

"देखा तुमने?" दादी प्रसन्नता से मेरी ओर घूमीं, "मैंने कहा था न? स्वयं भगवान ने मुझे दो सिक्के लगाने का विचार दिया था। अब मुझे क्या मिलेगा? ये दे क्यों नहीं रहे हैं? पोटापिच और मार्फा कहां है? हमारे सब लोग कहां हैं? पोटापिच! पोटापिच!"

"दादी, ठहरो," मैं फुसफुसाया, "पोटापिच द्वार पर है। वे उसे भीतर नहीं आने देते। लो यह रकम संभालो। नीले नोटों की यह गड्डी, पचास फ्रीदरिश दौर की और बीस फ्रीदरिश दौर के सिक्के।"

"आओ खेलो, आओ खेलो।" क्रोपिअर ने लोगों को दांव लगाने को आमंत्रित किया।

"हे भगवान, हमें देर हो गई। वे घुमाने जा रहे हैं। लगाओ, जल्दी लगाओ," दादी ने हड़बड़ाकर कहा, "जल्दी करो।"

"किस पर लगाऊं दादी?"

"शून्य पर, शून्य पर, अधिक-से-अधिक लगाओ। हमारे पास कितना है, सत्तर फ्रीदरिश दौर। बचाने की आवश्यकता नहीं है। बीस फ्रीदरिश दौर लगाओ तुरन्त।"

"दादी, सोचिए तो, आप क्या कर रही हैं? कभी-कभी यह दो सौ बार में एक बार भी नहीं आता। आप अपनी सब सम्पत्ति लगाती चली जाएं तब भी।"

"फिर बकवास! लगाओ! कैसी चलती है तुम्हारी जीभ! मैं जानती हूं कि मैं क्या कर रही हूं।" दादी उत्तेजना से कांप रही थीं।

"दादी, हम शून्य पर एक बार में बारह रूबल से अधिक नहीं लगा सकते। वे मैंने लगा दिए हैं।"

"क्यों नहीं लगा सकते? तुम झूठ तो नहीं बोल रहे हो? मिस्टर, मिस्टर!" उन्होंने क्रोपिअर के टोहका लगाया, जो उनके पास बाईं ओर बैठा था, "शून्य पर कितने? बारह? बारह?"

मैंने प्रश्न का तुरन्त फ्रांसीसी में अनुवाद किया।

"हां श्रीमती!" क्रोपिअर ने नम्रता से समर्थन किया, "इसलिए कि किसी अकेले दांव की जीत नियमानुसार चार हज़ार फ्लोरिन से अधिक नहीं होनी चाहिए।"

"तो क्या किया जाए? अच्छा बारह लगाओ।"

"खेल हो गया।" क्रोपिअर चिल्लाया। पहिया घूमा। तीस आया और वे हार गईं।

"फिर लगाओ! फिर लगाओ!" दादी चीखीं। मैंने विरोध नहीं किया। कंधे उचकाए और बारह फ्रीदरिश दौर लगा दिए। पहिया देर तक घूमता रहा। दादी पहिये को देखती हुई कांप रही थीं। उनका

चेहरा जीत के दृढ़ विश्वास से, शून्य आने की अदम्य आशा से, दमक रहा था।

गेंद पिंजड़े में कूद गई।

"शून्य।" क्रोपिअर चिल्लाया।

"क्या!" दादी मेरी ओर गहन विजय से घूमीं।

मैं स्वयं जुआरी था। मैंने अनुभव किया था कि मेरे हाथ-पैर कांप रहे हैं और मेरा सिर धमक रहा है। निश्चय ही, यह एक विरला अवसर था कि कुछ दर्जन चक्करों में शून्य तीन बार आ गया। पर यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं थी। मैंने स्वयं दो दिन पहले शून्य को लगातार तीन बार आते हुए देखा था। और एक दूसरे जुआरी ने बताया कि पिछले दिन शून्य चौबीस घंटों में केवल एक बार आया था।

दादी की जीती रकम अधिक होने के कारण विशेष आदर के साथ उन्हें गिन दी गई। उन्हें चार सौ बीस फ्रीदरिश दौर—बीस फ्रीदरिश दौर सोने में और चार हज़ार फ्लोरिन बैंक नोटों में दिए गए।

इस बार दादी न बड़बड़ाईं, न कांपीं। कहा जा सकता है कि वे भीतर कांप रही थीं। उनका ध्यान किसी लक्ष्य पर केन्द्रित था।

"ऐलैक्ज़ी इवैनोविच," वे बोलीं, "उसने कहा है कि हम एक बार में चार हज़ार फ्लोरिन जीत सकते हैं। है न? तो लो, यह सब चार हज़ार लाल पर लगा दो।" दादी ने आज्ञा दी।

आपत्ति करना बेकार था। पहिया घूम रहा था।

"लाल!" क्रोपिअर ने घोषणा की।

वे फिर चार हज़ार फ्लोरिन जीत गईं।

"चार हज़ार मुझे दो और चार को फिर लाल पर लगाओ।" दादी ने कहा। मैंने लगाए।

"लाल!" क्रोपिअर ने फिर घोषित किया।

"सब बारह हज़ार! मुझे दो। सोने को इस बटुए में डालो। नोटों को अलग रखो। बस, इतना काफी है। अब घर!

"मेरी कुर्सी घुमाओ।"

ग्यारह

कुर्सी घुमा दी गई। दादी दमक रही थीं। हमारा दल तुरन्त उनके चारों ओर घिर आया और बधाई देने लगा। उनकी जीत ने सब पापों को ढक लिया था। अब जनरल को सबके सामने उनके साथ चलते संकोच न होता था। एक दयालु परिचित मुसकान से उसने दादी को बधाई दी। चारों ओर दादी की चर्चा हो रही थी। उनकी ओर संकेत किए जा रहे थे। बहुत-से लोग उन्हें अच्छी तरह से देखने के लिए निकट से गुज़रे। मिस्टर ऐस्टली दो अंग्रेज़ परिचितों से उनकी बात कर रहे थे। कुछ राजसी महिलाएं दादी की ओर राजसी आश्चर्य से देख रही थीं। द ग्रीय ने बधाई और मुसकान की वर्षा की। "क्या शानदार जीत है!" वह बोला।

कुमारी ब्लांश सदेच्छा पाने के लिए मुसकाईं।

"हां, मैं गई और बस, बारह हज़ार फ्लोरिन जीत लाई। और सिक्के मिलाकर लगभग तेरह हज़ार हो जाते हैं। रूसी सिक्कों में कितना हुआ यह? छः हज़ार?"

"सात हज़ार से अधिक और विनिमय की वर्तमान दशा में आठ हज़ार तक।" मैंने बताया।

"आठ हज़ार! तब तो यह है कुछ। मूर्खो, तुम यहां रहते हो और कुछ नहीं करते। पोटापिच, मार्फा, तुमने देखा?"

"क्या बात है मालकिन? यह आपने कैसे किया? आठ हज़ार!" मार्फा अंग लहराती हुई चिल्लाई।

"पहले पांच सुनहरी सिक्के तेरे हैं।"

पोटापिच और मार्फा उनका हाथ चूमने को झपटे।

"और प्रत्येक कुली को भी एक-एक फ्रीदरिश दौर दो एलैक्ज़ी इवैनोविच! और वह नौकर क्यों झुक रहा है? और वह दूसरा? मुझे बधाई दे रहे हैं। उन्हें भी एक-एक दो।"

"दयामयी, दानी, रूसी रानी···!" एक मूंछधारी विनयी मुसकान वाला व्यक्ति झीना कोट और चटक बास्कट पहने मांगता हुआ आया। उसने अपना टोप हाथ में लेकर हिलाया।

"इसे भी एक···नहीं दो फ्रीदरिश दौर दे दो। बस, चले चलो। नहीं तो तांता बंध जाएगा। उठाओ मुझे। प्रासकोविया!" वे पोलीना की ओर घूमीं, "मैं कल तेरे लिए एक ड्रेस खरीद दूंगी और कुमारी···क्या नाम है उसका? हां, कुमारी ब्लांश के लिए भी।"

"धन्यवाद श्रीमती!" कुमारी ब्लांश ने कृतज्ञ नमन किया और साथ ही व्यंग्यमय मुसकान से द ग्रीय और जनरल की ओर देखा। जनरल कुछ संकुचित हुआ। हम एवेन्यू में पहुंचे तो जनरल स्वस्थ हुआ।

"फिदौसिया"—दादी ने जनरल की आया के बारे में सोचते हुए कहा, "मुझे उसे भी एक ड्रेस देनी चाहिए। अरे, एलैक्ज़ी इवैनोविच, इस गरीब आदमी को कुछ दे दो।"

चिथड़े पहने एक झुकी पीठवाला मनुष्य निकट से गुज़रा और उसने हमारी ओर देखा।

"कदाचित् वह गरीब नहीं है। बदमाश है दादी!"

"उसे एक गुल्डेन दे दो, दे दो।"

मैंने मनुष्य के पास गया। उसे गुल्डेन दिया। उसने आश्चर्य से मुझे देखा, पर गुल्डेन ले लिया। उसमें से शराब की बू आ रही थी।

"और एलैक्ज़ी इवानोविच, तुमने अपने भाग्य की परीक्षा की है?"

"नहीं दादी।"

"पर तुम्हारी आंखें जल रही थीं, मैंने देखा था।"

"मैं प्रयत्न करूंगा दादी; निश्चय ही, बाद में।"

"सीधे शून्य पर लगाना और देखना! तुम्हारे पास कितना है?"

"केवल बीस फ्रीदरिश दौर दादी!"

"बस! मैं तुम्हें पचास फ्रीदरिश दौर दूंगी, कहो तो उधार। लो, यह लो। पर तुम आशा न लगाओ। मैं तुम्हें कुछ न दूंगी।" उसने अचानक जनरल की ओर घूमकर कहा।

जनरल को बुरा लगा, पर वह बोला नहीं। द ग्रीय की भौंहें चढ़ीं, दांत भिंचे। बोला, "भगवान की मार, बुढ़िया बड़ी कठोर है।"

"एक और भिखारी!" दादी चिल्लाईं, "इसे भी एक गुल्डेन दे दो अलैक्ज़ी इवैनोविच।"

इस बार यह एक लकड़ी की टांगवाला श्वेतकेशी बूढ़ा पुराना सिपाही जान पड़ता था। वह एक लम्बा कोट पहने था और एक लम्बा बेंत लिए था। मैंने गुल्डेन उसकी ओर बढ़ाया, तो वह पीछे हट गया और क्रोध से मेरी ओर देखने लगा।

"यह शैतान है!" वह चिल्लाया और एक दर्जन गालियां दीं।

"मूर्ख," दादी ने हाथ हिलाकर कहा, "चले चलो। मुझे भूख लगी है। खाना खाएंगे, थोड़ा आराम करेंगे और फिर वापस यहीं।"

"आप फिर खेलना चाहती हैं दादी?"

"तो तुम चाहते हो कि मैं बैठी-बैठी तुम मनहूसों को ताकती रहूं?"

"श्रीमती!" द ग्रीय उनके निकट गया, "इस खेल में जीतने के अवसर बहुत कम और हारने के बहुत अधिक होते हैं। आप बहुत-सा हार भी सकती हैं। यह एक भयानक खेल है।"

"आप सब कुछ हार सकती हैं।" कुमारी ब्लांश चहकीं।

"इससे तुम्हें क्या? मैं अपनी रकम हारूंगी तुम्हारी नहीं। और वह मिस्टर ऐस्टली कहां है?" उन्होंने मुझसे पूछा।

"वे कैसीनों में ठहर गए हैं दादी।"

"मुझे दुःख है। वह बहुत भला आदमी है।"

होटल पहुंची तो सीढ़ियों पर बड़ा बैरा मिला। उससे अपनी जीत की डींग हांकी। उन्होंने फिदौसिया को बुलाकर उसे तीन फ्रीदरिश दौर दिए। भोजन आया। फिदौसिया और मार्फा उन पर मंडराती रहीं।

"मैं आपको देख रही थी मालकिन," मार्फा कूकी, "और भगवान से आपके लिए प्रार्थना कर रही थी–हे भगवान, इनकी सहायता कर। और उसने सहायता की। मैं तब कांप रही थी मालकिन, और अब भी कांप रही हूं।"

"एलैक्ज़ी इवैनोविच, चार बजे तैयार रहना। अच्छा, अब जाओ। देखो, मेरे लिए डॉक्टर को बुलाना न भूलना। मुझे यहां का औषधीय जल पीना है।"

"मैं चला तो नशे में था। मैंने कल्पना करने का प्रयत्न किया कि अब क्या होगा। घटनाएं क्या पलटा लेंगी। स्पष्ट था कि जनरल तार के स्थान पर दादी के आगमन के झटके से अभी संभल नहीं सका है। उसकी योजनाएं बिखर गई हैं–सभी की। और रूलेट पर दादी के इस करतब ने तो उन्हें बिलकुल बौखला दिया है।

यद्यपि दादी दो बार कह चुकी थीं कि वे जनरल को कौड़ी नहीं देंगी, पर कौन जानता है? द ग्रीय, जो जनरल के मामलों में फंसा हुआ था, निराश नहीं हुआ था और कुमारी ब्लांश ने भी आशा नहीं छोड़ी

थी। वे दादी पर अपनी सब कलाओं का उपयोग करेंगी, उस गर्वीली और अबूझ पोलीना से विपरीत, जिसे किसी की कृपा प्राप्त करने की कला ज्ञात नहीं है। दादी एक बालक की भांति आनन्दित थीं। इतनी आनन्दित कि वे उस समय तक खेल सकती थीं, जब तक कि बिलकुल बरबाद न हो जाएं, सब कुछ न हार जाएं। मैंने सोचा कि दादी ने जो एक-एक फ्रीदरिश दौर दांव पर लगाया है वह जनरल के हृदय में नया घाव बना होगा। और उसने द ग्रीय को पागल तथा कुमारी ब्लांश को कुपित कर दिया होगा। एक दूसरा तथ्य, अपनी जीत के उफान और प्रसन्नता में जब दादी सभी को सिक्के बांट रही थीं, तब भी उन्होंने जनरल से कहा था कि मैं तुझे कुछ देनेवाली नहीं हूं। इसका अर्थ? क्या यह विचार उनके मन में जम गया है और उनका निश्चय बन गया है? खतरा है, निश्चय ही पूरा खतरा।"

मैंने सोचा—मैं इस नाटक के पात्रों को चालित करनेवाले प्रबलतम उद्देश्यों को समझ पा रहा हूं, पर इसके सम्पूर्ण रहस्यों को नहीं जानता। पोलीना मेरे प्रति कभी पूर्णतया नहीं खुली थी। यद्यपि उसने कभी-कभी कुछ भावनाएं मुझ पर प्रकट की थीं, पर मैंने सदा यह देखा था कि इसके बाद वह या तो अपने कहे का मज़ाक उड़ा देती थी अथवा उस पर एक दूसरा रंग चढ़ाकर बात को छिपाने का प्रयत्न करती थी। उसने बहुत छिपाया था, पर अब इस रहस्यमयता का अंत होनेवाला था। बस, एक झटका और···और सब कुछ सामने आ जाएगा। मेरी मनःस्थिति विचित्र थी। मैं विदेश में था, न नौकरी, न जीविका का कोई साधन, न कोई आशा, न सम्भावना और जेब में केवल बीस फ्रीदरिश दौर! पर मुझे इसकी चिन्ता न थी। यदि मुझे पोलीना की चिन्ता न होती, तो मैंने अपने को आगामी महान दुर्घटना के व्यंग्य पर छोड़ दिया होता और खुलकर हंसा होता। पर यहां पोलीना के भाग्य का निर्णय हो रहा था। पर खेद यह है कि यह केवल

उसका भाग्य ही नहीं था जो मुझे दुखित कर रहा था। मैं उसके भेद जानना चाहता था। मैं चाहता था कि वह मेरे पास आए और कहे 'मैं तुम्हें प्यार करती हूं।' और यदि यह व्यर्थ का पागलपन था तो···बस, तो कोई चिन्ता की बात नहीं है। क्या मैं जानता था कि मैं क्या चाहता हूं? मैं विक्षिप्त-सा था। मैं केवल यही चाहता था कि उसके निकट रहूं, उसके आभा-मंडल में रहूं, सदा, सम्पूर्ण जीवन-भर। मैं अधिक नहीं जानता था; और क्या मैं उसे छोड़ सकता था?

तीसरी मंज़िल पर से गुज़रते समय मुझे लगा कि किसी ने मेरे कोहनी मारी है और बीस कदम दूर मैंने देखी पोलीना, मानो मेरी प्रतीक्षा में खड़ी हुई। मुझे देखते ही उसने संकेत से बुलाया।

"पोलीना एलैक्ज़ैंड्रोवना···"

"चुप!" उसने कहा।

"सोचो तो," मैं फुसफुसाया, "मुझे अभी लगा था कि किसी ने अभी मेरे कोहनी मारी है और घूमकर देखा तो···तुम! ऐसा लगा, मानो कि तुममें से एक प्रकार की बिजली !"

"इस पत्र को लो," उसने चिन्तित स्वर में भौंहें चढ़ाकर मेरी बात न सुनते हुए कहा, "और तुरन्त स्वयं मिस्टर ऐस्टली के हाथ में दो। जल्दी करो। मैं विनती करती हूं। उत्तर की आवश्यकता नहीं है। वह···" उसने वाक्य पूरा नहीं किया।

"मिस्टर ऐस्टली!" मैंने आश्चर्य से दोहराया।

"पर पोलीना किवाड़ों के पीछे अन्तर्धान हो चुकी थी।"

"ओह, तो इनमें चिट्ठी-पत्री चल रही है!" मैंने सोचा। मिस्टर ऐस्टली को मैंने होटल में, कैसीनो में खोजा। पर जब मैं असफल और दुःखी लौट रहा था, तो वे अकस्मात् कुछ अंग्रेज़ नर-नारियों के साथ एक घोड़े पर दिखाई पड़ गए। मैंने संकेत किया, वे रुके और पत्र ले लिया। पर उनके पास मेरी ओर देखने का भी समय नहीं था। मुझे लगा कि उन्होंने जानबूझकर जाने में जल्दी की।

क्या यह ईर्ष्या थी? जो हो, मेरी दशा बहुत बुरी थी। मैं यह भी नहीं जानना चाहता था कि ये लोग आपस में किस बारे में लिख रहे हैं। हां तो, वह उस पर विश्वास करती है। वह उसका मित्र है, मित्र! मैंने सोचा, और यह स्पष्ट है। (पर उन्हें मित्र बनने का समय कब मिला?) तो क्या यह प्रेम है? निश्चय ही नहीं। सामान्य बुद्धि फुसफुसाई। पर ऐसे मामलों में सामान्य बुद्धि विशेष उपयोगी नहीं होती। जो हो, इसका पता लगाना है। बातें दुःखदायी रीति से जटिल होती जा रही हैं।

होटल पहुंचने से पहले ही मुझे समाचार मिला कि जनरल ने मुझे बुलाया है। कमरे में मैंने जनरल और द ग्रीय के साथ कुमारी ब्लांश को बिलकुल अकेली पाया। मुझे लगता है कि उसकी मां औपचारिक है और अपनी इस तथाकथित पुत्री के मामलों के बारे में विशेष नहीं जानती।

कमरे में किसी बारे में घुट-घुटकर बातें हो रही थीं। वह पहली बार वास्तव में भीतर से बंद था। मैंने ऊंचे स्वर सुने, द ग्रीय का धृष्ट और द्वेषीला, ब्लांश का पतला और कुपित और जनरल का दयापूर्ण; स्पष्ट ही किसी बारे में अपना बचाव करते हुए। मेरे पहुंचते ही उन्होंने अपने को संयत किया। द ग्रीय ने बालों पर हाथ फेरा और क्रुद्ध चेहरे पर बलात् उस औपचारिक, भद्दी, फ्रांसीसी मुसकान को ले आया, जिससे मुझे घृणा है। जनरल ने यांत्रिक रीति से रोबीला बनने का यत्न किया। केवल कुमारी ब्लांश का चेहरा वैसा ही लाल बना रहा। वे केवल चुप हो गईं। उनकी दृष्टि मेरी ओर लग गई। मैं यहां कह दूं कि वे सदा मुझे नगण्य समझती थीं। मेरी ओर देखती भी न थीं।

"एलैक्ज़ी इवैनोविच," जनरल कोमल स्वर में बोला, "मैं यह कहना चाहूंगा कि तुम्हारा व्यवहार···मेरे और मेरे परिवार के प्रति विचित्र रहा है···।"

द ग्रीय ने चिढ़ और घृणा से कहा, "प्रिय महाशय, यह आपसे कहना चाहते हैं, आपको चेतावनी देना चाहते हैं, विनती करना चाहते हैं कि आप इन्हें बरबाद न करें···हां बरबाद।"

"पर कैसे?" मैंने टोका।

"तुम इस बूढ़ी नारी के गाइड बनने जा रहे हो। तुमने देखा है कि वह किस प्रकार खेलती है। यदि वह हारने लगेगी तो हठ के कारण, क्रोध के कारण वहां से नहीं हटेगी। अपना सब कुछ दांव पर लगा देगी। सब कुछ गंवा देगी और तब "

"तब तुम पूर्ण परिवार को बरबाद कर दोगे," जनरल बोला, "मैं और मेरा परिवार उसके उत्तराधिकारी हैं। मेरी आर्थिक अवस्था तुम जानते हो। हे भगवान, यदि वह अपनी सब सम्पत्ति हार जाती है तो मेरा और मेरे बच्चों का क्या होगा? एलैक्ज़ी इवैनोविच, मेरी रक्षा करो, रक्षा करो।"

"पर, जनरल, मैं यह कैसे कर सकता हूं?"

"उसे मना कर दो। उसे छोड़ दो।"

"मैं छोड़ दूंगा तो कोई दूसरा आ जाएगा।" मैंने कहा।

"हां, तुम ठीक कहते हो," द ग्रीय बोला, "नहीं, नहीं। उसे छोड़ो मत, उसे हतोत्साह करो, दूर ले जाओ, किसी प्रकार उसका ध्यान बंटाओ।"

"पर मैं यह कैसे कर सकता हूं? महाशय द ग्रीय, यदि आप ही यह करें तो अच्छा हो।" मैंने यथासम्भव सरलता से कहा। मैंने देखा कि कुमारी ब्लांश और द ग्रीय की आंखें मिली हैं। और द ग्रीय के चेहरे पर एक विचित्र-सी झलक आ गई।

"बात यह है कि वह अब मुझे स्वीकार न करेगी।" द ग्रीय हाथ हिलाकर चिल्लाया, "हां, बाद में···" द ग्रीय ने फिर अर्थपूर्ण दृष्टि से कुमारी ब्लांश को निहारा।

"मेरे प्रिय एलैक्ज़ी महाशय, तुम बहुत भले हो।" कुमारी ब्लांश अत्यंत मोहिनी मुसकान के साथ मेरी ओर बढ़ीं, मेरे दोनों हाथों को पकड़ा और प्रेम से दबाया, "कमबख्त!"

वह शैतानी चेहरा जानता था कि क्षण-भर में कैसे बदला जा सकता है। उस समय उनका चेहरा इतना विनीत, मीठा और बच्चों के समान हो गया था और उस पर वह शैतानी-भरी मुसकान। अंत में उन्होंने दूसरों से छिपाकर मेरी ओर आंख भी मारी। वे मुझे पूर्णतया जीतना चाहती थीं। वे सफल हुईं, पर अत्यन्त भद्दे ढंग से। और तब जनरल उछल खड़ा हुआ, "एलैक्ज़ी इवैनोविच, तुम मुझे मेरे शब्दों के लिए क्षमा करो। मैं विनती करता हूं, प्रार्थना करता हूं—रूसी रीति से नमन करता हूं। मैं और कुमारी द कौमिंग्स।" उसने अपनी आखों से कुमारी ब्लांश की ओर संकेत किया। वह बहुत दयापूर्ण था।

इसी समय द्वार पर आदरमय खटखट हुई। वह खोला गया। गलियारे का नौकर और पोटापिच! दादी ने मुझे बुला भेजा था।

"पर अभी तो साढ़े तीन बजे हैं?" मैं बोला।

"वे सो नहीं सकी हैं। उठ बैठी हैं और अब द्वार के सामने हैं।"

मैंने दादी को सीढ़ियों पर पाया। वे अधीर थीं। चार बजे तक न ठहर सकीं। "आओ।" वे चिल्लाईं। और फिर हम रूलेट को चल पड़े।

बारह

दादी अधीर और चिड़चिड़ी थीं। स्पष्ट ही रूलेट का प्रभाव उन पर गहरा था। उनका ध्यान उसी पर लगा था। उन्होंने मार्ग में मुझसे पहले की भांति प्रश्न नहीं पूछे। एक शानदार गाड़ी को देखकर वे उसके बारे में कुछ पूछते-पूछते रह गईं; और मैंने जो उत्तर दिया वह, लगता है कि उन्होंने नहीं सुना। उनका मनोयोग, अकस्मात् और अधीर अंग-संचालन से निरन्तर खंडित हो रहा था। जब मैंने कसीनो की ओर जाते हुए बैरन और बैरोनेस की ओर संकेत किया तो उन्होंने लापरवाही से उनकी ओर देखा और उदासीनता से कहा, "ओ!" और फिर पोटापिच तथा मार्फा से बोलीं, "तुम हमारे पीछे क्यों लगे हो? लौट जाओ।" और जब वे लौट गए, तो मुझसे कहा, "हम और तुम ही काफी हैं।"

कैसीनो में लोग दादी की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने शीघ्र ही उनके लिए क्रोपिअर के निकट स्थान बना दिया। मुझे लगता है कि ये क्रोपिअर, जो सदा अत्यन्त शिष्ट रहते हैं और ऐसे कर्मचारी मालूम होते हैं मानो कि उनका बैंक की हार-जीत से कोई संबंध ही न हो, वास्तव में बैंक की हार से अचिंतित नहीं रहते, उन्हें हिदायत होती

है कि खिलाड़ियों को आकर्षित करें और बैंक को अधिकाधिक लाभ कराएं। इसके लिए उन्हें निश्चय ही इनाम और बोनस दिया जाता है। जो हो, वे दादी को एक शिकार समझते थे।

और तभी, जिसकी कल्पना थी, वही हुआ। दादी तुरन्त शून्य पर पड़ीं, और तत्काल मुझे बारह फ्रीदरिश दौर लगाने की आज्ञा दी। उन्होंने एक, दो, तीन बार लगाया, पर शून्य नहीं आया।

"लगाओ! लगाओ!" दादी ने टोहका लगाया, मैंने आज्ञा का पालन किया।

"हम कितनी बार लगा चुके हैं?" अंत में उन्होंने दांत पीसते हुए पूछा।

"बारह बार, दादी, एक सौ चवालीस फ्रीदरिश दौर! मैं कहता हूं, दादी, सम्भवतया आज शाम तक भी "

"चुप रहो।" दादी ने टोका, "शून्य पर लगाओ और तुरन्त एक हज़ार गुल्डेन लाल पर। यह नोट लो।"

लाल जीता और शून्य फिर नहीं आया। एक हज़ार गुल्डेन प्राप्त हुए। "देखा तुमने?" दादी फुसफुसाईं, "हमने अपनी हार लगभग बराबर कर ली है। फिर शून्य पर लगाओ। हम दस बार और लगाएंगे और फिर बन्द कर देंगे।" पर पांचवीं बार ही दादी पूर्णतया ऊब गईं। "इस कमबख्त शून्य का नाश हो। लो, सब चार हज़ार गुल्डेन लाल पर लगाओ।" उन्होंने आज्ञा दी।

"दादी, यह बहुत है। यदि लाल न आया तो?" मैंने विनती की। दादी ने मुझे इतनी ज़ोर से टोहका मारा कि मैं उसे प्रहार कह सकता हूं। विवश, मैंने सुबह जीते हुए सब चार हज़ार गुल्डेन लाल पर लगाए। पहिया घूमा। दादी शान से गर्वित सीधी बैठी रहीं; जीत के विषय में उन्हें तनिक भी सन्देह नहीं था।

"शून्य।" क्रोपिअर ने घोषित किया।

पहले यह दादी की समझ में नहीं आया। पर जब उन्होंने यह देखा कि क्रोपिअर ने उनके चार हज़ार गुल्डेनसहित मेज़ पर का सब कुछ समेट लिया है, और यह जाना कि जो शून्य अब तक नहीं आया था और जिस पर वे लगभग दो सौ फ्रीदरिश दौर व्यर्थ लगा चुकी थीं, वह अब, जब दादी उसे गाली दे रही थीं—मानो उसे चिढ़ाने के लिए आ गया है, तो वे कराहीं और सब लोगों के सामने अपने हाथ फेंके। चारों ओर लोग सचमुच हंस पड़े।

"हे भगवान, कमबख्त अब आया!" दादी विलपीं, "यह सब तुम्हारी करतूत है, तुम्हारी।" वे क्रोध से धक्का देती हुई मुझ पर टूटीं, "तुमने ही मुझसे कहा था।"

"दादी, मैंने समझ की बात कही थी। अवसर का उत्तरदायी मैं कैसे हो सकता हूं!"

"उत्तरदायी का बच्चा!" वे कुपित हो बोलीं, "मुंह काला कर।"

"नमस्कार दादी!" मैं जाने को मुड़ा।

"एलैक्ज़ी इवैनोविच, ठहरो। कहां चल दिए? क्या हुआ? अरे वह क्रुद्ध हो गया। बेहूदा, आओ, यहां आओ, क्रुद्ध मत होओ। ठहरो मूर्ख तो मैं हूं। बताओ, मुझे अब क्या करना चाहिए?"

"दादी, मैं कुछ नहीं बोलूंगा। बाद में आप मुझे दोष देंगी। आप खेलिए। मुझे बताइए, मैं दांव रख दूंगा।"

"तो लो, लाल पर चार हज़ार गुल्डेन और लगाओ। यह कापी लो। जल्दी करो। इसमें बीस हज़ार रूबल हैं।"

"दादी," मैं बड़बड़ाया, "इतने बड़े दांव…!"

"निश्चय ही मैं जीतूंगी, लगाओ।"

हमने लगाया और हार गए।

"लगाओ, लगाओ, पूरे आठ…"

"आप नहीं लगा सकतीं दादी, चार हज़ार से अधिक।"

"तो चार हज़ार लगाओ।"

इस बार हम जीते। दादी बहुत प्रसन्न हुईं, "देखा तुमने? चार हज़ार फिर लगाओ।"

हमने लगाया और हारे। इसके बाद बराबर हारे।

"दादी," मैंने बताया, "सब बारह हज़ार गए।"

"मैं देख रही हूं।" यदि कहा जा सके तो उन्होंने क्रोध की शांति से उत्तर दिया, "मैं देख रही हूं मेरे भले मित्र।" वह लापरवाही में स्थिर दृष्टि से बड़बड़ाईं, "दो-चार हज़ार गुल्डेन और लगाओ।"

"दादी, रकम नहीं है, कुछ रूसी पांच प्रतिशत हैं, कुछ हुंडियां हैं। रकम नहीं है।"

"और बटुए में?"

"कुछ खेरीज़ है दादी।"

"यहां सिक्के बदलनेवाले तो होंगे? मुझे बताया गया था कि यहां हम अपने नोट बदल सकते हैं।" दादी ने दृढ़ता से कहा।

"हां, जितने चाहें। पर, इसमें आपको जो हानि होगी, उससे एक यहूदी भी कांप उठेगा।"

"चुप रहो। मैं सब जीत लूंगी। मुझे ले चलो। उन मूर्खों को बुलाओ।"

मैंने कुर्सी घुमाई। कुली आए और हम कैसीनो से बाहर निकले।

"जल्दी करो, जल्दी," दादी ने आज्ञा दी, "किधर हैं वे? क्या बहुत दूर?"

"दो कदम पर, दादी।" जब हम स्क्वायर से एवेन्यू में घूमे, तो हमें अपना दल मिल गया—जनरल, द ग्रीय, कुमारी ब्लांश और उनकी मां। पोलीना उनके साथ नहीं थी और न मिस्टर ऐस्टली। "हमें मत रोको।" दादी चिल्लाईं, "तुम क्या चाहते हो? अभी मेरे पास समय नहीं है।"

मैं पीछे चल रहा था। द ग्रीय मेरे पास दौड़ा आया।

"हमने सुबह जो जीता था वह हार गए हैं, उसके साथ बारह हज़ार गुल्डेन और। अब हम कुछ पांच प्रतिशत बदलवाने जा रहे हैं।" मैं जल्दी से फुसफुसाया।

द ग्रीय ने पैर पटके और जनरल से कहने दौड़ा। हम दादा को आगे बढ़ाते गए। "ठहरो, ठहरो।" जनरल पागल-सा बड़बड़ाया।

"ठहराने, का प्रयत्न करो।" मैं फुसफुसाया।

"चाची," जनरल ने निकट जाते हुए कहा, "हम अभी···हम अभी···" उसकी वाणी कांपी और रुक गई, "देहात में घूमने के लिए एक घोड़ा किराये पर···अत्यन्त···दृश्य···शिखर···। हम आपको लेने आ रहे थे।"

"भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा शिखर।" दादी ने चिड़चिड़ाकर हाथ हिलाया।

"वहां वृक्ष हैं।···हम चाय पिएंगे।" जनरल कहता गया।

"हम वहां दूध पिएंगे।" बिलकुल निराश द ग्रीय ने भयानक क्रोध से कहा।

"बस, रहने दो। अपना दूध तुम्हीं पिओ, मेरे पेट में दर्द करता है। और तुम मुझे तंग क्यों करते हो?" दादी चिल्लाईं, "मैं कहती हूं, मेरे पास बर्बाद करने को समय नहीं है।"

मैंने कहा, "दादी, यह रहा, यह।"

हम बैंक पहुंच चुके थे। मैं नोट बदलवाने अन्दर गया। दादी द्वार पर रहीं। द ग्रीय, जनरल और कुमारी ब्लांश अलग खड़े रहे—किंकर्तव्यविमूढ़। दादी ने उनकी ओर क्रोध से देखा और वे कैसीनो की ओर चले गए।

बैंकवालों ने मुझे नोटों के बदले इतना कम रकम देनी चाही थी कि मैंने स्वीकार नहीं की और मैं अनुमति के लिए दादी के पास आया।

"ओह, लुटेरे," दादी हाथ फेंककर चिल्लाईं, "कोई चिंता नहीं, बदलवा लो।" उन्होंने दृढ़ता से कहा, "अच्छा, ठहरो, ज़रा बैंकवाले को मेरे पास बुला लाओ।"

"आपका अर्थ है किसी क्लर्क को?"

"हां, किसी क्लर्क को ही सही। लुटेरे कहीं के!"

क्लर्क को अब यह मालूम हुआ कि एक अपाहिज वृद्धा, जो भीतर आने में असमर्थ है, उसे बाहर बुला रही है, तो उसने आना स्वीकार किया। दादी क्रोध से उसे बहुत देर तक बुरा-भला कहती रहीं और रूसी, फ्रांसीसी तथा जर्मन भाषाओं की खिचड़ी में उससे भाव-ताव करती रहीं। मैं अनुवाद से उन्हें सहायता देता रहा। गम्भीर क्लर्क ने हमारी बात ध्यान से सुनी और सिर हिलाया। उसने दादी की ओर जिस दृष्टि से देखा, उसे आदरपूर्ण नहीं कहा जा सकता। अंत में वह मुसकराने लगा।

"अच्छा तो जाओ, एलैक्ज़ी इवैनोविच, बदलवा लो। समय नष्ट न करो। नहीं तो हम दूसरी जगह चले चलेंगे।"

"क्लर्क कहता है, दूसरे बैंक और भी कम देंगे।"

मुझे ठीक याद नहीं कि रकम कितनी थी। पर बैंक की कटौती बहुत थी। मुझे लगभग बारह हजार फ्लोरिन नोटों और सिक्कों में मिले। मैंने हिसाब लिया और दादी के पास लाया। "बस, बस, गिनने का काम नहीं है," वे हाथ हिलाकर बोलीं, "जल्दी करो, जल्दी करो।"

"मैं कभी उस कमबख्त शून्य पर नहीं लगाऊंगी।" वे कैसीनो की ओर चलती हुई बोलीं। मैंने उन्हें यह समझाने का भरसक प्रयत्न किया कि वे छोटी रकमें दांव पर लगाएं; बड़े दांव भाग्य पलटने पर लगाए जा सकते हैं। वे इतनी अधीर थीं कि पहले यह बात स्वीकार कर लेने पर भी, जब खेल आरम्भ हुआ, रुक न सकीं। ज्योंही वे दस या बीस फ्रीदरिश दौर का दांव जीततीं, मेरे टोहका लगातीं, "देखा

तुमने, हम जीते हैं। यदि दस के स्थान पर चार हज़ार लगाए होते तो चार हज़ार जीतते। इतने से क्या लाभ! यह तुम्हारी करतूत है, तुम्हारी।"

उनका यह खेल मुझे पसन्द न था। मुझे बुरा लग रहा था, इसलिए मैंने चुप रहने और कोई सलाह न देने का निश्चय किया।

अचानक द ग्रीय वहां आ पहुंचा। मैंने ब्लांश को एक ओर राजकुमार से बातें करते देखा। जनरल, स्पष्ट ही, कृपापात्र नहीं था। यद्यपि वह उन्हें आकर्षित करने के अनेक प्रयत्न कर रहा था, पर वे उनकी ओर ध्यान भी नहीं दे रही थीं। बेचारा! वह कभी लाल होता था, तो कभी पीला पड़ जाता था, कांपता था और दादी का खेल भी नहीं देख पाता था। जब ब्लांश और राजकुमार वहां से चले तो जनरल उनके पीछे झपटा।

"श्रीमती, श्रीमती!" द ग्रीय मधुर वाणी से उनके कान के निकट फुसफसाया, "श्रीमती, ऐसे काम नहीं बनता···नहीं, नहीं, यह असम्भव है।" उसने टूटी-फूटी रूसी में कहा।

"तो फिर कैसे? आओ मुझे बताओ।" दादी उसकी ओर घूमीं। द ग्रीय ने फ्रांसीसी में जल्दी-जल्दी कुछ ऐसा कहा कि उसे अवसर के लिए ठहरना चाहिए और कुछ समझाने लगा। दादी के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। वह अनुवाद के लिए बार-बार मेरी ओर घूमने लगा। मेज़ पर अंगुलियां मारने लगा और अन्त में जब वह पेंसिल निकालकर एक कागज़ पर कुछ हिसाब लगाने ही वाला था तो दादी का धैर्य छूट गया।

"बस, हट जाओ। तुम व्यर्थ बकबक करते हो, 'श्रीमती! श्रीमती!' स्वयं इसी की समझ में कुछ नहीं आता। हटो यहां से।"

"श्रीमती!" द ग्रीय फुसफुसाया और फिर समझाने लगा।

"अच्छा तो एक बार जैसे यह कहे, वैसे लगाओ।" दादी मुझसे बोलीं, "शायद उसका कुछ नतीजा निकले।"

द ग्रीय यही चाहता था कि दादी दांव पर बड़ी रकमें न लगाएं। उसने सुझाया और मैंने एक-एक फ्रीदरिश दौर पहले बारह की विषम संख्या पर और पांच-पांच फ्रीदरिश दौर क्रमशः बारह से अठारह और अठारह से चौबीस पर, सब मिलाकर सोलह फ्रीदरिश दौर लगाए। पहिया घूमा।

"शून्य!" क्रोपिअर चिल्लाया! हम सब हार गए।

"तुम मूर्ख!" दादी ने द ग्रीय से कहा, "बदमाश, फ्रांसीसी ऐसी सलाह देता है। चले जाओ यहां से। आता-जाता कुछ नहीं, बेकार गड़बड़ी करता है।"

द ग्रीय ने बहुत ही बुरा माना। कंधे उचकाए, दादी की ओर घृणा से देखा और चला गया। वह सकुचा गया था। उसने आवश्यकता से अधिक जल्दी की थी।

अपने सब प्रयत्नों के बावजूद हम आध घंटे में सब कुछ हार गए।

"घर!" दादी ने कहा।

जब तक हम ऐवेन्यू में नहीं पहुंचे, वे चुपचाप रहीं। इसके बाद तीव्र उद्गार उनके मुंह से निकलने लगे—

"कितनी महान मूर्ख है! तू बुढ़िया, मूर्ख, हां, हां, तू!"

ज्योंही वे अपने कमरे में पहुंचीं—

"चाय!" दादी चिल्लाईं, "और तुरन्त सामान बांधो। हम चल रहे हैं।"

"श्रीमती कहां जाना चाहती हैं?" मार्फा ने पूछा।

"तुझसे मतलब! अपना काम कर। पोटापिच, सब कुछ बांधो, सब सामान। हम मास्को लौट रहे हैं। मैंने पन्द्रह हज़ार रूबल, हां, फेंक दिए हैं।"

"पन्द्रह हज़ार? श्रीमती, हे भगवान!" पोटापिच अपने हाथ

फेंककर चिल्लाया। शायद वह उन्हें प्रसन्न करना चाहता था।

"चल-चल, मूर्ख! चुप रह। सामान बांध। हां, बिल, जल्दी करो जल्दी।"

"अगली गाड़ी तो साढ़े नौ बजे जाती है।" मैंने शोर-शराबा रोकने की दृष्टि से कहा।

"और इस समय क्या···?"

"साढ़े सात।"

"क्या मुसीबत है! पर इससे क्या? इलैक्ज़ी इवैनोविच, मेरे पास एक कौड़ी नहीं है। ये दो नोट हैं। जाओ, इन्हें भुना लाओ। नहीं तो मेरे पास यात्रा में कुछ न रहेगा।"

मैं चल पड़ा। आध घंटे बाद जब लौटा तो देखा कि पूरा दल दादी के पास है। उनके मास्को लौटने की बात सुनकर वे उसके हारने से भी अधिक घबरा गए हैं। लौट जाने से, ठीक है, जायदाद बची रहेगी, पर यहां जनरल का क्या होगा? द ग्रीय को कौन चुकाएगा? कुमारी ब्लांश निश्चय ही दादी के मरने तक नहीं ठहरी रहेंगी। वे अब राजकुमार या किसी दूसरे के साथ चली जाएंगी। वे सब दादी को सांत्वना दे रहे थे, समझ रहे थे। पोलीना वहां नहीं थी। दादी उनके ऊपर झल्ला रही थीं—

"शैतानो, मेरा पीछा छोड़ो। इस सबसे तुम्हारा क्या मतलब? यह बकरे की दाढ़ी मेरे पास क्यों आती है?" उन्होंने द ग्रीय की ओर संकेत करके कहा, "और तुम मेरी सुन्दर चिड़िया, तुम क्या चाहती हो?"

कुमारी ब्लांश की आंखें लाल हुईं, पर वे अचानक खिलखिला पड़ीं और कमरे से बाहर चली गईं। जाते समय जनरल से बोली, "यह सौ बरस जिएगी!"

"तो तुम मेरी मौत की आस लगाए हुए हो?" दादी जनरल पर

चीखीं, "निकल जाओ! एलैक्ज़ी इवैनोविच, इन्हें बाहर निकाल दो। मैंने अपनी रकम गंवाई है तुम्हारी नहीं, समझे?"

जनरल ने कंधे उचकाए, सिर झुकाया और बाहर चला गया। द ग्रीय पीछे-पीछे।

"प्रासकोवया को बुलाओ।" दादी ने मार्फा से कहा।

पांच मिनट बाद मार्फा पोलीना के साथ लौटी। पोलीना बच्चों के साथ दिन-भर अपने कमरे में बैठी रही थी, मैं समझता हूं कि जान-बूझकर। उसका चेहरा गंभीर, शोकाकुल और चिंतित था।

"प्रासकोवया," दादी ने कहा, "क्या यह सच है जैसाकि मुझे अभी अकस्मात् मालूम हुआ है कि तेरा वह मूर्ख सौतेला पिता उस बेहूदा फ्रांसीसी औरत से विवाह करना चाहता है? क्या है वह? अभिनेत्री या उससे भी गई-बीती कुछ? बोल!"

"मैं इस विषय में निश्चित कुछ नहीं जानती। पर स्वयं कुमारी ब्लांश के शब्दों से, जो कुछ छिपाना आवश्यक नहीं समझतीं, मैं इस निष्कर्ष पर···"

"बस, काफी है।" दादी तेज़ी से बोलीं, "मैं सदा से जानती थी कि वह ऐसी बात कर सकता है। मैं सदा से उसे एक अत्यन्त मूर्ख और दुर्बल मस्तिष्क का व्यक्ति समझती हूं। वह कर्नल पद से रिटायर होने के बाद जनरल बनाया गया है और अपने को तीसमारखां समझता है। मेरी भली लड़की, मैं जानती हूं कि तुमने किस प्रकार मास्को तार पर तार यह जानने के लिए भेजे हैं कि तुम्हारी बुढ़िया दादी क्या शीघ्र ही दफनाई जानेवाली है। ये सब मेरी रकम के पीछे हैं। रकम के अभाव में वह चुड़ैल, क्या है उसका नाम? द कौमिंग्स जनरल को, विशेषतया उसके बनावटी दांतों के कारण, अपना प्यादा भी न बनाएगी। कहते हैं, उसके पास अपनी बड़ी रकम है जिसे वह ब्याज पर चलाती है। मैं तुझे दोष नहीं देती, प्रासकोवया! जो होना

था हो गया। मैं जानती हूं कि तेरा स्वभाव बर्र-सा है, तेरे डंक से पीड़ा हो सकती है। पर मुझे तेरी दशा पर दया आती है इसलिए कि तेरी मां, कटेरिना, मुझे अच्छी लगती थी। तो तू यहां की झंझट को छोड़ और मेरे साथ चल। तू जानती है कि तुझे और कहीं ठौर नहीं है और इनके साथ अब तेरा रहना उचित नहीं है।···ठहर, अभी ठहर," दादी चिल्लाईं। पोलीना ने बोलने को मुंह खोला ही था। "मैंने बात पूरी नहीं की है कि मास्को में मेरा एक महल है। उसकी एक मंज़िल तू अपने लिए ले सकती है। और यदि मेरा स्वभाव तेरे मन न भाए तो तू सप्ताहों मुझसे मिलने न आना। अब बोल।"

"मैं एक बात पूछना चाहती हूं। क्या आप सचमुच तुरन्त जा रही हैं?"

"मेरी भली लडकी, क्या मैं यह मज़ाक कर रही हूं! हां मैं जा रही हूं, अभी। आज मैंने तेरे कमबख्त रूलेट पर पन्द्रह हज़ार रूबल गंवा दिए हैं। पांच वर्ष हुए, मैंने अपनी जायदाद पर एक लकड़ी के चर्च को पत्थर का करा देने का वादा किया था। वह करने की बजाय मैंने अपनी रकम यहां फूंक दी। अब मैं वह चर्च बनवाने घर जा रही हूं।"

"पर दादी, तुम तो यहां गंधक का पानी पीने आई थीं?"

"रहने दे उस पानी को, प्रासकोवया, मुझे चिढ़ा मत। हां बोल!"

"मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूं दादी," पोलीना ने भावावेश में आरम्भ किया, "आपने मेरी स्थिति समझ ली है। मैं आपकी इतनी कृतज्ञ हूं कि शीघ्र ही आपके पास आऊंगी। पर अभी कुछ कारण हैं और महत्त्वपूर्ण। मैं तुरन्त यहां खड़े-खड़े कोई निर्णय नहीं कर सकती। यदि आप पन्द्रह दिन ठहरतीं तो···!"

"मतलब यह कि तू नहीं चलेगी?"

"मतलब यह कि मैं नहीं चल सकती। कैसे भी अपने भाई और

बहन को नहीं छोड़ सकती। वे सचमुच त्याग दिए जाएंगे। यदि आप मेरे साथ उन बच्चों को लेना चाहेंगी तो मैं अवश्य आऊंगी और विश्वास रखिए, आपका बदला चुका दूंगी।" उसने प्यार से कहा, "पर बच्चों को छोड़कर, दादी, मैं नहीं आ सकती।"

"बस, सिसको मत। (पोलीना के जी में सिसकने की नहीं थी। वास्तव में मैंने उसे कभी रोते नहीं देखा था।) मेरा घर काफी बड़ा है। उसमें बच्चों के लिए भी जगह निकल आएगी। अब समय आ गया है कि वे स्कूल जाएं। तो तुम अभी नहीं चल रही हो। प्रासकोवया, ध्यान रखना कि मैं यह तुम्हारी भलाई के लिए कह रही हूं। मैं जानती थी कि तुम नहीं चलोगी। मैं जब जानती हूं। उस फ्रांसीसी के साथ तुम्हारा भला न होगा।"

पोलीना लाल पड़ गई। कांप उठी। (इसके बारे में सब जानते हैं, केवल मुझे ही कुछ नहीं मालूम।)

"बस, बस। भौंहें न चढ़ाओ। मैं कुछ अधिक नहीं कहने जा रही हूं। ध्यान रखना कि इससे कोई हानि न हो। तुम चतुर लड़की हो। मुझे तुम्हारी चिंता रहेगी। मैं तुम्हें उस दृष्टि से नहीं देखना चाहती जिससे दूसरों को देखती हूं। जाओ, भगवान भला करे।"

"मैं तुम्हें पहुंचाने आऊंगी।" पोलीना ने कहा।

"कोई आवश्यकता नहीं, मैं तुम सबसे तंग हूं।"

पोलीना दादी का हाथ चूम रही थी कि दादी ने उसे खींच लिया और उसके कपोल चूमे।

पोलीना जब मेरे निकट से गुज़री तो उसने तेज़ी से मेरी ओर देखा और तुरन्त अपनी आंखें फेर लीं।

"अच्छा, एलैक्ज़ी इवैनोविच, अब विदा। गाड़ी छूटने में केवल एक घंटा और है। तुम थक गए होगे, यह लो पचास सोने के सिक्के।"

"दादी, बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं लज्जित हूं।"

"बस, बस!" दादी चिल्लाईं इतनी ज़ोर और क्रोध से कि मैं सहम गया। मैंने ले लिए।

"जब तुम्हें मास्को में कोई काम न मिले तो मेरे पास आना। मैं तुम्हें कुछ परिचय-पत्र दूंगी। अच्छा, अब जाओ।"

मैं अपने कमरे में पहुंचा और बिस्तर पर पड़ गया। आध घंटे पीठ के बल दोनों हाथ सिर के पीछे बांधे पड़ा रहा। तो यह पहाड़ टूट पड़ा है और मुझे सोचने को कुछ मिला है! मैंने पोलीना से स्पष्ट बात करने का निश्चय किया। कमीना फ्रांसीसी! तो यह ठीक है? पर इसकी जड़ में क्या है? पोलीना और द ग्रीय—हे भगवान, क्या जोड़ा है!

यह सब स्पष्ट ही अविश्वसनीय था। मैं अचानक उछल पड़ा। मुझे मिस्टर ऐस्टली से मिलना चाहिए और उन्हें बताने को विवश करना चाहिए। अवश्य ही वे इस विषय में मुझसे अधिक जानते हैं। ये मिस्टर ऐस्टली, मेरे लिए एक दूसरी पहेली हैं।

पर अचानक द्वार पर खटखट हुई। मैंने देखा, पोटापिच।

"इलैक्ज़ी इवैनोविच, मालकिन तुम्हें बुला रही हैं।"

"क्या बात है? क्या वे जा रही हैं? गाड़ी छूटने में अभी बीस मिनट हैं।"

"वे अस्थिर हैं, बेचैन। जल्दी कीजिए। उन्होंने आपको बुलाया है महाशय! भगवान के लिए देर न लगाइए।"

मैं तुरन्त नीचे दौड़ा। दादी की कुर्सी गलियारे में थी, पॉकेट बुक हाथ में।

"एलैक्ज़ी इवैनोविच, आगे चलो, हम आ रहे हैं।"

"कहां दादी?"

"मैं कहती हूं, मैं सब जीत लूंगी, वापस। आओ, प्रश्न न पूछो। क्या खेल आधी रात तक चलता है?"

मुझ पर गाज गिरी। मैंने एक क्षण सोचा और निश्चय कर लिया।

"जो आपकी इच्छा हो, करें, ऐण्टोनिडा वैसीलीवना। मैं आपके साथ नहीं चलूंगा।"

"क्यों? अब क्या हुआ? क्या तुम अधिक खा गए हो? अथवा···।"

"आप जो चाहें समझें। बाद को मैं इसके लिए अपने को दोषी ठहराऊंगा। नहीं, मैं नहीं जाऊंगा। मैं इसमें भाग नहीं लूंगा और न देखूंगा। मुझे क्षमा करें। ये रहे आपके पचास फ्रीदरिश दौर। लीजिए, विदा।" मैंने निकट की मेज़ पर रकम रखी, झुका और चला आया।

"क्या बकवास है!" दादी मेरे पीछे चिल्लाई, "तुम नहीं चलना चाहते तो मत चलो। मैं स्वयं मार्ग खोज लूंगी। पोटापिच, मेरे साथ आओ। लो, मुझे उठाओ और ले चलो।"

मिस्टर ऐस्टली मुझे न मिले। मैं घर लौट आया। आधी रात के काफी बाद मुझे पोटापिच से पता चला कि दादी के दिन का अन्त कैसे हुआ। वे उस सब रकम को, जो मैंने शाम को भुनाई थी, हार गईं, अर्थात् रूसी सिक्के में दस हज़ार रूबल और। वह छोटा पोल जिसे एक दिन पहले दादी ने दो फ्रीदरिश दौर दिए थे, उनके साथ लग गया था और उनके खेल का निर्देशन कर रहा था। पोल के आने से पहले वे पोटापिच से अपने दांव रखवा रही थीं। दुर्भाग्य यह कि वह रूसी समझता था और तीनों भाषाओं की खिचड़ी में वे दोनों, किसी प्रकार एक को समझ लेते थे। दादी निर्दयता से सारे समय उसे गाली देती रहीं और "यद्यपि वह अपने-आपको सदा मालकिन के चरणों में प्रस्तुत करता रहा, फिर भी, एलैक्ज़ी इवैनोविच, उसकी तुलना तुमसे नहीं की जा सकती," पोटापिच ने कहा, "वे तुम्हारे साथ एक कुलीन के समान व्यवहार करती थीं, जबकि, मैंने उसे अपनी

आंखों से देखा है, हे भगवान, कि उसने मेज़ पर से मालकिन की रकम चुराई है। मालकिन ने स्वयं दो बार उसे ऐसा करते हुए पकड़ा और अंत में उन्होंने सब प्रकार की गालियां देकर रकम उसी को दे दी। एक बार उन्होंने उसके बाल भी खींचे, जिस पर लोगों में बड़ी हंसाई हुई। वे अपना सब कुछ हार गईं, सब कुछ। हम उन्हें वापस ले आए। उन्होंने पीने को केवल पानी मांगा, हाथ जोड़े और बिस्तर पर पड़ गईं। निश्चय ही वे बहुत थक गई थीं, पड़ते ही सो गईं। भगवान उन्हें अच्छे सपने दे। यह कमबख्त विदेश!" पोटापिच ने समाप्त किया, "यदि हम शीघ्र मास्को पहुंच सकते तो मास्को के हमारे घर में आवश्यकता की सब वस्तुएं थीं—बगीचा, फूल जैसे कि यहां नहीं मिलते, सुगंध, गदराते सेब और सब तरफ जगह ही जगह। ओह, ओह···!"

तेरह

मैं ने इस कथा को, जो गहन और जटिल भावनाओं के नीचे आरम्भ की गई थी, लगभग एक महीने से नहीं छुआ है। वह दुर्घटना, जिसके आगमन की मुझे आशंका थी, वास्तव में आ चुकी है, पर एक ऐसे रूप में जो मेरी कल्पना से सौ गुना अधिक तीव्र और आश्चर्यजनक था। मेरे लिए यह सब कुछ अद्भुत, बेहूदा और करुण भी था, यद्यपि दूसरे दृष्टिकोण से वह कुछ असाधारण-मात्र से अधिक नहीं कहा जा सकता था। सबसे अधिक आश्चर्यजनक था इन घटनाओं के प्रति स्वयं मेरा रुख। मैं आज भी नहीं समझ पाता कि यह सब क्या हुआ। सब कुछ स्वप्न के समान तिर गया है—मेरा भावावेश भी जो तब इतना तीव्र और सच्चा था, उड़ गया है। यह सच है कि कभी-कभी मेरे मन में यह विचार कौंध जाता है—मैं तब पागल तो नहीं था? मैं इतने दिन किसी पागलखाने में तो नहीं रहा हूं? अथवा शायद मैं अब भी पागलखाने में हूं! और—इसलिए यह सब मेरी कल्पना-मात्र थी और अब भी वही है।

मैंने अपने नोट इकट्ठे किए और पढ़े। अब मैं बिलकुल अकेला हूं। पतझड़ आ रहा है, पत्तियां पीली पड़ रही हैं। मैं इस मनहूस कस्बे में हूं, और बजाय यह सोचने के कि मैं आगे क्या करूंगा, मैं उन

भावनाओं के नीचे ही जिए जा रहा हूं, जिनमें होकर गुज़र आया हूं; उन स्मृतियों से शासित हूं, जो अभी ताज़ा हैं और उस घटनाचक्र से प्रभावित हूं, जिसने मुझे झंझोड़ डाला है। कभी-कभी लगता है कि मैं अब भी उस घटनाचक्र में हूं और तूफान अब भी मुझे अपने में फंसाए हुए चल रहा है—और तब मैं सब नियम-व्यवस्थाएं भूल जाता हूं और बार-बार चकराने लगता हूं।

मैं शायद इस चक्र से निकल सकता हूं और कुछ शांत बैठ सकता हूं, यदि मैं इन पिछली घटनाओं को यथासम्भव स्पष्ट अपने सामने रख सकूं। लेखनी का आकर्षण मुझे फिर खींच रहा है। पर अनुभव करता हूं कि मैं किसी गंभीर कार्य में हाथ डालकर इस तात्कालिक अतीत की मोहिनी को तोड़ने से घबराता हूं। यह मेरे लिए मूल्यवान है, इतनी कि मैं इसे कदाचित् चालीस वर्ष याद रखूंगा। मैं फिर लिखना आरम्भ करता हूं। पर अब मैं केवल कुछ संक्षिप्त वर्णन ही दे सकता हूं। घटनाओं के प्रभाव पहले जैसे तीव्र नहीं रह गए हैं।

पहले मैं दादी की बात पूरी करूं। अगले दिन वे सब कुछ हार गईं। जब कोई इस राह पर पड़ जाता है तो वह स्लेज में बैठे उस मनुष्य के समान होता है, जो बर्फीली पहाड़ी पर से अधिकाधिक तेजी से नीचे उतरता है। वे सारे दिन रात के आठ बजे तक खेलती रहीं। मैं वहां नहीं था। जो सुना वही जानता हूं।

पोटापिच कैसीनो में दिन-भर उनके साथ रहा। दिन में कई पोलों ने क्रम से दादी का पथ-प्रदर्शन किया। उन्होंने पहले दिन जिस पोल के बाल खींचे थे, उसे धता बताकर दूसरे पोल से कार्य आरम्भ किया। पर यह उससे भी बुरा निकला। दूसरे को हटाकर उन्होंने फिर पहले को, जो सदा उनकी कुर्सी के निकट डटा रहा था, स्वीकार कर लिया और अंत में वे पूर्ण निराशा में डूब गईं। दूसरे पोल ने भी हटने से इनकार कर दिया। एक उनके दाएं और एक उनके बाएं जम गया।

वे एक-दूसरे को गाली देते, दांवों तथा खेल के ऊपर झगड़ते, मेल करते, बिना सोचे-समझे खेलते और अंधाधुंध रकमें दांव पर लगाते रहे। इसका फल यह हुआ कि दादी पूर्णतया घबरा गईं और दब गईं—इतनी कि लगभग रोते हुए उन्होंने बूढ़े क्रोपिअर से विनती की कि वह उनकी रक्षा करें और उन लोगों को वहां से हटा दें।

इस पर वे चीखने-चिल्लाने पर भी तुरन्त निकाल दिए गए। उन दोनों ने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया कि दादी उनकी कुछ कर्जदार हैं और उनके साथ बेईमानी की जा रही है। अभागे पोटापिच ने लगभग रोते हुए उसी संध्या यह बात मुझसे कही और बताया कि उनकी जेबें रकम से भरी हुई थीं। उसने उन्हें निर्लज्जतापूर्वक रकम चुराते और जेब में ठूंसते देखा है। जब वे हटाए जा रहे थे, तो पोटापिच आगे आया। उसने कहा कि उनकी जेबें सोने से भरी हैं। दादी ने तुरंत क्रोपिअर से छानबीन करने को कहा और पोलों की चिल्ल-पों के बावजूद पुलिस आगे आई। उसने तुरन्त उनकी जेबें खाली कराईं और रकम दादी को दे दी। कैसीनो के नौकरों में दादी का मान उस दिन निश्चय ही उस समय तक ऊंचा था, जब तक कि वे सब कुछ हार नहीं गईं। उनकी प्रसिद्धि नगर-भर में फैल गई और सब देशों के सभी छोटे-बड़े यात्री उन बूढ़ी रूसी काउण्टेस को देखने के लिए आने लगे जो लाखों हार चुकी हैं।

पर दादी को दोनों पोलों से बचने से कुछ भी लाभ नहीं हुआ। उनके स्थान पर एक तीसरा आ गया। यह शुद्ध रूसी बोलता था। लगता तो वह नौकर था, पर वस्त्र कुलीनों के से पहने था। उसने अपने को मालकिन के चरणों में बिछाया और उन्हें चूमा; पर उद्दण्डता का व्यवहार किया और खेल में किसी की न सुनी। उसका व्यवहार ऐसा हो गया कि जैसे वह दादी का नौकर न होकर उनका मालिक हो। खेल के प्रत्येक चक्र पर वह दादी की ओर घूमता और भयानक

कसमें खाकर कहता कि उसकी भी हैसियत है, वह दादी की रकम में से एक भी कोपेक न लेगा। दादी उससे पूर्णतया दब गई थीं। पर क्योंकि उसके आने से आरम्भ में दादी का भाग्य कुछ पलटा था, इसलिए दादी उसे स्वयं छोड़ने को तैयार न थीं। एक घंटे बाद पहले दोनों पोल भी आ पहुंचे, दादी के पीछे खड़े हो गए और अपनी सेवाएं अर्पित कीं। पोटापिच ने मुझे कसम खाकर बताया कि हैसियतवाले ने उन्हें आंखों से इशारा किया और उनके हाथ में कुछ दिया भी। क्योंकि दादी ने भोजन नहीं किया था और वे अपनी कुर्सी नहीं छोड़ सकती थीं, इसलिए एक पोल निश्चय ही उपयोगी सिद्ध हुआ। वह तुरन्त कैसीनो के भोजनगृह से उनके लिए एक प्याला रसा और चाय ले आया। संध्या समय जब यह स्पष्ट हो गया कि अब वे अपना अंतिम बैंक नोट दांव पर लगाएंगी, तो उनकी कुर्सी के पीछे न जाने कहां से छः पोल इकट्ठे हो गए। जब दादी अपने अंतिम दांव खेल रही थीं, तो उन्होंने उनकी ओर ध्यान देना, उनकी आज्ञा मानना बन्द कर दिया। वे सामने मेज़ पर आ गए। रकम छीन ली, दांव लगाए, अपना खेल खेला, चिल्लाए, लड़े और हैसियतवाले के साथ इस प्रकार घुल-मिल गए, मानो वह उन्हीं में से हो। हैसियतवाला भी दादी की उपस्थिति को भूल गया। दादी जब सब कुछ गंवाकर आठ बजे होटल को लौट रही थीं, तब भी तीन-चार पोल उनकी बगल में दौड़ रहे थे और चिल्ला रहे थे कि बुढ़िया ने उन्हें लूट लिया है, उन्हें कुछ तो मिलना चाहिए। उन्होंने होटल तक उनका पीछा किया। वहां से वे डांटकर भगाए गए।

पोटापिच के हिसाब से दादी उस दिन नब्बे हज़ार रूबल हारीं। पहले दिन की हार के अतिरिक्त उन्होंने अपने सब नोट, सरकारी बॉंड और वे हिस्से, जो उनके पास थे, बदलवाए और सब हार गईं। मुझे आश्चर्य हुआ कि वे मेज़ के निकट अपनी कुर्सी में सात-आठ घंटे कैसे

बैठी रहीं। पर, पोटापिच ने मुझे बताया, दादी तीन या चार बार काफी जीतने लगी थीं, और इस नई आशा के वशीभूत ही वे अपने को वहां से हटा नहीं सकी थीं।

इस बीच में होटल में बहुत महत्त्वपूर्ण घटनाएं हो रही थीं। प्रातः, जब दादी होटल में ही थीं, जनरल और द ग्रीय ने अन्तिम कदम उठाने का निश्चय किया। दादी ठहर गई हैं और वे फिर कैसीनो जानेवाली हैं, यह जानकर, पोलीना के अतिरिक्त, वे सब उनसे अन्तिम और खुली बात करने के लिए उनके पास गए। जनरल ने आध घंट उनसे विनती और प्रार्थना की, तथा अपने कर्ज़ और कुमारी ब्लांश के प्रति अपने भाव की सब बातें साफ-साफ कह दीं। इसके बाद अचानक उसका स्वर ऊंचा हो गया। वह बोला कि दादी सारे नगर में कलंक-चर्चा का विषय बन गई हैं, और चिल्लाया, "तुम रूसी नाम को लजा रही हो।" उसने धमकी दी कि अब पुलिस बुलाई जाएगी। दादी ने लकड़ी की सहायता से उसे दूर हटा दिया।

जनरल और द ग्रीय ने गम्भीरता से विचार किया। प्रश्न यह था कि क्या इस कारण कि एक अभागी पर सम्मान्य वृद्धा बुढ़ापे की मूढ़ता के कारण अपनी सब सम्पत्ति जुए में उड़ाए दे रही है, पुलिस को बुलाना सम्भव होगा? क्या उसे किसी प्रकार के संरक्षण या नियंत्रण में रखा जा सकेगा? पर द ग्रीय ने केवल अपने कंधे उचकाए, बेचैन जनरल के सामने हंसा और अन्त में हाथ हिलाकर चला गया। संध्या समय हमें पता चला कि कुमारी ब्लांश के साथ बहुत गम्भीर और रहस्यमयी बातें करने के बाद वह होटल को बिलकुल छोड़ गया है। कुमारी ब्लांश ने अपना प्रबन्ध तड़के ही कर लिया था। उसने जनरल को बिलकुल त्याग दिया था। जब जनरल उसकी खोज में दौड़ा हुआ कैसीनो पहुंचा और उसे राजकुमार की बांह में बांह डाले देखा, तो उन्होंने उसकी ओर निहारना भी उचित नहीं समझा। कुमारी ब्लांश

दिन-भर राजकुमार पर इस प्रयत्न में कठिन परिश्रम करती रहीं कि उससे कुछ तय हो जाएगा। पर खेद है कि इसमें वे भयंकर धोखा खा गईं। यह नन्ही दुर्घटना संध्या समय हुई। अचानक यह मालूम हुआ कि यह राजकुमार कंगाल है और उससे भी अधिक यह कि वह स्वयं इस ताक में था कि ब्लांश से रकम उधार ले और रूलेट पर अपने भाग्य की परीक्षा करे। ब्लांश ने कुपित होकर उसे निकाल दिया और अपने कमरे के भीतर बंद हो गईं।

उस दिन प्रातः मैं मिस्टर ऐस्टली की खोज में गया। वे कहीं नहीं मिले। चार बजे के बाद मैंने उन्हें रेलवे स्टेशन से अंग्रेज़ी होटल की ओर जाते देखा। वे गम्भीर थे और विचारमग्न, यद्यपि उनके चेहरे पर चिन्ता या उद्विग्नता का रंच भी न था। उन्होंने अपना हाथ प्रेम से आगे बढ़ाया, पर चाल की तेज़ी में कुछ कमी न की। मैं उनके साथ हो लिया। उन्होंने मेरे प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार दिए कि मैं उनसे कुछ न जान सका। और भी, मैंने किसी कारण उनसे पोलीना के बारे में बात करते हुए लज्जा अनुभव की। उन्होंने भी उसके बारे में कुछ नहीं पूछा। मैंने उन्हें दादी के विषय में बताया। उन्होंने ध्यान से सुना और कंधे उचकाए।

"वे सब कुछ हार जाएंगी।" मैं बोला।

"हां," उन्होंने उत्तर दिया, "जब मैं जा रहा था तो वे खेलने जा रही थीं। बाद में मालूम हुआ कि वे सब कुछ हार गई हैं। यदि मेरे पास समय होता, तो मैं स्वयं कैसीनो जाकर देखता; क्योंकि बात विचित्र है।"

"आप कहां गए थे?" मैंने आश्चर्य किया कि मैंने पहले यह क्यों नहीं पूछा।

"मैं फ्रैंकफर्ट गया था।"

"काम से?"

"हां, काम से।"

अब मेरे पास पूछने को क्या बचा था? पर मैं उनके साथ चलता गया। वे अचानक होटल दस क्वात्रे सेसां में मुड़े, मेरी ओर सिर झुकाया और भीतर चले गए। लौटते समय मुझे अनुभव हुआ कि यदि मैं उनसे दो घंटे भी बात करता रहता तो भी कुछ पता न लगा पाता···। इसलिए कि मेरे पास पूछने को कुछ न था। मैं अपना प्रश्न तैयार करने में बिलकुल असमर्थ था।

पोलीना ने वह दिन बच्चों के साथ पार्क और घर में बिताया। वह बहुत दिनों से जनरल से दूर रहती थी और शायद ही किसी गम्भीर विषय पर उससे बोलती थी। मैं सोचता था कि जनरल को अपनी वर्तमान स्थिति में पोलीना की ओर ध्यान देना पड़ेगा और उससे पारिवारिक मामलों पर महत्त्वपूर्ण बातचीत करनी होगी। पर मैंने पोलीना को ऐसा निश्चिन्त और शांत पाया, जैसे कि यह पारिवारिक तूफान उसे छू भी न गया हो। उसने मेरे नमन का उत्तर दिया और मैं काफी दुःखित घर लौटा।

यह सही है कि मैं बैरन की घटना के बाद पोलीना से नहीं मिला। यदि वह मुझसे तनिक भी प्रेम नहीं करती, तो भी, मैंने सोचा, उसे मेरी भावनाओं को इस प्रकार नहीं कुचलना चाहिए और मेरे प्रेमोद्गारों का ऐसा तिरस्कार नहीं करना चाहिए। वह जानती है कि मैं उससे सचमुच प्रेम करता हूं। उसने इसे स्वीकार किया है। वास्तव में, उसने मुझे उसकी बात करने के लिए कभी-कभी उकसाया है··· मज़ाक के लिए; मैंने देखा है कि उसे मेरी बात सुनने, मुझे व्यथित करने और तीव्र तिस्कार तथा उपेक्षा से मुझे घायल करने में आनन्द आता था। बैरन की घटना को तीन दिन हो गए थे। मैं विरहाकुल था। जब मैं अभी-अभी कैसीनो के निकट उससे मिला तो मेरा हृदय इस प्रकार धड़का कि मैं पीला पड़ गया। पर वह भी मेरे बिना न रह

सकती थी। उसको मेरी आवश्यकता थी। निश्चय ही—मसखरे या विदूषक की भांति नहीं।

दादी के साथ उसके वार्तालाप ने मेरे हृदय को बेध दिया था। क्या वह फ्रांसीसी उसका सम्पूर्ण संसार है? अथवा मिस्टर ऐस्टली? यहां सब बातें उलझ गईं। हे भगवान! मैंने तब जो यातनाएं भोगीं! मैं घर पहुंचा। क्रोध के आवेश में कलम उठाई और लिखा—

"पोलीना एलैक्ज़ैंड्रोवना, इस नाटक का अन्त होनेवाला है और उसका प्रभाव तुम पर भी पड़ेगा। मैं अन्तिम बार कहता हूं, तुम्हें मेरे जीवन की आवश्यकता है या नहीं? यदि मैं किसी भी काम का हूं, तो मेरा उपयोग करो। मैं कमरे में हूं। लिखो या बुला भेजो।"

मैंने पत्र गलियारे के नौकर द्वारा भिजवा दिया। उत्तर की आशा नहीं थी। पर नौकर ने लौटकर कहा, "उन्होंने आपको अभिवादन भेजा है।"

छः बजे बाद जनरल ने मुझे बुलाया। वह अध्ययनकक्ष के बीच में खड़ा अपने से बातें कर रहा था—पागल-सा, विक्षिप्त। उसने मुझे आदर दिया और रक्षा की भीख मांगी। आंखों में आंसू भरकर प्रार्थना की कि मैं तुरन्त कुमारी ब्लांश के पास जाऊं, उनसे विनती करूं कि वे लौट आएं और उससे विवाह कर लें। मेरी आपत्तियां उसकी समझ में न आईं। उसका ध्यान दादी पर गया तो पुलिस को बुलाने की गाने लगा। मैंने द ग्रीय की बात उठाई तो बोला, "वह चला गया। मेरा सब कुछ उसके पास गिरवी है, सब कुछ। तुम जो रकम लाए थे, उसमें से, मैं समझता हूं, सात सौ फ्रैंक बचे हैं। अभी काफी हैं पर आगे? मैं नहीं जानता—मैं नहीं···।"

मैंने पोलीना की बात उठानी चाही, बच्चों की; पर वह 'हां, हां' करके तुरन्त राजकुमार की बात करने लगा—कुमारी ब्लांश उसके साथ चली जाएंगी तो मैं क्या करूंगा? "अलैक्ज़ी इवैनोविच," उसने

अचानक प्रश्न किया, "क्या यह कृतघ्नता नहीं है?"

और वह अन्त में आंसुओं की बाढ़ में घुल गया।

उसे अकेला छोड़ना खतरनाक था। कुछ कर बैठे तो! मैंने आया और गलियारे के नौकर को उस पर दृष्टि रखने को कहा। नौकर समझदार था।

इसी समय दादी की आज्ञा लिए पोटापिच आ पहुंचा। वे सब कुछ हारकर लौटी थीं। आरामकुर्सी पर बैठी थीं—थकी और स्पष्ट दुःखी। उनका स्वर बिलकुल बदल गया था।

"नमस्ते, मेरे भले महाशय!" उन्होंने धीरे से मान के साथ सिर झुकाते हुए कहा, "इस कष्ट के लिए मुझ बूढ़ी नारी को क्षमा करो। मैं हार आई हूं—लगभग एक लाख रूबल। अब मेरे पास कौड़ी भी नहीं है। मैं साढ़े नौ की गाड़ी से चली जाऊंगी। मैं तुम्हारे उस अंग्रेज़ से तीन हज़ार फ्रैंक उधार लेना चाहती हूं। उसे राज़ी कर लेना। मेरे पास अब भी सम्पत्ति है, तीन गांव, दो मकान और कुछ वैसी रकम।"

मिस्टर ऐस्टली दादी के संदेश पर तुरन्त आए। निःशब्द तीन हज़ार फ्रैंक गिन दिए। दादी ने कागज़ पर हस्ताक्षर किए। काम पूरा करके उन्होंने आज्ञा मांगी और चले गए।

दादी बोलीं, "एलैक्ज़ी इवैनोविच, मेरे जैसी मूर्ख बुढ़िया के प्रति कटु न होना। अब मैं युवकों की चंचलता के लिए उन्हें दोष न दूंगी। और उस अभागे जनरल को भी दोष देना पाप होगा। पर मैं उसे रकम न दूंगी। वह मूर्ख है! मूर्ख मैं भी हूं। निश्चय ही भगवान बुढ़ापे में भी घमंड को चूर करता है। अच्छा विदा। मुझे उठाओ।"

मेरी दशा डांवाडोल-अस्थिर थी। मुझे लग रहा था कि अगले मिनट कुछ होनेवाला है। मैं कमरे में गया, गलियारे में आया और फिर एवेन्यू में टहलने पहुंचा। मेरा पत्र स्पष्ट और निश्चित था। यदि वह मुझे मित्र की भांति स्वीकार नहीं करती, तो शायद एक नौकर की

भांति अस्वीकार न करेगी। मैं उसके लिए उपयोगी था।

गाड़ी छूटने के समय मैं स्टेशन पर पहुंचा। दादी का दल एक रिज़र्व डिब्बे में था। विदा होते समय उन्होंने कहा, "मेरे भले मित्र, तुम्हारी निःस्वार्थ सहानुभूति के लिए धन्यवाद। प्रासकोवया से कहना कि मैं उसकी प्रतीक्षा करूंगी।"

मैं होटल लौटा। जनरल के कमरे के सामने से गुज़रा तो अन्दर गया। आश्चर्य! कुमारी ब्लांश और वह दोनों जी खोलकर हंस रहे थे। उनकी मां सोफे पर बैठी थीं। जनरल प्रसन्नता से फटा जा रहा था। उसे हंसी के दौरे पड़ रहे थे। मुझे बाद में ब्लांश से मालूम हुआ कि जब वे राजकुमार को धता बता चुकीं तो उन्होंने सुना कि जनरल रो रहा है। वे उसे सांत्वना देने के लिए उसके पास आई थीं। बेचारा जनरल उस समय यह नहीं जानता था कि उसके भाग्य का निपटारा हो चुका है और कुमारी ब्लांश अगली प्रातः की पहली गाड़ी से पेरिस जाने के लिए सामान बांध चुकी हैं।

मैं जनरल के द्वार में रुका तो मेरा विचार बदल गया और मैं अपने कमरे की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचकर द्वार खोला तो देखा कि खिड़की के निकट अर्धअंधकार में एक मूर्ति कुर्सी पर बैठी है। मैं अन्दर गया। वह उठी नहीं। मैं जल्दी से उसके निकट पहुंचा। मेरा हृदय थम गया। वह पोलीना थी।

चौदह

मैं निश्चय ही ज़ोर से चीख पड़ा था।

"यह क्या?" उसने विचित्र रीति से पूछा। वह मुझे पीली और दुःखित दिखाई दी।

"तुम पूछती हो, यह क्या? तुम? यहां? मेरे कमरे में?"

"यदि मैं आती हूं तो पूरी आती हूं। यह मेरी आदत है। तुम अभी देखोगे। बत्ती जलाओ।"

मैंने मोमबत्ती जलाई। वह मेज़ तक आई। मेरे सामने एक खुला पत्र रख दिया। "इसे पढ़ो।" उसने आज्ञा दी।

"यह तो द ग्रीय के अक्षर हैं।" पत्र लेते हुए मैं बोला। मेरे हाथ कांप रहे थे। पंक्तियां नाच रही थीं। शब्द मुझे ठीक याद नहीं, पर उनका आशय कुछ ऐसा था–

"कुमारी, एक अभागी परिस्थिति के कारण मुझे तुरन्त जाना पड़ रहा है। तुम्हारे एक वृद्ध सम्बन्धी के आगमन और उसके बेहूदा व्यवहार ने मेरे सन्देह को दूर कर दिया है। अतीत के लिए मुझे खेद है और मैं विश्वास करता हूं कि तुम मेरे व्यवहार में ऐसी कोई बात न पाओगी जो इस कुलीन और ईमानदार व्यक्ति के योग्य न हो। मैंने अपनी बहुत-सी रकम तुम्हारे सौतेले पिता को दिए हुए ऋण में गंवा

दी है। इसलिए मेरे वास्ते यह आवश्यक हो गया है कि जो कुछ बचा है उसका अधिक-से-अधिक ठीक उपयोग करूं। मैंने पीटर्सबर्ग में अपने मित्रों को सन्देश भेज दिया है कि वे मेरे पास तुम्हारे सौतेले पिता की जो जायदाद गिरवी रखी हुई है, उसे तुरन्त बेच डालने का प्रबन्ध करें। क्योंकि तुम्हारे ओछे पिता ने तुम्हारी व्यक्तिगत सम्पत्ति भी उड़ा दी है, इसलिए मैंने निश्चय किया है कि उस पर पचास हज़ार फ्रैंक छोड़ दूं। और इस रकम के कागज़ उसे लौटा रहा हूं। इससे तुम कानून की सहायता से उससे अपनी जायदाद प्राप्त कर सकोगी। मैं आशा करता हूं कि वर्तमान स्थिति में मेरा यह कार्य तुम्हारे लिए बहुत लाभदायक होगा। विश्वास रखो कि तुम्हारी स्मृति मेरे हृदय पर चिरस्थायी होगी।"

"इसके अतिरिक्त और तुम क्या आशा करती थीं?" मैंने क्रोधित स्वर में कहा।

"मैं कुछ आशा नहीं करती थी।" वह दृश्यतः शांति से बोली, यद्यपि उसकी वाणी में एक कंप था, "मैं उसका रुख समझ गई थी। मैंने जान-बूझकर उसकी अवज्ञा करना आरम्भ कर दिया था। यदि उत्तराधिकार का तार आता तो मैं अपने सौतेले पिता द्वारा उधार ली गई रकम उस गधे के सामने फेंक देती। मैं युगों से उसे घृणा कर रही हूं। वह अब पहले जैसा नहीं था। यदि मैं यह पचास हज़ार उसके कमीने चेहरे पर फेंक सकती, थूक सकती, कुचल सकती…!"

"जनरल से पचास हज़ार का प्रो नोट लो और उसे लौटा दो।"

"ओह, यह बिलकुल वही बात नहीं होगी; वही…?"

"हां, यह बिलकुल वही बात नहीं है। बेचारा जनरल अब किस योग्य है! हां, दादी…!" मैंने अचानक कहा।

"दादी क्यों?" पोलीना ने चिढ़कर कहा, "मैं उनके पास नहीं जा सकती। किसी से क्षमा नहीं मांग सकती।" वह चिड़चिड़ाई।

"तो?" मैं बोला, "और हां, तुम द ग्रीय से प्रेम कैसे कर पाईं? वह बदमाश, शैतान···तुम कहो तो मैं उसे द्वन्द्वयुद्ध में मार डालूंगा। कहां है वह?"

"फ्रैंकफर्ट में। तीन दिन वहीं रहेगा।"

"बस, कह दो। मैं कल पहली गाड़ी से चला जाऊंगा।" मैंने मूढ़ उत्साह से कहा।

वह हंसी।

"वह तुमसे कह सकता है कि पहले मेरे पचास हज़ार फ्रैंक लौटाओ। और तुम लड़ोगे किस बात के लिए?"

"ये पचास हज़ार फ्रैंक कहां मिलेंगे?" मैंने दांत पीसते हुए कहा, "हां, मिस्टर ऐस्टली···" मैंने उसकी ओर घूमते हुए सुझाया। उसकी आंखें भभक उठीं।

"तुम्हारा मतलब? क्या तुम स्वयं मुझे उस अंग्रेज़ की ओर ढकेलना चाहते हो?" उसने मुझे टटोलती दृष्टि और कटु मुसकान से देखते हुए पूछा। वह भाव से विक्षुब्ध थी। तुरन्त सोफे पर बैठ गई, मानो थकी हुई हो।

मुझे लगा कि मेरे ऊपर बिजली गिरी हो। मैं उठ खड़ा हुआ। अपनी आंखों और अपने कानों पर विश्वास न कर सका। तो यह मुझे प्यार करती है। मेरे पास आई है। मिस्टर ऐस्टली के पास नहीं गई। यह युवती होटल में मेरे कमरे में आई है। इस प्रकार कि उसने अपने को दोषी ठहरा लिया है और मैं अब भी उसके सामने खड़ा हूं, समझ नहीं पा रहा हूं। मेरे मस्तिष्क में एक उन्मत्त विचार कौंध गया।

"पोलीना, मुझे केवल एक घंटा दो, एक घंटा। मैं अभी आता हूं। यह बहुत ज़रूरी है। तुम यहीं ठहरो, यहीं। अभी आता हूं।"

मैं कमरे से बाहर दौड़ गया।

उस संध्या को मैं जीवन-भर नहीं भूलूंगा। मेरे साथ जो हुआ वह आश्चर्यजनक था। यद्यपि अंकगणित के नियम उसका समर्थन करते हैं, फिर भी मेरे लिए वह आश्चर्य बना हुआ है। वह विश्वास पहले से ही मेरे मस्तिष्क में क्यों जम गया था? मैंने निश्चय ही इस पर विचार किया था। एक अवसर की भांति नहीं, जो आ सकता है और नहीं भी आ सकता; वरन एक ऐसी अनिवार्यता की भांति जो असंदिग्ध रूप से होनेवाली है।

सवा दस बजे थे। मैं कैसीनो में विश्वास के साथ पहुंचा और उसके साथ एक उत्तेजना भी थी जिसका अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था। जुआघर में अब भी काफी लोग थे। ये वही सच्चे और उन्मादी जुआरी थे जिनके लिए इस नगर में रूलेट के अतिरिक्त और कोई आकर्षण नहीं था, जो यहां केवल इसीलिए आए थे, जो प्रातः से रात तक खेलते थे और, यदि सम्भव होता तो, शायद सारी रात प्रातः तक खेलने को तैयार थे। रात के बारह बजे भी कैसीनो से बाहर जाते जिनका दिल टूटता था। और जो, जब बड़ा क्रोपिअर अर्धरात्रि से पहले घोषणा करता है—तीन दांव और महाशयो, तो अपनी जेब का सब कुछ उस पर लगा देने को तैयार होते हैं, वास्तव में लगाते हैं और अधिकतर हार जाते हैं।

मैं उसी मेज़ पर पहुंचा जिस पर दिन में दादी खेली थीं। भीड़ नहीं थी, मैं शीघ्र ही पास जा खड़ा हुआ। मेरे सामने हरे कपड़े पर 'पास' लिखा हुआ था। 'पास' संख्याओं की वह श्रेणी है जिसमें उन्नीस से छत्तीस तक सम्मिलित हैं। एक से अठारह तक संख्याओं की पहली श्रेणी 'मांक' कहलाती है। पर मुझे इससे क्या? मैंने कोई हिसाब नहीं लगाया, यह भी नहीं सुना कि अभी कौन-सी संख्या जीती है। समझदार खिलाड़ियों से विपरीत, मैंने उसके विषय में पूछा तक नहीं। मैंने अपने सब बीस फ्रीदरिश दौर निकाले और पास पर लगा दिए।

"बाईस।" क्रोपिअर चिल्लाया।

मैं जीत गया। मैंने सब कुछ उसी पर रहने दिया। "इकतीस।" क्रोपिअर चिल्लाया। मैं फिर जीत गया। अब मेरे पास अस्सी फ्रीदरिश दौर थे। मैंने पूरी रकम को बहार मध्यम संख्याओं पर लगाया। अवसर मेरे पक्ष में एक और विपक्ष में दो थे। पहिया घूमा और चौबीस पर ठहर गया। मुझे पचास-पचास फ्रीदरिश दौर के तीन नोट और दस सोने के सिक्के मिले।

मैं मानो नशे में था। मैंने सोने का ढेर लाल पर सरका दिया। अचानक, उस संध्या मुझे यहीं, केवल एक बार, कुछ और विचार आया। मैं भय से जम गया और हाथ-पैरों में एक कम्प दौड़ गया। मैंने अनुभव किया कि इस समय हार जाने का अर्थ क्या होगा? मेरा सम्पूर्ण जीवन दांव पर था।

"लाल।" क्रोपिअर चिल्लाया और मेरी जान में जान आई। मेरे अंगों में अग्निमय सुइयां-सी चुभ रही थीं। मुझे नोट दिए गए—चार हज़ार फ्लोरिन और अस्सी फ्रीदरिश दौर। मैं अभी इनका हिसाब लगा सकता था।

अब, मुझे याद है कि मैंने दो हज़ार फ्लोरिन बहार मध्य संख्याओं पर लगाए और हार गया। अस्सी फ्रीदरिश दौर लगाए और फिर हार गया। मैं क्रोध से अंधा हो गया। मैंने शेष दो हज़ार फ्लोरिन निकाले और बिना सोचे-समझे पहली बारह संख्याओं पर लगा दिया। एक क्षण के लिए लगा कि मैं हवा में लटक रहा हूं।

"चार।" क्रोपिअर चिल्लाया।

अब मेरे पास छः हजार फ्लोरिन थे। विजय का गर्व मुझे छा गया। मुझे अब किसी का भय नहीं था। मैंने चार हज़ार फ्लोरिन काले पर लगाए। नौ व्यक्तियों ने मेरा अनुकरण किया। क्रोपिअरों की दृष्टियां मिलीं। लोग चारों ओर दम साधे हुए थे।

काला जीता। इसके बाद मुझे याद नहीं कि मैंने क्या जीता और क्या दांव लगाया। मुझे स्वप्न की भांति केवल इतना याद है कि मैं जीता सम्भवतया सोलह हज़ार फ्लोरिन; अचानक तीन अभागे चक्कर इनमें से बहार हज़ार खा गए। मैंने शेष चार हज़ार पास पर लगाए और सुन्न यंत्रवत् प्रतीक्षा में खड़ा रहा। मैं जीता और फिर लगातार चार बार जीता। मुझे इतना याद है कि मैंने रकमें हज़ारों में समेटीं; और यह भी कि बीच की बारह संख्याएं सबसे अधिक जीत रही थीं और मैं उन्हीं पर लगाता रहा। वे एक आश्चर्यजनक नियमितता से आ रही थीं।

मैं समझता हूं कि मुझे कमरे में आए आध घण्टे से अधिक नहीं हुआ होगा कि अचानक क्रोपिअर ने बताया कि मैं तीस हज़ार फ्लोरिन जीत चुका हूं और क्योंकि बैंक इससे बड़ी रकम के दावे एक बार में पूरे नहीं करता, इसलिए यह रूलेट अब कल तक के लिए बंद हो जाएगा। मैंने अपनी रकम समेटी और दूसरे कमरे में दूसरी रूलेट मेज़ पर पहुंचा। भीड़ मेरे पीछे लगी चली आई। यहां मेरे लिए तुरन्त स्थान बना दिया गया और मैं फिर अंधाधुंध बिना सोचे-विचारे दांव लगाने लगा। मैं नहीं जानता कि मेरी रक्षा किसने की।

पर कभी-कभी मेरे मस्तिष्क में बुद्धिमानी की झलक कौंध जाती थी। मैं कुछ संख्याओं और उनके समुदायों से चिपका था। अब मैंने उन्हें छोड़ दिया और लगभग अचेतन दांव लगाने लगा। मैं बहुत लापरवाह रहा हूंगा। क्योंकि मुझे याद है कि क्रोपिअरों ने कई बार मेरी भूलें सुधारीं। मैंने कई महान भूलें कीं। मेरी कनपटी पसीने से तर थी और मेरे हाथ कांप रहे थे। कई पोल भी आए। अपनी सेवाएं अर्पित कीं। पर मैंने किसी की नहीं सुनी। मेरा सौभाग्य अटूट था। अचानक मैंने ऊंची आवाज़ें और हंसी सुनीं। सब लोग चिल्ला उठे, "शाबाश, शाबाश!" कुछ ने तालियां भी बजाईं। मैंने यहां भी तीन

लाख फ्लोरिन समेटे और बैंक दूसरे दिन के लिए बंद हो गया।

"चले जाओ, चले जाओ।" मेरे दाहिनी ओर कोई फुसफुसाया। यह फ्रैंकफर्ट का एक यहूदी था। वह सदा मेरी बगल में खड़ा रहा था। और मैं समझता हूं कि उसने खेल में मेरी सहायता भी की थी।

"भगवान के लिए चले जाओ।" मेरे बाएं कान में एक दूसरी वाणी फुसफुसाई। मैंने जल्दी से देखा—एक महिला थी, अत्यन्त गंभीर, सूफियानी पोशाक, थका, पीला, दुःखी चेहरा, जिस पर अब भी सुन्दर होने के चिह्न बने हुए थे। उस समय मैं नोटों को जेबों में ठूंस रहा था और मेज़ पर पड़े सोने को समेट रहा था। मैंने नोटों का अंतिम मुट्ठा उठाया और बिना किसी का ध्यान आकर्षित किए उसे पीली महिला के हाथ में दे दिया। मुझे याद है कि उसकी पीली-पतली अंगुलियों ने मेरे हाथ को कृतज्ञता से प्रेमपूर्वक दबाया। यह सब एक क्षण में हो गया।

अपनी जीत इकट्ठी करके मैं 'त्रांत-ए-करांत' पर पहुंचा। यहां रईस लोग खेलते हैं। यह रूलेट से विपरीत ताश का खेल है। यहां बैंक एक साथ एक लाख टेलर तक देता है और यहां भी सबसे बड़ा दांव चार हज़ार फ्लोरिन है। मैं इस खेल को नहीं के बराबर जानता था। यह पता न था कि दांव कैसे लगाया जाता है। केवल इतना जानता था कि यहां भी लाल और काले पर दांव लगाए जाते हैं। मैं लाल और काले से चिपका रहा और सारा कैसीनो मेरे चारों ओर इकट्ठा हो गया। मुझे याद नहीं कि इस बीच में पोलीना एक बार भी मेरे ध्यान में आई हो। मुझे नोटों को, जो मेरे सामने ढेर हो रहे थे, उठाते और इकट्ठा करते महान् आनन्द प्राप्त हो रहा था।

ऐसा लगता था कि भाग्य मुझे आगे बढ़ाए लिए जा रहा है। इस बार भाग्यवशात् परिस्थिति ऐसी आई, जो इस खेल में अक्सर आती रहती है। उदाहरण के लिए, अवसर दस या पन्द्रह बार लगातार

लाल के पक्ष में रहता है। दो दिन पहले मैंने सुना था कि पिछले सप्ताह लाल लगातार बाईस बार आया है। यह एक ऐसी बात थी जो रूलेट में कभी याद नहीं रखी गई थी। लोग इस पर आश्चर्य कर रहे थे। दसवीं बार के बाद सबने लाल को छोड़ दिया था। किसी का साहस उस पर लगाने का न हुआ था। पर अनुभवी खिलाड़ियों ने काले पर भी नहीं लगाया था। अनुभवी खिलाड़ी जानते हैं कि 'अवसर के इस खिलवाड़' का अर्थ क्या होगा। इसका अर्थ होगा कि सोलह बार लाल जीतने के बाद सत्रहवीं बार भाग्य काले पर चला जाएगा। नए खिलाड़ी शीघ्र ही ऐसे निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं, दावों को दुगना-तिगुना कर देते हैं और भारी हानि उठाते हैं।

यह देखकर भी कि लाल सात बार आ चुका है, मैंने उसी पर दांव लगाया। मुझ पर जोखिम उठाने की तीव्र भावना छा गई थी। मेरी आत्मा इतनी सनसनियों में से गुज़रकर भी तृप्त नहीं हुई थी; वह केवल संतप्त हुई थी और पहले से भी अधिक तेज़ सनसनी मांगती थी। यदि नियम मुझे पचास हज़ार फ्लोरिन लगाने की छूट देते तो मैं निश्चय ही उन्हें लगा देता। लोग चिल्ला रहे थे कि लाल चौदह बार जीत चुका है। किसी ने कहा, "यह महाशय एक लाख फ्लोरिन समेट चुके हैं।"

मैं अचानक जागा। एक लाख फ्लोरिन। मुझे कितना और चाहिए? मैंने नोटों को जेबों में ठूंसा, सोने को समेटा और कैसीनो से बाहर भागा। बोझ के कारण मेरा लड़खड़ाना देखकर सब हंस रहे थे। मेरा बोझ बीस पौंड से अधिक ही रहा होगा। मेरे सामने कई हाथ फैले और मैंने मुट्ठी भर-भर दिया।

द्वार पर दो यहूदियों ने मुझे रोका। बोले, "तुम बहुत बहादुर हो। सुबह जल्दी-से-जल्दी यहां से चले जाना, नहीं तो इस सबको हार जाओगे।"

ऐवेन्यू में इतना अंधेरा था कि अपना हाथ दिखाई नहीं देता था। पर मुझे चोर-लुटेरों का ध्यान नहीं आया। मुझे अनुभव हो रही थी—सफलता, विजय, शक्ति; मैं नहीं समझता कि उसे कैसे व्यक्त करूं! पोलीना की मूर्ति मेरे सामने थी। मैं उसके पास जा रहा हूं। थोड़ी देर में उससे बात करूंगा, उसे दिखाऊंगा। पर मुझे यह याद नहीं था कि उसने मुझसे क्या कहा था और मैं क्यों गया था। ऐवेन्यू के अन्त में मैं अचानक घबरा गया। यदि मैं लुट जाऊं और मेरी हत्या हो जाए तो क्या होगा! घबराहट बढ़ी। मैं लगभग दौड़ने लगा। हमारे होटल की खिड़कियों का प्रकाश दिखाई दे गया। भगवान का धन्यवाद, घर आ गया।

मैं अपने कमरे में पहुंचा और तेज़ी से द्वार खोल दिया। पोलीना वहां थी सोफे पर—भुजाएं बांधे, मोमबत्ती सामने। उसने मेरी ओर आश्चर्य से देखा। निःसंदेह मैं कुछ विचित्र दिखाई देता हूंगा। मैं उसके सामने खड़ा हुआ और अपनी रकम के ढेर को मेज़ पर फेंकने लगा।

पन्द्रह

मुझे याद है कि उसने अपनी बेधक दृष्टि मेरे चेहरे पर जमा दी, पर बैठी वैसी ही, मूर्तिवत् रही। हिली भी नहीं।

"मैंने दो लाख फ्रैंक जीते हैं।" मैं चिल्लाया। नोटों और सोने के सिक्कों से मेज़ भर गई। मेरी दृष्टि उन पर से न हटी। उस क्षण मैं पोलीना को बिलकुल भूल गया। मैंने नोटों को सजाया-संवारा। और फिर एकाएक तेज़ी से कमरे में टहलने लगा—विचारमग्न। अचानक जागा, दरवाज़े की ओर दौड़ा और ताला लगा दिया।

अब मेरा ध्यान पोलीना की ओर गया। वह बैठी थी शांत, ध्यान से देखती। उसकी मुद्रा कुछ विचित्र थी। मुझे अच्छी नहीं लगी। उसमें घृणा की झलक थी।

मैं जल्दी से उसके पास गया और कहा, "पोलीना, ये रहे पचीस हज़ार फ्लोरिन अर्थात् पचास हज़ार फ्रैंक, उससे भी अधिक। लो, और उसके सामने फेंक दो। बोलो, मैं तड़के ही तुम्हें ले चलूंगा।"

वह अचानक हंस पड़ी और देर तक हंसती रही। यह हंसी मेरे ऊपर कुछ व्यंग्य की हंसी थी। वैसी ही जैसीकि अक्सर उसने हंसना बंद कर दिया। भौंहें चढ़ाईं और मेरी ओर कड़ाई से देखा।

"मैं तुम्हारी रकम नहीं लूंगी।" वह तिरस्कार से बोली।

"क्यों? क्या हुआ? पोलीना!" मैं चिल्लाया, "क्यों?"

"मैं रकम मुफ्त में नहीं लूंगी।"

"मैं तुम्हें मित्र की भांति दे रहा हूं, अपना जीवन···"

उसने मुझे ऐसे देखा मानो कि छेद डालेगी। "तुम मुझे बहुत अधिक दे रहे हो," वह हंसकर बोली, "द ग्रीय की प्रेमिका का मूल्य पचास हज़ार फ्रैंक नहीं है।"

"पोलीना, तुम ऐसी बातें क्यों करती हो? क्या मैं द ग्रीय हूं?"

"मैं तुमसे घृणा करती हूं। हां, मैं तुम्हें द ग्रीय से अधिक प्यार नहीं करती।" उसकी आंखें अचानक चमक उठीं। उसने अपना चेहरा हाथों से ढक लिया और तेज़ी से बोलने लगीं, जैसे हिस्टीरिया में। मैं उसकी ओर झपटा। मैंने अनुभव किया कि जब मैं बाहर था तो इसे कुछ हो गया है। वह बिलकुल विक्षिप्त मालूम हुई। "तुम मुझे खरीदना चाहते हो? पचास हज़ार फ्रैंक में? द ग्रीय की तरह?" उसकी सिसकियों के बीच से आवाज़ आई। मैं उसे अपनी भुजाओं में पकड़े रहा। मैंने उसके हाथ चूमे, उसके पैर; और उसके सामने घुटने टेके। उसकी बक-झक समाप्त हो गई।

उसने अपने दोनों हाथ मेरे कंधे पर रखे और ध्यान से मेरे चेहरे में कुछ पढ़ने का प्रयत्न किया। मेरी बातें उसके कानों में पड़ रही थीं, पर स्पष्ट ही वह उन्हें सुन नहीं रही थी। उसके चेहरे पर कुछ सन्देह और चिंताएं थीं और मैं उसके लिए चिंतित था। मुझे लग रहा था कि उसका मस्तिष्क बैठा जा रहा है। और तब वह धीरे-धीरे मुझे अपनी ओर खींचने लगी। उसके चेहरे पर विश्वास की मुसकान खेलने लगी। फिर अचानक उसने मुझे धक्का दे दिया और एक धुंधली दृष्टि से मुझे टटोलने लगी और यकायक मुझे छाती से लगाने लगी।

"तुम मुझसे प्रेम करते हो? करते हो न? क्यों तुम···क्यों तुम मेरे लिए बैरन से लड़ने को तैयार थे!" और वह अकस्मात् हंस पड़ी,

मानो उसे कोई मज़ेदार बात याद आ गई हो। वह रोई और हंसी, दोनों एक साथ। मैं क्या करता, मुझ पर स्वयं ज्वर चढ़ा था।

वह मुझसे कुछ कहने लगी। एक प्रकार का प्रलाप, एक उफान; मानो मुझसे कोई बात शीघ्रातिशीघ्र कह डालना चाहती हो। और बीच में फूट पड़ती थी अत्यंत विनोदी हंसी। इससे अंत में मैं डर गया। "नहीं, नहीं; तुम प्यारे हो प्यारे।" उसने दोहराया, "तुम मेरे सच्चे हो।" उसने दोनों हाथ मेरे कंधों पर रखे, "तुम मुझसे प्रेम करते हो! मुझे प्रेम करोगे!" मैं उस पर से आंखें नहीं हटा सका। मैंने उसे पहले कभी प्रेम और रमणीयता की ऐसी मनःस्थिति में नहीं देखा था। मेरी भावावेशी मुद्रा को देखकर वह धूर्तता से मुसकाने लगी और फिर बिना किसी प्रसंग मिस्टर ऐस्टली की बात करने लगी।

"वे निश्चय ही खिड़की के नीचे खड़े हुए हैं। हां, हां, जाओ खोलो और देखो। वे वहां हैं बाहर, अवश्य होंगे।" उसने मुझे खिड़की की ओर धक्का दिया। पर जब मैं जाने लगा तो हंसी की फुहार फूट पड़ी। मैं वहीं रह गया और वह मुझे चिपटाने लगी।

वह चिंतित हुई। अचानक बोली, "क्या हम कल चले जाएंगे? हम दादी को बर्लिन में पकड़ लेंगे। और मिस्टर ऐस्टली, वे श्लांगेनबर्ग से नहीं कूदेंगे। तुम्हारी क्या राय है?" वह हंस पड़ी। "क्या तुम जानते हो कि वे अगली गर्मियों में कहां जा रहे हैं? वे वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए उत्तरी ध्रुव जाना चाहते हैं। मुझे उन्होंने साथ चलने का निमंत्रण दिया है। हा, हा, हा, हा—वे कहते हैं कि हम रूसी यूरोपियनों के बिना कुछ नहीं कर सकते···पर उनकी प्रकृति अच्छी है। वे जनरल का बचाव करते हैं। वे कहते हैं कि ब्लांश···वह प्रेम···ओह, मैं नहीं जानती—मैं नहीं जानती," और फिर अचानक बोली, "तुम द ग्रीय को क्यों मारोगे? क्या तुम उसे मार सकोगे? अरे मूर्ख मनुष्य, क्या मैं तुम्हें द ग्रीय से लड़ने दूंगी? और तुमने बैरन को भी तो नहीं मारा?" उसने

हंसते हुए कहा, "मैं तुम दोनों को बेंच पर से देख रही थी और तब मैं कितनी हंसी थी, कितनी…!"

और अचानक उसने मुझे चूम लिया, चिपका लिया और भावावेश में अपने चेहरे को मेरे चेहरे से रमणीयता से दबाया। मैंने कुछ नहीं सुना, कुछ नहीं सोचा। मेरा सिर घूम रहा था…!

प्रातः जब मेरी आंख खुली तो पोलीना मेरी बगल में बैठी चारों ओर विचित्र रीति से देख रही थी, जैसे कि वह किसी अंधकार में से निकल रही हो और अपने विचारों को समेट रही हो। वह भी अभी जागी थी और मेज़ पर रकम की ओर देख रही थी। मेरा सिर भारी था। मैंने पोलीना का हाथ पकड़ना चाहा, पर उसने मुझे धक्का दिया और सोफे से उठ खड़ी हुई। उसने खिड़की खोली और बाहर झांकने लगी। मैं डर रहा था कि इसका अंत कैसे होगा? अचानक वह खिड़की पर से हटी, मेज़ पर पहुंची और असीम घृणा से मेरी ओर देखते हुए क्रोध-कम्पित स्वर में बोली, "हां, तो अब तुम मुझे मेरे पचास हज़ार फ्रैंक दो।"

"पोलीना, फिर, फिर…।" मैंने कहना आरम्भ किया।

"तो तुमने अपना विचार बदल दिया है? हा हा हा…"

कल संध्या के गिने हुए पचीस हज़ार फ्लोरिन मेज़ पर पड़े हुए थे। मैंने रकम उठाई और उसे दी।

"यह अब मेरी है न? है न?" उसने द्वेष-भावना से उसे हाथ में थामे हुए पूछा।

"हां, यह सदा ही तुम्हारी थी।" मैंने उत्तर दिया।

"तो ये रहे तुम्हारे पचास हज़ार फ्रैंक।" उसने रकम मेरे चेहरे पर दे मारी। सिक्के सब ओर फैल गए और पोलीना कमरे से भाग निकली।

मैं जानता हूं कि उस समय उसका मस्तिष्क ठीक नहीं था,

यद्यपि ऐसा अस्थायी पागलपन मेरी समझ में नहीं आता। यह सही है कि वह अब भी, महीने-भर बाद भी, बीमार है। उसकी उस दशा का कारण क्या था? क्या वह चोट खाया वर्ग था? मुझ तक आने को विवश होने की खीज थी? क्या मैंने अपनी प्रसन्नता का, गर्व का कोई चिह्न दिखाया था? क्या मैंने पचास हज़ार फ्रैंक देकर द ग्रीय की भांति उससे छुटकारा पाना चाहा था? मैं समझता हूं कि इसका उत्तरदायी अंशतः उसका मान है। उसके मान ने कहा कि मेरा अविश्वास और अपमान करे। यद्यपि शायद यह सब उसे भी स्पष्ट न था। मुझे निश्चय ही द ग्रीय के लिए दण्ड दिया गया। मैं जानता था कि वह उन्मत्त है, और मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। शायद उसके लिए वह मुझे क्षमा नहीं कर सकती। पर वह उस समय इतनी बीमार नहीं थी कि उसे पता ही न चला हो कि वह क्या कर रही है।

मैंने जल्दी से सब रकम बिस्तर में ठूंस दी और पोलीना के कमरे की ओर चला। सीढ़ियों पर आया मिली। उससे पता चला कि वह अभी घर पर नहीं पहुंची है।

"वह अभी दस मिनट हुए मेरे कमरे से आई है। जा कहां सकती है?" आया ने मेरी ओर तिरस्कार से देखा।

बात फैल गई। लोग फुसफसाए—कुमारी प्रातःकाल वर्षा में होटल से बाहर भागी हैं और अंग्रेज़ी होटल की ओर गई हैं। सब जानते हैं कि उसने रात मेरे कमरे में बिताई है। चर्चा पूरे परिवार की है। जनरल पागल हो गया है और रो रहा है। दादी उसकी मां थीं जो रूस से कुमारी ब्लांश के साथ अपने पुत्र का विवाह रोकने आई थीं। उनकी आज्ञा नहीं मानी गई, इसलिए काउण्टेस जान-बूझकर अपनी सब रकम रूलेट पर फेंक गईं, जिससे कि जनरल को कुछ न मिल सके। मेरी जीत की बात सबको मालूम हो गई थी। गलियारे के नौकर ने मुझे सबसे पहले बधाई दी। मैं तुरन्त अंग्रेज़ी होटल

पहुंचा। मिस्टर ऐस्टली मेरे लिए गलियारे में निकल आए। मैंने पोलीना के बारे में पूछा।

"वह बीमार है।" उन्होंने मेरी ओर देखते हुए कहा।

"तो वह वास्तव में आपके पास है? क्या आप उसे यहीं रखना चाहते हैं?"

"हां।' वे बोले।

"यह अनुचित है मिस्टर ऐस्टली! यह एक कलंक-चर्चा बन जाएगी। और वह बीमार है। शायद आप..."

"हां, वह बीमार है। यदि बीमार न होती तो रात तुम्हारे साथ न बिताती।"

"तो आप यह जानते हैं?"

"हां, वह कल यहां आई थी। मैं उसे अपने एक सम्बन्धी के यहां ले जानेवाला था। पर वह बीमार थी। उसने गलती की और तुम्हारे यहां पहुंची।"

"आपको बधाई है मिस्टर ऐस्टली! हां, क्या आप रात को हमारी खिड़की के नीचे खड़े थे? कुमारी पोलीना रात-भर खिड़की खुलवाकर आपके लिए बाहर झंकवाती रही और इस बारे में निरन्तर हंसती रही।"

"सच? मैं खिड़की के नीचे नहीं था। गलियारे में प्रतीक्षा कर रहा था। हां, सुनो। मैंने डॉक्टर को बुलाया है। यदि वह मर जाती है तो तुम मेरे प्रति उसकी मृत्यु के लिए उत्तरदायी होगे।"

मैं चकित हुआ, "आप क्या चाहते हैं?"

"सुना है, तुमने बड़ी रकम जीती है? हां, तो तुम्हें आज प्रातः पेरिस चले जाना चाहिए। सब रूसी, जिनके पास रकम होती है, पेरिस जाते हैं।"

"गर्मियों में मैं पेरिस में क्या करूंगा? मैं उससे प्रेम करता हूं, मिस्टर एस्टली, आप स्वयं जानते हैं।"

"सच? पर मेरा विश्वास है कि तुम आज पेरिस अवश्य जाओगे।"

"अच्छा विदा। पर मैं पेरिस नहीं जाऊंगा।"

मैं इस अंग्रेज़ के विचित्र विश्वास पर हंसता हुआ लौटा। मैंने सोचा कि यद्यपि वह द्वंद्वयुद्ध में मुझे गोली मारना चाहता है, पर निश्चय ही पोलीना के लिए दुःखी है। हां, जब मैं जुए की मेज़ पर जीतने लगा था तभी मेरा प्रेम एक तरह से पृष्ठभूमि में चला गया था! नहीं, मैं आज भी पोलीना से प्रेम करता हूं। परमात्मा साक्षी है।

मैं लौटा। जनरल की ओर लपका जा रहा था कि बीच में श्रीमती कौमिंग्स ने पुकारा। मैं उनके कमरे में गया तो कुमारी ब्लांश की हंसी सुनाई दी। वे शयनकक्ष से बोलीं, "भीतर आ जाओ।"

वे एक गुलाबी चादर के नीचे पड़ी थीं। उसमें से उनके विचित्र श्यामल कंधे झलक रहे थे। स्वप्निल कंधे! अत्यन्त रमणीक!

"तुमने रकम जीती है! हां, क्या तुम्हारे हृदय है?" वे चिल्लाईं और खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

मैंने बोलना आरम्भ किया, पर वे जैसे उफनीं, "अच्छा तो तुम पहले मेरे मोज़े ढूंढ़ो और पहनने में मेरी सहायता करो। और पेरिस को मैं अभी जा रही हूं।" उनका सामान बंधा-बंधाया तैयार था।

"तो अभी तुम मुझे पचास हज़ार फ्रैंक दोगे, फ्रैंकफर्ट में। पेरिस में हम दोनों साथ खेलेंगे। पेरिस में मैं तुम्हें अभिनेत्रियों से मिलाऊंगी। हम महीने, दो महीने साथ रहेंगे और निश्चय ही तुम्हारे शेष डेढ़ लाख को समाप्त कर देंगे।"

"सबको दो महीने में?"

"क्यों, डर लगता है? तुम नहीं जानते कि इस प्रकार का एक महीना तुम्हारे समस्त जीवन के बराबर है। तो जाओ, तुम इस योग्य नहीं हो।"

मैं उन्हें दूसरे पैर में मोज़ा पहना रहा था। मैं अचानक विवश

हो गया और उसे चूम लिया। उन्होंने पैर खींच लिया। अपने पैर के सिरे से मेरे सिर पर प्रहार करने लगीं और अंत में मुझे बाहर निकाल दिया। जब मैं चला तो चिल्लाई, "मैं पन्द्रह मिनट में जा रही हूं।"

मेरा सिर घूम रहा था। पोलीना ने रकम का ढेर मेरे चेहरे पर दे मारा था और कल ही मेरी तुलना में मिस्टर ऐस्टली को पसन्द किया था। नहीं, इसमें मेरा दोष नहीं है। मैं शांत खड़ा हो गया। कुछ सोचा। होटल का बिल चुकाया। आध घंटे बाद हम एक रिज़र्व डिब्बे में बैठे हुए थे—कुमारी ब्लांश, उनकी मां और मैं।

कुमारी ब्लांश हंस रही थीं। उनकी मां भी। मैं सचमुच प्रसन्न था। मेरा जीवन दो टूक हो गया था। मैं कल से सब कुछ दांव पर लगाने का अभ्यासी हो गया था। शायद मैं अचानक अपने धन को नहीं संभाल सका था। मैं एक महीने यहीं रहूंगा और फिर···? नहीं, अब मुझे याद आता है कि मैं उस समय, यद्यपि हंस रहा था, पर अत्यन्त उदास था।

"तुम्हें क्या हो गया है मूर्ख! तुम कितने मूर्ख हो!" ब्लांश अपनी हंसी को बीच-बीच में रोककर मुझे गाली देती रहीं, "हां, हम तुम्हारे दो लाख फ्रैंक खर्च करेंगे। तुम एक नन्हे राजा की भांति प्रसन्न होगे। जब रकम समाप्त हो जाएगी, तो तुम यहां आना और बैंक को फिर लूटना। हां, सबसे बड़ी बात है निर्भीकता और वह तुममें है।"

"और जनरल?" मैंने पूछा।

"जनरल, तुम जानते हो कि वह नित्य मेरे पास फूल लेकर आता है। आज मैंने जान-बूझकर उससे बहुत दुर्लभ फूल मंगाए हैं। बेचारा आएगा और पाएगा कि चिड़िया उड़ गई है। वह मेरे पीछे उड़ेगा और तुम देखना। मैं उससे मिलकर अत्यन्त प्रसन्न हूंगी। वह पेरिस में मेरे काम आएगा। यहां मिस्टर ऐस्टली उसका बिल चुका देंगे।"

तो इस प्रकार मैं पेरिस पहुंचा।

सोलह

पेरिस की बात क्या कहूं! यह पागलपन था, निश्चय ही मूर्खता। मैंने वहां तीन सप्ताह से कुछ ही अधिक समय बिताया और मेरे एक लाख फ्रैंक समाप्त हो गए। दूसरे एक लाख मैंने कुमारी ब्लांश को नकद दिए। वे मुझे सदा अध्यापक कहती थीं। उन्होंने मुझे बाद को स्पष्ट बताया, "अब मैं सदा के लिए एक भले ढंग से पेरिस में स्थापित हुई जा रही हूं। अब कोई मुझे काफी समय तक यहां से हटा न सकेगा। कम-से-कम मेरा कार्यक्रम अभी तो यह है।" उन्होंने रकम अपने पास रखी और मेरे बटुए में, जिसे वे नित्य टटोल लिया करती थीं, कभी एक सौ फ्रैंक से अधिक नहीं होते थे और उनकी संख्या निरन्तर घटती जाती थी।

"तुम्हें रकम किस वास्ते चाहिए?" वे कभी-कभी बड़ी सरलता से कहतीं और मैं चुप रहता। उन्होंने उस रकम से अपने फ्लैट को सुन्दरता से सजाया और बाद में, जब वे मुझे अपने नये निवास में ले गईं और कमरे दिखाए तो बोलीं, "तुम देखते हो कि अत्यन्त छोटी रकम से भी सावधानी तथा सुरुचि के साथ क्या किया जा सकता है!" और यह अत्यन्त छोटी रकम पचास हज़ार फ्रैंक थी। उन्होंने गाड़ी-घोड़े खरीदे। पार्टियां दीं, जिनमें मुझे मेज़बान का अत्यन्त

मूर्खतापूर्ण पार्ट अदा करना पड़ा। वहां थीं सुन्दर रमणियां, अत्यन्त मूर्ख, धनी, निर्लज्ज व्यापारी, दुःखित लेखक और पत्रकार—फैशनेबल कोट और दस्ताने पहने। बहुतों ने मुझे चिढ़ाना उचित समझा। पर मैं शैम्पेन पीकर मदहोश हो गया और पिछले कमरे में लुढ़क रहा। मुझे यह बहुत अधिक घृणित मालूम हुआ। "अध्यापक, कोरा अध्यापक!" ब्लांश मेरे बारे में बार-बार कहतीं, "इसने एक लाख फ्रैंक जीते। मेरे बिना इसे पता ही न चलता कि उन्हें कैसे खर्च करे! और इसके बाद वह फिर अध्यापक रहेगा। क्या तुम उसे कोई जगह नहीं दिला सकते?"

मैं अक्सर पीकर धुत हो जाता और उदास रहता था। मैं अत्यन्त ओछी और पैसा-प्रेमी परिस्थितियों में रहता था। पहले पखवाड़े ब्लांश ने मुझे पसन्द नहीं किया। यह सच है कि वे मुझे एक छैले के समान कपड़े पहनाती थीं, पर भीतर से मुझे घृणा करती थीं। मैं उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता था।

अन्त में ब्लांश ने मेरे चरित्र की थाह पा ली। किसी कारण उनके मन में यह विचार उठा कि हम सब समय एकसाथ रहें, और मैं कागज़-पेंसिल लेकर उनके पीछे घूमूं और इस बात का हिसाब रखूं कि उन्होंने कितना खर्च किया है, कितना चुराया है, कितना खर्च करेंगी और कितना चुराएंगी। वे विश्वास करती थीं कि हमें नियमित रूप से प्रत्येक दस फ्रैंक के सिक्के पर झगड़ना चाहिए। पर मैं सदा शांत रहता। पहले उन्होंने सोचा कि मैं एक मूढ़ अध्यापक-मात्र हूं। वे ऐसी तेज़ी से खर्च करतीं जो हमारी बिसात के बाहर था, और फिर मेरे पास आकर कहतीं, "तुम नाराज़ तो नहीं हो?"

"नाराज़ मैं क्यों हूं? तुम अपने लिए आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध कर रही हो। तुम्हें अपने-आपको इस ढंग से स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। नहीं तो तुम अपने लाखों नहीं बचा सकोगी। एक लाख तो आरम्भ-मात्र है, सागर में एक बूंद।"

ब्लांश ने आशा की थी कि मैं चिल्लाऊंगा, उन्हें बुरा-भला कहूंगा। पर जब उन्होंने मेरी बात सुनी तो वे आसमान से गिरीं।

"तुम्हें तो राजकुमार होना चाहिए था। तो तुम रकम के इतने शीघ्र खर्च हो जाने से नाराज़ नहीं हो?"

"यह कमबख्त जितनी जल्दी खर्च हो उतना ही अच्छा। मैं हामबर्ग जाऊंगा और फिर जीत लाऊंगा।"

"क्या शान है! तुम निश्चय ही जीतोगे और यहां लाओगे। मैं तुमसे प्रेम करूंगी। कभी धोखा न दूंगी। तुम जानते हो कि मैंने इस बार तुम्हें प्यार नहीं किया है, पर मैं तुम्हारे प्रति सच्ची रही हूं।"

"तुम झूठ बोल रही हो। वह श्यामल चेहरे का छोटा अफसर···"

"ओह, मेरे···"

"झूठ मत बोलो। तुम यह क्यों मानती हो कि मैं क्रोध करूंगा। यदि वह मुझसे पहले तुम्हारा रहा है और तुम उसे चाहती हो, तो उसे रखो। केवल उसे रकम न देना। समझीं?"

"तो तुम क्रुद्ध नहीं हो! तुम बड़े दार्शनिक हो।" वे उत्साह से चिल्लाईं, और उस समय से मेरे प्रति आकर्षित और मुझसे सचमुच प्रेम करती दिखाई दीं। हमारे अंतिम दस दिन इस प्रकार गुज़रे।

मैं चाहता था कि किसी तरह यह घटना समाप्त हो। पर हमारे एक लाख फ्रैंक लगभग एक महीना चले। ब्लांश अंत में मुझसे खुल गई थीं, कम-से-कम कुछ बातों के बारे में झूठ नहीं बोलती थीं। उन्होंने कहा कि उन्होंने जो कर्ज़ लिए हैं उनका देनदार मैं नहीं हूं। "इस प्रकार," वे बोलीं, "तुम देखते हो कि मैंने तुम्हें कितना प्यार किया है और मैं कितनी भली हूं! ज़रा सोचो तो, मुझे अकेले विवाह पर ही कितना खर्च करना पड़ेगा!"

सचमुच हमारे यहां एक विवाह महीने के बिलकुल अन्त में हुआ। मेरे लाख फ्रैंकों का अन्तिम भाग उसमें लग गया। उसके बाद मुझे औपचारिक रूप से धता बता दिया गया।

बात यह हुई—पेरिस में हमारे पहुंचने के एक सप्ताह बाद अचानक जनरल भी आ गया। ब्लांश ने उसका स्वागत किया आनन्द से, हंसी की चीत्कारों से और उसे हृदय से लगाने के लिए दौड़ भी पड़ीं। वे उसे जाने देने को तैयार न थीं। वह लगभग हमारे साथ ही रहने लगा। वह सब सार्वजनिक स्थानों पर ब्लांश के पीछे-पीछे जाता था। वह देखने में शानदार था, सजावटी, साधारण से अधिक ऊंचा, रंगे गलमुच्छे और मूंछें, देखने में रोबीला और चाल-ढाल बढ़िया। सैरगाह में ऐसे पुरुष के साथ टहलना उचित ही नहीं लाभदायक भी था। भला और मूर्ख जनरल इससे तुरंत प्रसन्न हो गया। उसे भय था कि ब्लांश उसे देखकर शोर मचाएंगी और उसे बाहर निकलवा देंगी। इसलिए वह प्रसन्न था और उसने एक महीना इस निरर्थक आनन्द में बिताया।

ब्लांश के अकस्मात् विछोह से जनरल विक्षिप्त-सा हो गया था। वह किसी गंभीर विषय पर सोचने या बात करने के बिलकुल अयोग्य था। कभी-कभी वह घंटों अपनी झाड़ी-सी भौंहें चढ़ाता बैठा रहता था। उसे बहुत-सी बातें बिलकुल याद नहीं थीं। केवल ब्लांश ही उसमें उत्साह फूंक सकती थीं। वह यह नहीं बता सकता था कि वह क्या चाहता है। ब्लांश के अभाव में वह घबराकर चारों ओर देखने लगता था और फिर उस समय तक विस्मृति में डूब जाता था जब तक कि ब्लांश खिलती, थिरकती, शानदार वस्त्र पहने, अपनी गूंजती हंसीसहित आकर उसे छेड़ने और चूमने न लगती थीं। यह एक दया थी जो वे अक्सर न दर्शाती थीं।

बिलकुल आरम्भ से ही ब्लांश मुझसे उसकी सिफारिश करने लगी थीं। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि मेरे कारण उन्होंने जनरल को धोखा दिया है, उसे मैं अपना वचन दे चुकी थी···और अंत में यह कि मैं उसका नौकर रहा हूं; यह बात मुझे याद रखनी चाहिए और मुझे लज्जित होना चाहिए।···वे धड़ाधड़ बोलती गईं। मैं चुप रहा।

उन्होंने सांस ली तो मैं हंस पड़ा। पहले उन्होंने सोचा कि मैं मूर्ख हूं और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुंचीं कि मैं दूसरों की सुविधा का ध्यान रखनेवाला बहुत बढ़िया पुरुष हूं। पिछले दिनों मुझे उस अत्यन्त उत्तम युवती की सम्पूर्ण सहानुभूति प्राप्त हो गई। वे मुझसे कहने लगी थीं, "तम एक दयालु और चतुर व्यक्ति हो और यह बड़े दुःख की बात है कि तुम इतने मूर्ख हो कि कुछ नहीं बचाते।"

उन्होंने मुझे कई बार जनरल के साथ घूमने के लिए भेजा, जैसे कि वे अपने प्यादे को अपने नन्हे कुत्ते के साथ भेजतीं। यद्यपि जनरल ने यह सुना था कि मैंने बड़ी रकम जीती है, पर वह यही समझता था कि मैं ब्लांश के साथ सेक्रेटरी या नौकर की हैसियत से हूं। वह मुझसे पहले की भांति ही बोलता था और कभी-कभी भला-बुरा भी कहने लगता था।

एक बार मैंने उसके बच्चों के बारे में बातचीत करनी चाही। पर वह एक असम्बद्ध बड़बड़ाहट के बाद बोला, "हां, हां, मेरे बच्चे, तुम ठीक कहते हो, मेरे बच्चे, हां मेरे दुःखी बच्चे!" और फिर किसी दूसरी ओर बहक गया। जब मैंने पोलीना का नाम लिया तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हो गया। "वह कृतघ्न लड़की!" वह चिल्लाया, "उसने अपने परिवार को कलंकित किया है; यदि यहां कानून होता तो मैं उसे ठीक कर देता। हां निश्चय ही! और द ग्रीय! उसका तो···उसने मुझे बरबाद कर दिया है, मुझे लूट लिया है, मुझे···"

मैंने देखा कि उनके बीच एक समझौता है। मैं कुछ बोला नहीं। ब्लांश ने मुझे विदा देने के सात दिन पहले खबर सुनाई, "अवसर की बात है," वे बोलीं, "इस बार दादी सचमुच बीमार हैं और निश्चय ही मर जाएंगी। मिस्टर ऐस्टली ने तार भेजा है। यह तो मानोगे ही कि जनरल उनका उत्तराधिकारी है, और यदि न भी हो, तो भी मेरे कार्य में बाधा नहीं डालेगा। पहले तो उसकी पेंशन है और दूसरे वह पिछले

कमरे में रहेगा और पूर्ण प्रसन्न रहेगा। मैं श्रीमती जनरल बनूंगी। ऊंचे समाज में पहुंचूंगी, और अन्त में एक रूसी जागीरदारिन बन जाऊंगी।"

"हां, पर यदि उसे ईर्ष्या होने लगे...जानती हो किससे?"

"कभी नहीं, उसका साहस ही न होगा। मैंने सावधानी बरत ली है। चिंतित न हो। मैंने एल्बर्ट के लिए उससे प्रोमेसरी पर हस्ताक्षर करा दिए हैं। वह तनिक भी भिनका तो तुरन्त जेल भेज दिया जाएगा।"

"तो कर लो विवाह उससे...।"

विवाह विशेष धूमधाम के बिना एक घरेलू कार्यक्रम की भांति सम्पन्न हुआ। एल्बर्ट और कुछ घनिष्ठ मित्र ही आमंत्रित थे। जनरल अपने कोट और सफेद टाई में जंच रहा था।

उसके जंचने की बात मुझसे ब्लांश ने स्वयं उसके कमरे से निकलते हुए कही थी, मानोकि उसे इस पर आश्चर्य हुआ हो। यद्यपि मैंने इस सबमें उनकी सहायता एक निष्क्रिय दर्शक की भांति की थी, फिर भी मैंने इस कार्य की बारीकियों पर इतना कम ध्यान दिया था कि अब अधिकतर बातें भूल गया हूं। मुझे इतना याद है कि ब्लांश का नाम द कौमिंग्स नहीं निकला और उनकी मां भी द कौमिंग्स के स्थान पर दु प्लैसे निकलीं। मुझे पता नहीं कि वे अब तक अपने को द कौमिंग्स क्यों कहती थीं। पर जनरल इससे बहुत प्रसन्न रहा। विवाह के दिन अपने कार्य के लिए पूर्णतया तैयार होकर वह बैठक में इधर-उधर टहलता रहा और बड़ी गम्भीरता तथा महत्त्व के साथ बार-बार दुहराता रहा, "कुमारी ब्लांश दु प्लैसे, ब्लांश दु प्लैसे, दु प्लैसे...!" और उसके चेहरे पर एक विशेष बड़प्पन झलकने लगा। गिरजे में, मेअर के सामने घर में, विवाह कलेवे के समय वह न केवल आनन्दित था, वरन गर्वित भी। उन दोनों पर एक परिवर्तन आ गया था। ब्लांश पर भी एक विशेष महत्त्व की भावना छा गई थी।

"मुझे अब बिलकुल दूसरे ढंग से रहना-सहना होगा!" ब्लांश ने मुझसे बड़ी गंभीरता से कहा, "मैंने इस बारे में गंभीरता से कभी नहीं सोचा था। आज भी लगता है कि मैं अपने कुल नाम का उच्चारण नहीं सीख सकूंगी—त्सागो रैंस्की, सागोवैंस्की, मैडेम ला जनरल द सागो...सागो...ये शैतान की आंत रूसी नाम!"

अंत में हम अलग हुए। जब मैंने विदा ली, तो ब्लांश ने, उस भोली ब्लांश ने निश्चय ही आंसू बहाए। "तुम सुन्दर बच्चे," उसने सिसकते हुए कहा, "तुम जा रहे हो। हां!" और फिर मेरा हाथ दबाकर वे अचानक बोलीं, "ठहरो!" वे अपनी अलमारी के पास दौड़ गईं और दो मिनट बाद मेरे लिए दो हज़ार फ्रैंक का नोट ले आईं। मैंने इसे कभी सम्भव नहीं समझा था।

"यह तुम्हारे काम आएगा। तुम विद्वान् अध्यापक हो सकते हो, पर पुरुष बहुत मूर्ख हो। मैं तुम्हें दो हज़ार से अधिक नहीं दूंगी, क्योंकि तुम इसे जुए में हार जाओगे। अच्छा, अब विदा। यदि तुम फिर जीतो तो मेरे पास अवश्य आना। तुम प्रसन्न होगे।"

मेरे पास अपने पांच सौ फ्रैंक थे। इसके अतिरिक्त हज़ार फ्रैंकों की एक शानदार घड़ी और कुछ हीरे के बटन आदि भी थे। मतलब यह कि मैं अभी कुछ समय निश्चितता के साथ बिता सकता था। मैं इस छोटे नगर में इसलिए ठहरा हुआ हूं कि अपने को संभालूं। और इससे भी अधिक इसलिए कि मैं मिस्टर ऐस्टली से मिलने की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मुझे यह मालूम हुआ है कि वे इस नगर से गुजरेंगे और किसी काम से यहां चौबीस घंटे ठहरेंगे। मैं उनसे सब बातों का पता लगाऊंगा और फिर हामबर्ग चला जाऊंगा। मैं रूलेटनबर्ग नहीं जा रहा हूं, कम-से-कम नए वर्ष तक। लोग कहते हैं कि एक ही मेज़ पर दो बार अपना भाग्य आज़माना अच्छा नहीं होता, और खेल का असली स्थान तो हामबर्ग ही है।

सत्रह

मुझे इस कथा पर दृष्टि डाले एक वर्ष आठ महीने हो गए हैं। अब केवल उदासी और निराशा में मुझे सूझा है कि मैं इसे पढ़ डालूं। हां, तो मैं हामबर्ग जाने से रुक गया। हे भगवान, किस हलके हृदय से मैंने वे अंतिम पंक्तियां लिखी थीं! हलके हृदय से न सही, पर एक आत्मविश्वास से, अदम्य आशा से। क्या मुझे अपने ऊपर तनिक भी संदेह था? और अब डेढ़ वर्ष हो गया है, और मैं अपने को भिखारी से भी बदतर लगता हूं। हां, भिखारी! मैंने अपने को बरबाद कर लिया है। मैं अपनी तुलना किससे करूं? मुझे नैतिक प्रवचन की आवश्यकता नहीं है। इस समय नैतिक चिंतन से बड़ी मूर्खता दूसरी न होगी। आज आत्मसंतुष्ट बकवादी लोग गर्वित भाव से मुझे भाषण देने की तैयारी करते हैं। यदि वे केवल यह जानते कि मैं अपनी वर्तमान स्थिति की घृणास्पदता को कितनी पूर्णता से समझता हूं, तो उनकी जिह्वाएं मुझे ताड़ना देने को न खुलतीं। वे ऐसा क्या बता सकते हैं जो मैं नहीं जानता? और क्या यही बात है? बात यह है कि पहिये का एक चक्कर, और दुनिया बदल जाती है—और तब, यही नैतिकतावादी, मुझे पूर्ण विश्वास है कि सबसे पहले मित्रतापूर्ण मज़ाकों से मुझे बधाई देंगे। तब वे आज की भांति मुझसे

न भागेंगे। पर मैं अब क्या हूं? शून्य! कल क्या हूंगा? कल मैं फिर उठ सकता हूं, फिर जीना आरम्भ कर सकता हूं। अब भी मुझमें मनुष्य के अंकुर मौजूद हैं।

मैं हामबर्ग गया और फिर रूलटेनबर्ग । मैं बादेन में रहा, कौंसलर गिन्तसे—एक दुष्टात्मा—का नौकर, टहलुआ, पूरे पांच महीने! मुझे जेल से निकलते ही यह जगह मिल गई थी (मैं रूलटेनबर्ग में लिए एक ऋण के कारण जेल भेजा गया था)। मैं नहीं जानता कि मेरा ऋण किसने चुकाया—मिस्टर ऐस्टली ने? पोलीना ने? पर दो सौ टेलर का यह ऋण चुक गया और मैं छोड़ दिया गया। मैं तीन भाषाएं लिख-पढ़ सकता था। तीस गुल्डेन प्रति मास पर गिन्तसे का सेक्रेटरी लग गया। पर क्योंकि सेक्रेटरी उसके बूते से बाहर था इसलिए उसने मेरा वेतन घटा दिया और मैं मामूली टहलुआ रह गया। कहीं जा नहीं सकता था इसलिए स्वयं पूरा टहलुआ बन गया। यहां मुझे खाने-पीने को तो काफी नहीं मिला, पर मैंने पांच महीने में सत्तर गुल्डेन बचा लिया। और एक दिन उससे कह दिया कि अब मैं जा रहा हूं। मैं रूलेट पर पहुंचा।

ओह, मेरा दिल कैसा धड़का! मैं रकम नहीं चाहता था। मैं केवल इतना ही चाहता था कि ये सब, गिन्तसे, बड़े बैरे, बादेन की शानदार महिलाएं मेरी बात करें, मेरी कहानी कहें, मुझ पर आश्चर्य करें, प्रशंसा करें, स्तुति करें और मेरी नई सफलता का आदर करें। ये स्वप्न और ये इच्छाएं बचकानी हैं। पर कौन जानता है कि मैं फिर शायद पोलीना से मिलूं और वह भी जाने कि मैं भाग्य के इन सब मूढ़ उतार-चढ़ाओ से ऊपर हूं। हां, मुझे रकम प्यारी नहीं थी। मैं यह जानता था कि मैं उसे फिर किसी ब्लांश पर फेंक दूंगा। मैं यह निश्चित रूप से जानता हूं कि मैं ओछा नहीं हूं, कंजूस नहीं हूं; और फिर भी किस कम्प के साथ, हृदय की किस सनसनी के साथ, क्रोपिअर का घोष सुनता

हूं—इकतीस, लाल, विषम, पास अथवा चार, काला, सम, मांक; और किस लालच से जुए की उस मेज़ को देखता हूं, जिस पर सिक्के बिखरते हैं, सोने के टुकड़े क्रोपिअरों के हाथों से दहकते अंगारों की भांति उतरते हैं; अथवा गज़-भर ऊंचे चांदी के ढेर पहिये के चारों ओर लगे रहते हैं। जुआघर में प्रवेश करते ही दो कमरे दूर से जब सिक्कों की खनक कान में पड़ने लगती है, तो मुझे दौरे से आने लगते हैं।

ओ, वह संध्या, जब मैं सत्तर गुल्डेन लेकर जुए की मेज़ पर पहुंचा, उल्लेखनीय थी। मैंने दस गुल्डेन पास पर लगाकर खेल आरम्भ किया। पास के पक्ष में मुझमें एक पूर्वाग्रह है। मैं हारा। मेरे पास साठ गुल्डेन बचे। मैंने थोड़ा सोचा और शून्य को चुना। मैंने प्रति बार शून्य पर पांच गुल्डेन लगाना आरम्भ किया। तीसरे चक्कर में पहिया शून्य पर ठहरा। मुझे एक सौ पचहत्तर गुल्डेन मिले। मैं आनन्द से भर गया। इतना आनन्द मुझे उस समय भी नहीं हुआ था जब मैंने एक लाख गुल्डेन जीते थे। मैंने तुरंत सौ गुल्डेन लाल पा लगाए, वह जीता। दो सौ लाल पर, वह जीता। सब चार सौ काले पर, वह जीता। सब आठ सौ मांक पर, वह जीता। अब मेरे पास पहले के गुल्डेन मिलाकर एक हज़ार गुल्डेन हो गए और यह पांच मिनट से भी कम समय में। ऐसे समय में मनुष्य अपनी सब पुरानी असफलताओं को भूल जाता है। क्यों, मैंने इसे जीवन से भी अधिक को खतरे में डालकर पाया। डालने का साहस किया और—अब मैं फिर मनुष्यों के बीच एक मनुष्य था।

मैंने होटल में कमरा लिया और उसमें बन्द तीन बजे तक रकम गिनता रहा। सुबह उठा तो मैं अब टहलुआ नहीं था। मैंने उसी दिन हामबर्ग जाने का निश्चय किया। गाड़ी छूटने से आध घंटे पहले मैं केवल दो दांव लगाने के लिए गया और पन्द्रह सौ क्लोरिन हार गया। मैं फिर भी हामबर्ग आया और एक महीने से यहां हूं।

यहां निश्चय ही मैं निरंतर चिंतित रहा हूं। मैं बहुत छोटे दावों

से खेलता हूं। मैं हिसाब लगाता हुआ जुए की मेज़ पर दिन-भर खड़ा हुआ और खेल को देखता हुआ किसी वस्तु की प्रतीक्षा करता रहता हूं। मैं खेलने के स्वप्न देखता हूं, पर लगता है कि मैं अब जड़, लकड़ी का हो गया हूं, जैसे कि एक दलदल में फंस गया हूं। यह मैं अपनी उन भावनाओं से समझता हूं जो मुझमें उस समय थीं जब मैं मिस्टर ऐस्टली से मिला। यह भेंट अकस्मात् हो गई। मैं बाग में टहल रहा था और सोच रहा था कि जेब अब लगभग खाली है। मेरे पास पचास गुल्डेन हैं। तीन दिन पहले मैंने होटल का बिल चुका दिया है और मैं अब फिर एक बार रूलेट पर जा सकता हूं। यदि मैं जीतता हूं तो आगे खेल सकता हूं और यदि हारता हूं तो फिर टहलुआ बनना पड़ेगा। हां, यदि कोई ऐसा रूसी मिल जाए जिसे अध्यापक की आवश्यकता हो, तो बात दूसरी है। इन विचारों में मग्न मैं नित्य पार्क में होकर निकट के वन में टहलने जाता था।

कभी-कभी मैं चार घंटे तक टहलता रहता और भूख तथा थकन से विवश हामबर्ग लौटता। मैं अभी बगीचे से पार्क में पहुंचा ही था कि अचानक मिस्टर ऐस्टली एक सीट पर बैठे दिखाई दिए। उन्होंने मुझे पहले देख लिया और पुकारा। मैं उनकी बगल में बैठ गया। उनके रंग-ढंग में एक औपचारिकता अनुभव की, तो मैंने तुरंत अपनी प्रसन्नता को कम कर दिया। यद्यपि मैं उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ था।

"तो, तुम यहां! मैंने सोचा कि मैं तुमसे मिलूं।" उन्होंने मुझसे कहा, "बस, अपनी कहानी सुनाने का कष्ट न उठाओ। मैं सब जानता हूं। तुम्हारे जीवन के इस एक वर्ष आठ महीने की कोई बात मुझसे छिपी नहीं है।"

"आप अपने मित्रों पर बड़ी दृष्टि रखते हैं," मैं बोला, "यह आपकी सज्जनता है कि आप उन्हें नहीं भूलते। ठहरिए। हां, क्या

आपने ही मुझसे रूलटेनबर्ग की जेल से छुड़ाया है? किसी अज्ञात व्यक्ति ने मेरे लिए दो सौ गुल्डेन का कर्ज़ चुकाया है।"

"मैंने नहीं। हां, मैं यह जानता हूं कि तुम जेल में थे।"

"और मेरा कर्ज़...?"

"मैं नहीं कह सकता कि किसने तुम्हारी मुक्ति खरीदी।"

"आश्चर्य है! मैं यहां किसी और को नहीं जानता जो मेरी मुक्ति खरीदने में रुचि ले सकता हो। मैं समझता था कि यह कोई पागल अंग्रेज़ है जिसने तमाशे के तौर पर यह काम किया है।"

मिस्टर ऐस्टली ने मेरी बात आश्चर्य से सुनी। मैं समझता हूं कि वे मुझे निराश और पराजित पाने की आशा करते थे। उन्होंने मेरे जीवन की आलोचना की। पुरानी बातों की ओर संकेत किया और बोले, "मैं शर्त लगाता हूं कि तुम दस वर्ष तक यहीं रहोगे। यदि मैं जीवित रहा तो इसी बेंच पर इसकी याद दिलाऊंगा।"

मैंने कहा, "मैं अतीत को भूला नहीं हूं। मैं पूछना चाहूंगा कि कुमारी पोलीना अब कहां है? क्या उसने मुझे मुक्ति दिलाई है? मुझे तब से उसका कोई समाचार नहीं मिला है।"

"मैं नहीं समझता कि तुम्हारी मुक्ति उसने खरीदी है। वह अब स्विट्ज़रलैंड में है और तुम बड़ा उपकार करोगे, यदि उसके बारे में कुछ न पूछो तो।" उन्होंने दृढ़ता और कुछ क्रोध से भी कहा।

"इसका अर्थ यह कि उसने आपको बुरी तरह घायल किया है।" मैं नाराज़ी से हंसा।

"मिस पोलीना सब लोगों से अधिक आदर की पात्री है। तुम उसके बारे में कुछ न पूछो। बड़ा उपकार होगा। तुमने उसे कभी नहीं पहचाना और तुम्हारो होंठों पर उसके नाम को मैं अपनी नैतिक भावनाओं का अपमान समझता हूं।"

"तो मैं आपसे किस विषय पर बातचीत कर सकता हूं। हमारी

सब स्मृतियां इतनी ही तो हैं। चिंतित न होइए। मैं आपके गुप्त भेद नहीं जानना चाहता। मैं केवल मिस पोलीना की बाहरी बातों में रुचि रखता हूं। वह आप दो शब्दों में बता सकते हैं।"

"अवश्य। पर दो शब्दों से अधिक नहीं। मिस पोलीना बहुत समय बीमार रही, अब भी है। कुछ दिन वह मेरी मां और बहन के पास इंगलैंड में रही। छः महीने हुए उसकी दादी—तुम्हें वृद्धा की याद है?—मर गईं और उसके लिए सात हज़ार पौंड छोड़ गईं। इस समय मिस पोलीना मेरी विवाहिता बहन के परिवार के साथ यात्रा कर रही हैं। उसकी दादी की वसीयत में उसके छोटे भाई-बहन के लिए व्यवस्था है और अब वे लंदन के स्कूल में हैं। उसका सौतेला पिता, जनरल, एक महीना हुआ, पेरिस में एक दौरे में मर गया। ब्लांश उससे अच्छा व्यवहार करती थी। अब उसने उस सब पर अपना अधिकार कर लिया है जो उसे दादी से मिला था...बस, मैं समझता हूं..."

"और द ग्रीय? क्या वह भी स्विट्ज़रलैंड में यात्रा नहीं कर रहा है?"

"नहीं, द ग्रीय स्विट्ज़रलैंड में यात्रा नहीं कर रहा है। मैं नहीं जानता वह कहां है। और मैं सदा के लिए तुम्हें चेतावनी देता हूं कि भविष्य में ऐसे संकेत और नामों का ऐसा अशिष्ट संयोग न करना। इसके लिए तुम मेरे प्रति उत्तरदायी होगे।"

"हमारी अतीत की मैत्री के बावजूद?"

"हां, हमारी अतीत की मैत्री के बावजूद।"

"मैं आपसे सहस्र क्षमा मांगता हूं मिस्टर ऐस्टली! पर मैं कहूंगा कि इसमें कुछ भी अपमानकारी और अशिष्ट नहीं है। मैं मिस पोलीना को दोष नहीं लगा रहा हूं। और एक फ्रांसीसी पुरुष तथा रूसी नवयुवती आमतौर पर जोड़ा हुआ है। मिस्टर ऐस्टली, जिसे आप और मैं पूर्णतया नहीं समझ सकते।"

"तुम दूसरे नाम के साथ द ग्रीय का नाम नहीं लोगे। क्या तुम मुझे समझाओगे कि 'फ्रांसीसी पुरुष' और 'रूसी नवयुवती' से तुम्हारा क्या अर्थ है? 'जोड़े' से तुम्हारा क्या तात्पर्य है? फ्रांसीसी पुरुष ही क्यों? और रूसी नवयुवती ही क्यों?"

"मिस्टर ऐस्टली, इस सम्बन्ध में आपको बहुत-सी बातें समझनी होंगी। फ्रांसीसी पुरुष एक पूर्ण और सुन्दर परम्परा से आता है। अंग्रेज़ होने के नाते आप इससे सहमत नहीं हो सकते। रूसी के नाते मैं भी नहीं हूं। पर हमारी नवयुवतियों की राय दूसरी हो सकती है। फ्रांसीसी पुरुष की राष्ट्रीय किस्म, या उसे पेरिस किस्म कहें, उस समय एक ललित स्वरूप में ढल चुकी थी, जब हम रीछ थे। आज अशिष्टतम फ्रांसीसी पुरुष भी संस्कृत तौर-तरीके, सम्बोधन की रीतियां और अभिव्यक्तियां तथा कुछ विचार भी पूर्ण ललित रूप में जानता है, चाहे इनके निर्माण में उसकी अपनी सूझ, अपनी आत्मा और अपने हृदय ने तनिक भी भाग न लिया हो। यह सब उसको उत्तराधिकार में मिला है। और मिस्टर ऐस्टली, पृथ्वी पर एक अच्छी, पवित्र, निश्छल रूसी लड़की के समान विश्वासमय और स्पष्ट कोई व्यक्ति नहीं है। द ग्रीय एक विशिष्ट रूप में, असाधारण सरलता से उसके हृदय को जीत सकता है। मिस पोलीना—क्षमा कीजिए, नाम मुंह से निकल गया और लौटाया नहीं जा सकता—द ग्रीय के मुकाबले में आपको स्वीकार करे, इसके लिए बहुत लंबा समय चाहिए। वह आपका आदर करती है, आपको मित्र बनाती है, आपके सामने अपना हृदय खोल देती है; पर फिर भी वह घृणित, बदमाश, कमीना, ओछा, धन-कीट द ग्रीय उसके हृदय पर शासन करेगा। इसलिए कि एक बार वह उसके सामने एक ऐसे शानदार माक्विस के रूप में आ चुका है जिसने उसके परिवार की सहायता में अपने को बरबाद कर दिया है। उसका छल बाद को ज्ञात हुआ है। वह पहले द ग्रीय को चाहती है। वर्तमान द ग्रीय से

जितनी घृणा करती है, पुराने द ग्रीय के लिए उतनी ही अकुलाती है। मिस्टर ऐस्टली, और आप चीनी के व्यवसायी हैं?

"हां, मैं एक प्रसिद्ध फर्म लोवेल एंड कम्पनी में साझीदार हूं।"

"तो देखिए, एक ओर चीनी-व्यवसायी और दूसरी ओर काव्य-संगीत-शिरोमणि—कुछ असंगत-सा है। और मैं तो चीनी-व्यवसायी भी नहीं हूं। रूलेट का तुच्छ जुआरी हूं और टहलुआ भी रहा हूं, जो पोलीना को अच्छी तरह ज्ञात होगा, क्योंकि मुझे लगता है कि उसके भेदिये बढ़िया हैं।"

"तुम उत्तेजित हो इसलिए···" मिस्टर ऐस्टली ने शांत भाव से कहा, "और फिर जो तुम कह रहे हो, उसमें नया कुछ भी नहीं है।"

"मैं मानता हूं, मेरे भले मित्र! पर मेरी बातें चाहे कितनी ही पुरानी, घिसी-पिटी और हास्यास्पद क्यों न हों, वे सही हैं। जो हो, आपको और मुझे तनिक भी सफलता नहीं मिली है।"

"यह एक अरोचक बकवास है, क्योंकि···मैं···" मिस्टर ऐस्टली दमकती आंखों और कांपती वाणी से बोले, "मैं तुम्हें बताऊं। तुम कृतघ्न, अयोग्य, छिछले, दुःखी मनुष्य, कि मैं केवल उसकी इच्छा से तुम्हें देखने के लिए हामबर्ग आया हूं, तुमसे खुलकर लम्बी बातें करने के लिए, उस तक सब समाचार पहुंचाने के लिए—कि तुम्हें कैसा लग रहा है? तुम क्या सोचते हो? तुम्हारा क्या लक्ष्य है?···तुम्हें क्या याद है?···"

"क्या यह सम्भव है? क्या यह सम्भव है?" मैं चीखा और मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। मैं उन्हें रोक नहीं सका। मैं समझता हूं कि मेरे जीवन में पहली बार ऐसा हुआ।

"हां, अभागे मनुष्य! वह तुम्हें प्यार करती थी, और मैं तुमसे यह कह सकता हूं, क्योंकि तुम अब बरबाद हो चुके हो, कि वह तुम्हें आज भी प्यार करती है।—इस पर भी तुम यहीं ऐसे ही पड़े रहोगे।

तुम बुरे नहीं थे। चतुर, सजग स्वभाव के व्यक्ति थे। तुम अपने देश के किसी काम आ सकते थे। उसे पुरुषों की आवश्यकता है। पर तुम···तुम्हारा जीवन समाप्त हो गया है। मैं तुम्हें दोष नहीं देता। लगता है कि सब रूसी ऐसे ही होते हैं अथवा हो सकते हैं। अभी तक तुम ईमानदार रहे हो—चोरी नहीं की; टहल करना स्वीकार किया। पर, मुझे सोचते हुए भय होता है कि आगे क्या हो सकता है! अच्छा तो विदा। निश्चय ही तुम्हें पैसों की आवश्यकता है। ये रहे दस लुई दौर। अधिक नहीं दूंगा, क्योंकि उन्हें तुम जुए में उड़ा दोगे। लो! अच्छा विदा। लो न!"

"नहीं, मिस्टर ऐस्टली! आपने जो कहा उसके बाद नहीं।"

"लो न!" वे चिल्लाए, "मुझे विश्वास है कि तुम अब भी सम्मान्य पुरुष हो। मैं यह एक सच्चे मित्र की भांति मित्र को दे रहा हूं। यदि मुझे यह विश्वास हो जाए कि तुम जुआ छोड़ दोगे, अपने देश लौट जाओगे, तो मैं तुम्हें नया जीवन आरम्भ करने के लिए तुरन्त एक हज़ार पौंड दे सकता हूं। पर इस समय तुम्हारे लिए दोनों बराबर हैं। इन्हें लो और विदा।

"मैं ले लूंगा, यदि आप विदा के समय मुझे गले मिलने दें।"

"प्रसन्नता से।"

हम सच्ची भावना से गले मिले और मिस्टर ऐस्टली चले गए।

नहीं, उसका विचार गलत है। यदि मैं पोलीना और द ग्रीय के बारे में फूहड़ और मूढ़ था, तो उसने रूसियों के बारे में जल्दबाज़ी की थी। मैं अपना नहीं कहता।···पर बात वह नहीं है।···वह सब शब्द है, कोरे शब्द, आवश्यकता काम की है। अब स्विट्ज़रलैंड बड़ी बात है। ओह, यदि मैं कल यहां से जा सकता! नया जीवन प्रारम्भ करने के लिए, फिर से उठ पड़ने के लिए। मुझे उन्हें दिखा देना चाहिए···पोलीना जाने कि मैं अब भी मनुष्य बन सकता हूं। मुझे केवल···। पर अब

बात बहुत पुरानी पड़ गई है और मुझे···मेरे सामने एक झलक कौंध गई है। नहीं, वह झूठी नहीं हो सकती। मेरे पास अब पन्द्रह लुई दौर हैं, और मैंने पन्द्रह गुल्डेन से आरम्भ किया है। यदि मनुष्य सावधानी बरते···और मैं बरत सकता हूं, मैं बच्चा नहीं हूं। मैं जानता हूं कि मैं बरबाद हो चुका हूं। पर क्या मैं उठ नहीं सकता? हां! मुझे अपने जीवन में केवल एक बार बुद्धि और धैर्य से काम लेना होगा—यह काफी होगा। बस, केवल एक बार अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग करना होगा और घंटे-भर में मेरा भाग्य बदल जाएगा। इच्छाशक्ति बड़ी वस्तु है। केवल याद रखूं कि सात महीने पूर्व रूलटेनबर्ग में मेरी अंतिम असफलता से तनिक पहले क्या हुआ था। ओ, वह दृढ़ता और संकल्प का अनूठा उदाहरण है। मैंने सब कुछ गंवा दिया था, सब कुछ। मैं कैसीनो से बाहर जा रहा था। मैंने पाया कि जाकेट की जेब में एक गुल्डेन है। 'कुछ खाने को लूंगा।' पर मैं सौ कदम गया हूंगा कि मेरा विचार बदला। मैं लौट पड़ा। उस गुल्डेन को मांक पर लगाया। उस समय वह विचित्र अनुभव था, मैं था अकेला विदेश में, घर और मित्रों से दूर; पता नहीं दिन में खाने को मिलेगा या नहीं—ऐसी दशा में जब आंप अपना अंतिम गुल्डेन दांव पर लगाते हैं! मैं जीता और बीस मिनट बाद एक सौ सत्तर गुल्डेन जेब में डालकर कैसीनो से बाहर निकला। वह सच्ची बात है। कभी-कभी अंतिम गुल्डेन भी यह कर सकता है। यदि मैं हिम्मत हार गया होता तो क्या होता? यदि मैं जोखिम न उठाता तो?···

पर कल, कल यह सब समाप्त हो जाएगा!

• • •

डॉस्तोएवस्की

जुआरी



❑ 'जुआरी' दॉस्तोएवस्की के प्रसिद्ध उपन्यास The Gambler का हिन्दी अनुवाद है! यह एक मनोविश्लेषण प्रधान उपन्यास है। आत्म-कथात्मक शैली में लिखे इस उपन्यास में एक जुआरी के मनोभावों का हृदयस्पर्शी चित्रण है।

❑ 1821 को मास्को में जन्मे फ्योदोर मिखाइलोविच दॉस्तोएवस्की विश्व के गिने-चुने अमर कथाकारों की अग्रणी पंक्ति में आते हैं।

❑ करुणा और मानवता के महान् कथा शिल्पी दॉस्तोएवस्की ने लेखन के लिए सेना की नौकरी छोड़ दी थी। फिर 1844 में उनका पहला उपन्यास छपा 'दरिद्र पुरुष'। 1866 में जब उनका उपन्यास 'अपराध और दंड' छपा तो रूस ही नहीं, पूरी दुनिया में तहलका मच गया। इस उपन्यास का तो अपराधियों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपराध-वृत्ति छोड़ दी और प्रायश्चित स्वरूप खुद को पुलिस के हवाले कर दिया। 'द ब्रदर्स', 'करामजोव', 'द पजेज्ड' और 'द इडियट' दॉस्तोएवस्की की अन्य प्रसिद्ध रचनाएं हैं। उन्हें एक ईमानदार और वास्तविक लेखक का दर्जा दिया जाता है। 1881 में दॉस्तोएवस्की की मृत्यु से आहत टॉल्सटॉय ने लिखा था, '...इसने जो कुछ भी किया, मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए किया।'

❑ ...जब मैंने अपने जीवन में पहली बार जुआ घर को देखा तो वह मुझे आया नहीं। लोग समझते हैं कि वहां मेजों पर सोने के ढेर लगे रहते हैं। ऐसी बात नहीं है।... मैं कुछ देर तक खेलने के लिए तैयार न हो सका; भीड़ थी। यदि अकेला होता तो भी, मैं समझता हूं कि मैं बिना खेले चला गया होता।...

हिन्द पॉकेट बुक्स

Rs. 75/-
ISBN 81-216-0828-7
AHW HPB HINDI SERIES